गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका मार्च-2021

गुरुत्व ज्योतिष

शिवरात्रि विशेष

Nonprofit Publications

FREE
E CIRCULAR
For Premium User

गुरुत्व ज्योतिष
मासिक ई-पत्रिका
मार्च-2021

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

अनुक्रम

स्थायी और अन्य लेख

इस विशेषांक अंक में पढ़े

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ:
निर्विघ्नं कुरु मे देव: सर्वकार्येषु सर्वदा

महाशिवरात्रि पर्व प्रति वर्ष फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मनाया जाता हैं। एसी मान्यता हैं कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्य रात्रि भगवान शिवजी का ब्रह्मा रुप से रुद्र रूप में अवतार हुआ था। प्रलय के समय में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए समग्र ब्रह्मांड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि कहाजाता हैं।

शिवरात्रि व्रतम् नाम सर्वपाम् प्रणाशनम्।
आचाण्डाल मनुष्याणम् भुक्ति मुक्ति प्रदायकं॥

भावार्थ:- शिव रात्रि नाम वाला व्रत समस्त पापों का शमन करने वाला हैं। इस दिन व्रत कर ने से दुष्ट मनुष्य को भी भक्ति मुक्ति प्राप्त होती हैं।

पोराणिक मान्यता के अनुशार जब सृष्टि के चारों ओर केवल अंधकार का अस्तित्व था उस समय ना पंचमहाभूत तत्वो का अस्तित्व अस्तित्व था, ना सूर्य-चंद्र-तारे-ग्रह नक्षत्रो का कोई अस्तित्व था उस समय केवल भगवान शिव की ही सत्ता थी जो अनादि एवं अनंत हैं।

उस समय भगवान शिव को सृष्टि की रचना करने की इच्छा जाग्रत हुई। शिवजी की एक से अनेक होने की इच्छा हुई। शिवजी के अंतरमन में सृष्टि की रचना का संकल्प जन्म लेते ही भगवान शिव ने अपनी परा शक्ति जगत जननी शक्ति को प्रकट किया। शिवजी ने शक्ति से कहा, देवी हमें सृष्टि की उत्तम रचना के लिए किसी दूसरे पुरुष का सृजन करना होगा। जो अपने कन्धे पर सृष्टि के संचालन का भार उठाने में समर्थ हो और हम मुक्त समस्त बंधनो से मुक्त होकर सुखा-नन्दपूर्वक विचरण कर सकें। इतना कहते ही भगवान शिव व शक्ति साथ एकाएक हो गये और अपने वाम अंगों के दसवें भाग पर अमृत मल कर भगवान विष्णु की उत्तपन्न किया जो एक दिव्य पुरुष व अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण थे। शिवजी ने उन्हें विष्णु नाम दिया और उन्हें उत्तम तप करने का आदेश देते हुए कहा, वत्स सम्पूर्ण सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व मैं तुम्हे सौंपता हूं।

भगवान विष्णु द्वारा कठोर तप करने के कारण उनके अंगों से असंख्य जल की धाराएं निकलने लगीं जिनसे सूना आकाश भर गया। क्लान्त में विष्णुजी ने उसी जल में शयन किया। जल का अर्थ नार होता हैं, और जल में शयन करने के कारण ही भगवान विष्णु का एक नाम नारायण हुआ एसा माना जाता हैं।

कुछ समय पश्चात भगवान विष्णु के शयन करते वक्त उनकी नाभि से निकलकर एक उत्तम कमल का पुष्प अस्तित्व में कमल पर शिव ने अपने दाहिने अंग से चतुर्मुख ब्रह्मा को प्रकट किया। उत्पत्ति के बाद ब्रह्मा जी दीर्घ अवधि तक उस कमल के नाल में भ्रमण करते रहे और अपने उत्पत्ति कर्ता को ढूंढते रहे, पर कुछ भी पता नहीं चला। तब एक आकाशवाणी हुई, जिसके आदेश पर ब्रह्मा जी ने निरंतर बारह वर्षों तक कठोर तप किया।

बारहवें वर्ष की समाप्ति पर ब्रह्मा जी के समक्ष भगवान विष्णु प्रकट हुए। भगवान शिव ने लीला कर विष्णुजी एवं ब्रह्माजी के मध्य विवाद हो गया। विवाद दोनों के बीच एक दिव्य स्तम्भनुमा विशाल शिवलिंद प्रकट हुआ परंतु दोनो देव अथक प्रयास करने के उपरांत भी शिवलिंग के आदि-अंत का पता नहीं लगा सके। अंत में हारकर भगवान विष्णु ने अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना की महाप्रभो !हम आपके स्वरूप को जान सकने में असमर्थ हैं। आप जो भी हो, हमारे ऊपर कृपा करें तथा प्रकट हों।

भगवान विष्णु की प्रार्थना सुनकर भगवान शिव प्रकट हो गये। उन्होंने कहा, मैं तुम दोनों के कठोर तप और भक्ति से प्रसन्न हूं। ब्रह्मन् !मैं तुम्हें समस्त सृष्टि का उत्तरदायित्व सौंपता हूं और समस्त विश्व के पालन का उत्तरदायित्व विष्णु को सौंपता हूं । इतना कहकर भगवान शिव ने अपने हृदयभाग से रुद्र को प्रकट किया और रुद्र को संहार का उत्तरदायित्व सौंपकर अंतर्धान हो गये।

अतः शिवके साक्षात ब्रह्म स्वरुप शिवलिंगकी पूजा-अर्चना अनादिकालसे विश्वव्यापक रही हैं। संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थो में इसका उल्लेख मिलता हैं।

वैसे तो भगवान शिव भोले भंडारी हैं जो थोडीसी पूजा अर्चना मात्र से प्रसन्न हो जाते हैं। शिवजी को प्रसन्न करने हेतु सोमवार, माह की दोनो चतुर्दशी, प्रदोष व्रत, माह श्रावण मास इत्यादि अति शुभ माने गए हैं, इस विशेष शुभ अवसरो पर अल्प समय में, अल्प प्रयासो से, आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु भगवान शिव को प्रसन्न कर सके जिस्से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त हो इस लिये अनेको अति सरल प्रयोगो का समावेस इस अंक में किया गया हैं। इस्से अतिरिक्त यदि आप कोई पूजा-पाठ, मंत्र जाप इत्यादि नहीं कर सकते तो किसी विद्वान पंडित या ब्राह्मण द्वारा उसे संपन्न करवा सकते हैं। यदि यह भी संभव न हो तो आप गुरुत्व कार्यालय द्वारा संपूर्ण मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित शिव यंत्र-कवच, महामृत्युंजय यंत्र-कवच और अन्य सामग्रीयां प्राप्त कर भगवान शिव का आशिर्वाद सरलता से प्राप्त कर सकते हैं इस में लेस मात्र संदेह नहीं हैं।

इस मासिक ई-पत्रिका में संबंधित जानकारीयों के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना एवं उपायों या अन्य जानकारी के लाभ, प्रभाव इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य ज्योतिषी, गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान ज्योतिषी, गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न मंत्र, श्लोक, यंत्र, साधना, उपाय के प्रभावों का वर्णन करने में भेद होने पर कामना सिद्धि हेतु कि जाने वाली वाली पूजन विधि एवं उसके प्रभावों में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो भगवान शिव की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। भगवान शिव से यही प्राथना हैं...

आपको एवं आपके परिवार के सभी सदस्यों को गुरुत्व कार्यालय परिवार की और से महाशिवरात्रि की शुभकामनाएं...

चिंतन जोशी

***** मासिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा प्रकाशित किये गये सभी लेख, जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

पूर्व प्रकाशित अंकों को डाउनलोड करने के लिए

जीके प्रीमियम सदस्यता प्राप्त करें।

Get a **GK Premium Membership**

For Download All Old Edition

Only Rs.590 (All Tax included)

Year	Number of Publication
2010	5 Editions
2011	12 Edition
2012	12 Edition
2013	9 Edition (6 Monthly + 3 Weekly in English)
2014	5 Edition
2015	3 Edition
2016	1 Edition
2017	1 Edition
2018	13 Edition (3 Monthly+10 Weekly In Hindi)
2019	7 Edition
2020	12 Edition
2021	3 Edition
Total	83 Old Published Edition | Total File Size 421 MB **(Compress Zip File size 376 MB)**

हमारी गुरुत्व ज्योतिष ई-पत्रिका के आज तक प्रकाशित सभी अंको को सरलता से डाउनलोड करने की अनुमति प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvakaryalay.in

मार्च 2021 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	सोम	फाल्गुन	कृष्ण	द्वितीया-तृतीया	08:29-29:37	उत्तराफाल्गुनी	07:36	शूल	13:00	गर	08:29	कन्या	-
2	मंगल	फाल्गुन	कृष्ण	चतुर्थी	26:48	चित्रा	27:28	गंड	09:32	बव	16:12	कन्या	16:30
3	बुध	फाल्गुन	कृष्ण	पंचमी	24:8	स्वाति	25:35	ध्रुव	26:50	कौलव	13:27	तुला	-
4	गुरु	फाल्गुन	कृष्ण	षष्ठी	21:44	विशाखा	23:57	व्याघात	23:46	गर	10:54	तुला	18:21
5	शुक्र	फाल्गुन	कृष्ण	सप्तमी	19:39	अनुराधा	22:37	हर्षण	20:56	विष्टि	08:39	वृश्चिक	-
6	शनि	फाल्गुन	कृष्ण	अष्टमी	17:54	जेष्ठा	21:37	वज्र	18:22	कौलव	17:54	वृश्चिक	21:37
7	रवि	फाल्गुन	कृष्ण	नवमी	16:31	मूल	20:58	सिद्धि	16:04	गर	16:31	धनु	-
8	सोम	फाल्गुन	कृष्ण	दशमी	15:30	पूर्वाषाढ़	20:40	व्यतिपात	14:02	विष्टि	15:30	धनु	26:38
9	मंगल	फाल्गुन	कृष्ण	एकादशी	14:49	उत्तराषाढ़	20:41	वरियान	12:15	बालव	14:49	मकर	-
10	बुध	फाल्गुन	कृष्ण	द्वादशी	14:30	श्रवण	21:02	परिघ	10:44	तैतिल	14:30	मकर	-
11	गुरु	फाल्गुन	कृष्ण	त्रयोदशी	14:32	धनिष्ठा	21:45	शिव	09:30	वणिज	14:32	मकर	09:21
12	शुक्र	फाल्गुन	कृष्ण	चतुर्दशी	14:58	शतभिषा	22:50	सिद्धि	08:32	शकुनि	14:58	कुंभ	-
13	शनि	फाल्गुन	कृष्ण	अमावस्या	15:50	पूर्वाभाद्रपद	24:21	साध्य	07:54	नाग	15:50	कुंभ	17:56
14	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	प्रतिपदा	17:10	उत्तराभाद्रपद	26:19	शुभ	07:36	बव	17:10	मीन	-
15	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	द्वितीया	18:57	रेवति	28:43	शुक्ल	07:40	कौलव	18:57	मीन	28:43
16	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	तृतीया	21:10	अश्विनी	-	ब्रह्म	08:04	तैतिल	08:01	मेष	-

17	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	चतुर्थी	23:44	अश्विनी	07:30	इन्द्र	08:46	वणिज	10:25	मेष	-
18	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	पंचमी	26:27	भरणी	10:34	वैधृति	09:42	बव	13:05	मेष	17:22
19	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	षष्ठी	29:7	कृतिका	13:43	विषकुंभ	10:43	कौलव	15:48	वृष	-
7	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	-	रोहिणि	16:45	प्रीति	11:39	गर	18:22	वृष	30:09
21	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	07:30	मृगशिरा	19:24	आयुष्मान	12:21	वणिज	07:30	मिथुन	-
22	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	अष्टमी	09:19	आद्रा	21:27	सौभाग्य	12:38	बव	09:19	मिथुन	-
23	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	नवमी	10:24	पुनर्वसु	22:45	शोभन	12:22	कौलव	10:24	मिथुन	16:31
24	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	दशमी	10:38	पुष्य	23:12	अतिगंड	11:27	गर	10:38	कर्क	-
25	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी	09:59	आश्लेषा	22:48	सुकर्मा	09:51	विष्टि	09:59	कर्क	22:48
26	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	द्वादशी - त्रयोदशी	08:30-30:17	मघा	21:39	धृति	07:36	बालव	08:30	सिंह	-
27	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	चतुर्दशी	27:30	पूर्वाफाल्गुनी	19:51	गंड	25:27	गर	16:57	सिंह	25:20
28	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	24:17	उत्तराफाल्गुनी	17:35	वृद्धि	21:48	विष्टि	13:56	कन्या	-
29	सोम	चैत्र	कृष्ण	प्रतिपदा	20:51	हस्त	15:01	ध्रुव	17:55	बालव	10:35	कन्या	25:42
30	मंगल	चैत्र	कृष्ण	द्वितीया	17:21	चित्रा	12:21	व्याघात	13:58	तैतिल	07:06	तुला	-
31	बुध	चैत्र	कृष्ण	तृतीया	13:57	स्वाति	09:44	हर्षण	10:04	विष्टि	13:57	तुला	25:56

विशेष सूचना: 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

मार्च 2021 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	सोम	फाल्गुन	कृष्ण	द्वितीया-तृतीया	08:29-29:37	
2	मंगल	फाल्गुन	कृष्ण	चतुर्थी	26:48	संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (चं.उ.रा.09:41) ,
3	बुध	फाल्गुन	कृष्ण	पंचमी	24:8	श्रीमहाकालेश्वर नवरात्र प्रारंभ (उज्ज),
4	गुरु	फाल्गुन	कृष्ण	षष्ठी	21:44	
5	शुक्र	फाल्गुन	कृष्ण	सप्तमी	19:39	
6	शनि	फाल्गुन	कृष्ण	अष्टमी	17:54	जानकी जयंति, कालाष्टमी व्रत, सीताष्टमी व्रत, अष्टका श्राद्ध, होराष्टमी, वैक्कटाष्टमी,
7	रवि	फाल्गुन	कृष्ण	नवमी	16:31	समर्थ गुरु श्रीरामदास जयंती,
8	सोम	फाल्गुन	कृष्ण	दशमी	15:30	स्वामी दयानंद सरस्वती जन्मतिथि,
9	मंगल	फाल्गुन	कृष्ण	एकादशी	14:49	विजया एकादशी व्रत (सर्वे)
10	बुध	फाल्गुन	कृष्ण	द्वादशी	14:30	वंजुली महाद्वादशी व्रत, प्रदोष व्रत,
11	गुरु	फाल्गुन	कृष्ण	त्रयोदशी	14:32	शिव चतुर्दशी व्रत,महाशिवरात्रि व्रतोत्सव, गौरी शंकर विवाह उत्सव, श्रीवैद्यनाथ जयंती, कृत्तिवासेश्वर दर्शन (काशी), द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन एवं पूजन, श्रीमहाकालेश्वर नवरात्र पूर्ण (उज्जयिनी),
12	शुक्र	फाल्गुन	कृष्ण	चतुर्दशी	14:58	
13	शनि	फाल्गुन	कृष्ण	अमावस्या	15:50	स्नान-दान-श्राद्ध हेतु उत्तम फाल्गुनी अमावस्या,
14	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	प्रतिपदा	17:10	मीन संक्रान्ति का पुण्यकाल तथा महा पुण्यकाल संध्या 06:18 से संध्या 06:29 तक (11 मिनट), संक्रान्ति के स्नान-दान का पुण्यकाल संध्या 06:18 बजे से, गौ-अन्न दान श्रेष्ठ, गोदावरी में स्नान का विशेष महत्व, पुत्र-प्राप्ति हेतु 12 दिनों का पयोव्रत प्रारंभ, कस्तूरबा गांधी स्मृति दिवस, मौलाना आजाद स्मृति दिवस,
15	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	द्वितीया	18:57	फुलेरा दूज, नवीन चंद्र दर्शन, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती
16	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	तृतीया	21:10	मधुकतृतीया,

17	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	चतुर्थी	23:44	वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चं.अस्त.रा.10:01), संत चतुर्थी, मनोरथ चतुर्थी व्रत, अविघ्नकर चतुर्थी व्रत,
18	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	पंचमी	26:27	
19	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	षष्ठी	29:7	स्कन्दषष्ठी व्रत, गोरूपिणी षष्ठी,
20	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	-	कामदा सप्तमी व्रत, कल्याण सप्तमी, कौमुदी सप्तमी,
21	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	सप्तमी	07:30	होलाष्टक प्रारंभ (शुभ कार्यों हेतु वर्जित),
22	सोम	फाल्गुन	शुक्ल	अष्टमी	09:19	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, तैलाष्टमी,
23	मंगल	फाल्गुन	शुक्ल	नवमी	10:24	आनन्द नवमी, ब्रजमें होली शुरू, लट्ठमार होली (बरसाना, मथुरा),
24	बुध	फाल्गुन	शुक्ल	दशमी	10:38	फागु दशमी, लट्ठमार होली, लट्ठमार होली, 3 दिन खाटूश्याम मेला(राज), आमलकी (आंवला) एकादशी व्रत (स्मा), रंगभरी एकादशी, लट्ठमार होली (मथुरा)
25	गुरु	फाल्गुन	शुक्ल	एकादशी	09:59	आमलकी (आंवला) एकादशी व्रत (वै),
26	शुक्र	फाल्गुन	शुक्ल	द्वादशी - त्रयोदशी	08:30- 30:17	श्रीजगन्नाथ दर्शन, गोविन्द द्वादशी, नृसिंह द्वादशी व्रत, श्यामबाबा द्वादशी, पापनाशिनी द्वादशी, सुकृत द्वादशी, जया द्वादशी, प्रदोष व्रत, नंद त्रयोदशी व्रत, होलिकोत्सव (वृन्दावन)
27	शनि	फाल्गुन	शुक्ल	चतुर्दशी	27:30	
28	रवि	फाल्गुन	शुक्ल	पूर्णिमा	24:17	स्नान-दान-व्रत हेतु उत्तम फाल्गुनी पूर्णिमा, हुताशनी पूर्णिमा, (होलिका-दहन संध्या 06:37 से रात 08:56 के मध्य शुभ काल), गणगौर पूजा प्रारंभ (राज)
29	सोम	चैत्र	कृष्ण	प्रतिपदा	20:51	चैत्र मास कृष्ण पक्ष आरम्भ, चैत्र-मासीय व्रत-नियमादि प्रारम्भ, होली-रंगोत्सव (धुलैण्डी), छारेंडी, दोल यात्रा,वसन्तोत्सव, होलिका विभूति धारण, धूलि वंदन, साभ्यंग स्नान, आम्र कुसुम प्राशन, बसन्त प्रतिपदा, बसंत स्नान, रतिकाम महोत्सव, होलाष्टक समाप्त,
30	मंगल	चैत्र	कृष्ण	द्वितीया	17:21	संत तुकाराम जयन्ती, भ्रातृ द्वितीया, भ्रातृ दूज, भगिनी गृह में भोजन, कलम दान-पूजन, चित्रगुप्त पूजन,
31	बुध	चैत्र	कृष्ण	तृतीया	13:57	संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (चं.उ.रा. 09.40 बजे)

विशेष सूचना: 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

मार्च 2021 - विशेष योग

सर्वार्थ सिद्धि योग (कार्य सिद्धि योग)			
04	23:58 से 05 मार्च 06:42 तक	16	06:30 से 17 मार्च 06:29 तक
05	06:42 से 22:38 तक	20	06:25 से 16:46 तक
07	06:40 से 20:59 तक	28	06:16 से 29 मार्च 06:15 तक
14	06:32 से 15 मार्च 02:20 तक		
द्विपुष्कर योग (दोगुना फल दायक)		त्रिपुष्कर योग (तीन गुना फल दायक)	
20	16:46 से 21 मार्च 06:24 तक	09	15:02 से 20:42 तक
21	06:24 से 07:09 तक		
30	06:13 से 12:22 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
01	19:11 से 02 मार्च 05:46 तक	17	10:11 से 11:28 तक
04	21:58 से 05 मार्च 08:54 तक	21	07:09 से 20:09 तक
08	04:13 से 15:44 तक	24	22:11 से 25 मार्च 09:47 तक
11	14:39 से 12 मार्च 02:48 तक	28	03:27 से 13:54 तक

योग फल :

- सर्वार्थ सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

विशेष सूचना: 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

मार्च 2021 रवि योग

04	01:36 से 18:14 तक	19	13:44 से 20 मार्च 16:46 तक
05	00:01 से 22:38 तक	22	21:28 से 23 मार्च 24:00 तक
16	04:45 से 17 मार्च 07:31 तक	24	00:01 से 23:12 तक
18	02:37 से 10:35 तक	26	21:40 से 27 मार्च 17:52 तक

सूर्यभाद्वेदगोतर्क दिग्विश्व नखसम्मिते। चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः

अर्थातः सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करने पर यदि यह 4, 6, 9, 10, 13, 20 (नक्षत्र क्रम से आगे हो) यह क्रम में कोई भी एक क्रम का नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन **रवि योग** होता है। नक्षत्र का यह समय **रवि योग** का समय होता है।

सूर्य ग्रह सभी ग्रहों का राजा है। सौरमंडल में सबसे उर्जावान ग्रह सूर्य है जिस्से हमें प्रकाश एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रुपसे उर्जा जीवन उर्जा प्राप्त होती है। सूर्य को हिंदू धर्म में सूर्य को बहुत पवित्र देव माना जाता है एवं सूर्य की पूजा-उपासना की जाती है। नौ ग्रहों में सूर्य को श्रेष्ठ ग्रह माना जाता है।

- इस लिए रवि योग भी योगों में उत्तम एवं शुभफलदाय माना जाता है। यह रवि योग सभी प्रकार के दोषों एवं अशुभ प्रभावों को दूर करता है।
- यदि किसी दिन शुभ कार्य करना अनिवार्य हो एवं एवं उस दिन कोई शुभ मुहूर्त न हो तो शुभ कार्य **रवि योग** में कर सकते है।
- रवि योग में कार्यों में वांछित अफलता प्राप्त होती हैं इस लिए यह अत्यंत लाभदायक योग है।
- रवि योग के दिन भगवान सूर्य की पूजा करना उत्तम होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य देवता को अर्घ्य देना भी विशेष लाभ होता है।
- रवि योग के दिन सूर्य मंत्र का जप करना विशेष लाभदायक होता है।
- रवि योग को सूर्य देव का वरदान प्राप्त है इस लिए यह अत्याधिक प्रभावशाली है।
- रवि योग में किए गए सभी शुभ कार्यों में किसी भी प्रकार के विघ्न एवं बाधाएं उत्पन्न नहीं होती है तथा कार्य में शीघ्र सफलता मिलती है।
- रवि योग में दूरस्थान की यात्राएं शुभफलदायक होती है।
- रवि योग में कर्ज मुक्ति के प्रसाय करने से कर्ज से शीध्र मुक्ति मिल सकती है।
- रवि योग में स्वास्थ्य वृद्धि के सभी प्रकार के प्रयास अथवा शल्य चिकित्सा उत्तम होती है।
- रवि योग में लंबे समय से रुके हुए कार्य को पूर्ण करने का प्रयास भी विशेष लाभदाय सिद्ध होता है।

विशेष सूचना: 1). सभी समय भारतीय समय अनुसार 24 घण्टे के अनुसार दर्शाये गए हैं।, 2). भारतीये पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होकर है तथा अगले दिन सूर्योदय के पूर्व दिन को समाप्त माना जाता है। 3). आधी रात (रात 12 बजे / 24 Hr) के बाद के समय को आगामि दिन के समय को (सूर्योदय से पूर्व) दर्शाने के लिए आगामि दिन से जोड़ कर दर्शाया हैं। 4). पंचांग गणना को भारत की राष्ट्रीय राजधानी **नई दिल्ली** के अनुसार दर्शाया गए हैं।

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

मीन संक्रान्ति का राशिफल

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

14 मार्च 2021 से 14 अप्रैल 2021 तक जन्मकालीन चन्द्रराशि से मीन संक्रान्ति का राशिफल

मीन संक्रान्ति का सामान्य फल

- ❖ शास्त्रोक्त मत से मीन संक्रान्ति विद्वान और शिक्षित लोगों के लिए उत्तम होती है।
- ❖ उत्पादन एवं वस्तुओं की लागत सामान्य होगी।
- ❖ लोगों में भय और चिन्ता में वृद्धि संभव है।
- ❖ लोगों को स्वास्थ्य लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं, देशों के बीच सम्बन्ध में सुधार होगा होंगे। और अनाज भण्डारण में वृद्धि हो सकती है।

मेष

सूर्य का द्वादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में मिश्रित परिणाम प्राप्त हो सकते हैं जिस कारण कई बार उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। इस दौरान अपने खर्चों पर नियंत्रण रखे तथा बड़े कर्ज लेने से बचे अन्यथा कर्ज के भुगतान में विलम्ब संभव हैं। अनावश्यक यात्रा तथा भ्रमण से बचने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा इससे नुक़सान संभव है। सरकारी कार्यों में थोड़ा विलंब सम्भाव है। इस दौरान अपनी आंखों एवं पेट का ध्यान रखें अन्यथा समस्याएं संभव है। प्रियजनों के साथ रिश्तों में गलतफहमी के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

वृषभ

सूर्य का एकादश स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र तथा विभिन्न स्त्रोत से आकस्मिक धन लाभ संभव है, आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। पूंजि निवेश की योजना बनेगी। कार्यक्षेत्र सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं थोड़े से प्रयासों से कार्यक्षेत्र में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। प्रयासों से परिवार में आपसी रिश्तों में मधुरता आयेगी। स्वाथ्य उत्तम रहेगा तथा कोई रोग हैं तो उचित चिकित्सा से स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं दूर हो सकती हैं।

मिथुन

सूर्य का दशम स्थान पर गोचर हो तो आपके सामाजिक मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में विशेष रुप से सफलता प्राप्त होती हैं। यदि जीवन में कोई पूरानी समस्याएं हैं तो इस दौरान उचित प्रयासो से अपनी समस्याओं को दूर करने में आप सक्षम होंगे। सरकार से विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। सहकर्मी एवं उच्चाधिकारीयों के सहयोग से पदौन्नति संभव हैं। पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी।

कर्क

सूर्य का नवम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान कार्यक्षेत्र में मिश्रित फल प्राप्त हो सकते है। इस दौरान महत्व पूर्ण कार्यों में विशेष लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आर्थिक मामलों में विशेष लाभ की प्राप्ति होगी। नौकरी में स्थानांतरण तथा पदौन्नति संभव है। पिता के स्वास्थ्य की अतिरिक्त देखभाल करने की आवश्यक्ता एवं पिता के स्वास्थ्य से सम्बन्धित चिंता हो सकती है। धार्मिक यात्रा पर जाने की योजना बन सकती है। इस दौरान निर्णय समझदारी से ले। खाने-पीने का ध्यान रखें।

सिंह

सूर्य का अष्टम स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में सावधानी बरतने अन्यथा व्यर्थ के वाद-विवाद से चुनौतीयों का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक तनाव में वृद्धि हो सकती है। खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे तथा स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें अन्यथा उदर से संबंधित समस्याएं हो सकती है। आर्थिक में समस्याएं संभव है। परिवार के लोगों से अनबन हो सकती हैं अतः शांति पूर्वक रिश्तों को मजबूत बनाये रखने का प्रयास करें।

कन्या

सूर्य का सातवें स्थान पर गोचर हो तो पति-पत्नी के रिश्तों में कुछ समस्याएं हो सकती है। व्यावसायिक साझेदारी के कार्यों में मतभेद हो सकता है। धैर्य व संयम बर्ते अन्यथा अत्याधिक कलह से रिश्ते खराब हो सकते हैं। यात्रा में कष्ट हो सकता हैं। नौकरी, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस दौरान उदर में पीड़ा होती है। साझेदारी के कार्य में मतभेद हो सकते हैं अतः सावधान रहें।

तुला

सूर्य का षष्ठम स्थान पर गोचर हो तो विभिन्न कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं। सरकार से लाभ प्राप्ति संभव हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। से इस दौरान कोर्ट-कचहरी के कार्य अथवा वाद-विवाद में विजय प्राप्त हो सकती हैं। इस दौरान उचित उपायों से स्वास्थ्य लाभ होगा तथा पुराने रोगों से छुटकारा मिल सकता है। वाहन इत्यादि से सावधान रहे अन्यथा दुर्घटना हो सकती है। पूंजि निवेश कार्यों के लिए यह समय उत्तम हो सकता हैं।

वृश्चिक

सूर्य का पंचम स्थान पर गोचर हो तो शिक्षा प्राप्ति में बाधा संभव है। प्रेम संबंधित मामले में समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। मानसिक चिंता, भ्रम इत्यादि की प्रबलता हो सकती हैं। कार्यक्षेत्र में आवश्यक्ता से अधिक परिश्रम करने के उपरांत भी वांछित सफलता मिलने मे कष्ट संभव हैं। इस दौरन कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है। संतान पक्ष को कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। उदर विकार हो सकता हैं, अतः खान-

पान का विशेष ध्यान रखें।

धनु

सूर्य का चतुर्थ स्थान पर गोचर हो तो पारिवारीक सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार के सुख साधनों में वृद्धि होगी। दूरस्थ स्थानों की यात्राएं हो सकती है। भूमि-भवन के मामलों में लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नया वाहन इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। कार्य क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी, नौकरी से जुड़े है तो पदौन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। इस दौरान माता को कुछ कष्ट हो सकता हैं। इस दौरान अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें हृदय संबंधित समस्याएं उत्पन्न हो सकती है ।

मकर

सूर्य का तृतीय स्थान पर गोचर हो तो कार्यक्षेत्र में साहस एवं पराक्रम से सफलता प्राप्त हो सकती हैं। सरकारी विभाग से जुड़े कार्यों से लाभ की प्राप्ति हो सकती हैं। नौकरी से जुड़े लोगों को पदोन्नति के अवसर प्राप्त हो सकते है। आर्थिक स्थिती मजबूत होगी। मित्रों एवं सहोदर से लाभ प्राप्ति संभव हो सकती हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। विरोधि एवं शत्रुपक्ष परास्त होंगे। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होती हैं।

कुंभ

सूर्य का द्वितीय स्थान पर गोचर हो तो प्रियजनों एवं उच्चाधिकारियों से बातचित में अपनी वाणी पर नियंत्रण रखे अन्यथा रिश्ते बिगड़ सकते है। परिवार में अशांति का माहौल रह सकता है। इस दौरान विपरित परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में गलत निणयों अथवा आवश्यकता से अधिक खर्च के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। सेहत का विशेष ध्यान रखे इस दौरान आंख, दांत एवं मुख से जुड़ी समस्याएं कष्ट दे सकती हैं।

मीन

सूर्य का प्रथम स्थान पर गोचर हो तो इस दौरान दैनिक जीवन में कुछ नया कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। कार्यक्षेत्र में थोड़े से परिश्रम समसय से रुके हुए कार्य पूरे हो सकते है। आपके आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें किसी प्रकार से पित्त-विकार में वृद्धि हो सकती हैं या अन्य कोई रोग से पीड़ा संभव हैं। इस दौरान यात्रा करना प्रतिकूल साबित हो सकता है। आवश्यक्ता से अधिक क्रोध के कारण पारिवारिक रिश्तों में नोक-झोक हो सकती है।

विजया एकादशी व्रत कथा 9-मार्च-2021

संकलन गुरुत्व कार्यालय

फाल्गुन कृष्ण एकादशी

विजया एकादशी व्रत:

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया हे वासुदेव! फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष में किस नाम की एकादशी होती है? उसकी विधि क्या है? तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?, उसकी विधि क्या है? तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?, उसका फल क्या है ? । कृपया यह सब बताइये।

भगवान श्रीकृष्ण बोले: हे युधिष्ठिर ! एक बार नारदजी ने ब्रह्माजी से फाल्गुन के कृष्णपक्ष की विजया एकादशी व्रत के पुण्य फल के बारे में पूछा था तथा ब्रह्माजी ने इस व्रत के बारे में नारदजी से जो कथा और विधि बतायी थी, उसे ध्यान पूर्वक सुनो।

ब्रह्माजी ने कहा: हे नारद ! विजया एकादशी व्रत बहुत ही प्राचीन, पवित्र और पापों का नाश करने वाली है। विजया एकादशी राजाओं को विजय प्रदान करती है, इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

त्रेतायुग में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी लंका पर आक्रमण करने के लिए जब समुद्र के किनारे पहुँचे, तब उन्हें समुद्र को पार करने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था।

उन्होंने लक्ष्मणजी से पूछा हे लक्ष्मण! किस उपाय से इस समुद्र को पार किया जा सकता है? यह अत्यंत गहरा और यह समुद्र भयंकर जन्तुओं से भरा हुआ है। मुझे तो ऐसा कोई उपाय नहीं दिखायी देता, जिससे हम इसको सुगमता से पार कर सके।

लक्ष्मणजी बोले: हे प्रभु! आप ही आदिदेव और पुरुषोत्तम हैं। आपसे क्या छिपा रह सकता है? यहाँ से आधे योजन की दूरी पर कुमारी द्वीप में बकदाल्भ्य नामक मुनि रहते हैं। आप उन ज्ञानी मुनीश्वर के पास जाकर उन्हींसे इसका उपाय पूछिये।

श्रीरामचन्द्रजी बकदाल्भ्य मुनि के आश्रम पहुँचे और उन्होंने मुनि को प्रणाम किया। महर्षि ने प्रसन्न होकर श्रीरामजी के आगमन का कारण पूछा।

श्रीरामचन्द्रजी बोले: हे महामुनि ! मैं लंका पर

चढ़ाई करने के उद्धेश्य से अपनी सेना के साथ यहाँ आया हूँ। कि किस प्रकार समुद्र पार किया जा सके, कृपा करके कोई उपाय बताइये।

बकदाल्भय मुनि ने कहा: हे श्रीरामजी ! फाल्गुन के कृष्णपक्ष में जो विजया नाम की एकादशी होती है, उसका व्रत करने से आपकी विजय होगी। निश्चय ही आप अपनी सेना के साथ समुद्र को पार कर लेंगे। राजन् ! अब इस व्रत की फलदायक विधि सुनिये:

दशमी के दिन सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी का एक कलश स्थापित कर उस कलश को जल से भरकर उसमें पल्लव डाल दें। उसके ऊपर भगवान नारायण के सुवर्णमय विग्रह की स्थापना करें। पश्चयात एकादशी के दिन प्रात: काल स्नान करें।

कलश को पुन: स्थापित करें। माला, चन्दन, सुपारी तथा नारियल आदि के द्वारा विशेष रुप से उसका पूजन करें। कलश के ऊपर सात प्रकार धान्य और जौ रखें। गन्ध, धूप, दीप तथा भाँति-भाँति के नैवेघ से पूजन करें।

पश्चयात कलश के सम्मुख बैठकर उत्तम कथा भगवान का श्रवण आदि के द्वारा सारा दिन व्यतीत करें और रात में जागरण करना चाहिए। अखण्ड व्रत की सिद्धि के लिए घी का दीपक जलायें। पश्चयात द्वादशी के दिन सूर्योदय होने पर उस कलश को किसी जलाशय के समीप स्थापित करें और उसकी विधिवत् पूजा करके देव प्रतिमा के सहित उस कलश को वेदवेत्ता ब्राह्मण के लिए दान कर दें। कलश के साथ ही और वस्तुओं का दान देना चाहिए। श्रीराम ! आप अपने सेना के साथ इसी विधि से प्रयत्नपूर्वक विजया एकादशी का व्रत कीजिये। इससे आपकी विजय अवश्य होगी।

ब्रह्माजी बोले: हे नारद ! बकदाल्भय मुनि की बात सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने मुनि के कथनानुसार उस समय विजया एकादशी का व्रत किया। विजया एकादशी व्रत के करने से श्रीरामचन्द्रजी को विजय की प्राप्ति हुई। श्रीरामचन्द्रजी ने युद्ध में रावण को मारा, लंका पर विजय पायी और सीताजी को प्राप्त कर लिया। नारद ! जो मनुष्य इस विधि से व्रत करते हैं, उन्हें इस लोक में विजय प्राप्त होती है और उनका परलोक भी अक्षय बना रहता है।

भगवान श्रीकृष्ण बोले: युधिष्ठिर! इस कारण विजया एकादशी का व्रत करना चाहिए। इस प्रसंग को पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

***

आमलकी एकादशी व्रत कथा 24/25-मार्च-2021

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

फाल्गुन शुक्ल एकादशी (आमलकी एकादशी)

आमलकी एकादशी व्रत:

एक बार युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से प्रश्न किया हे! भगवन् ! फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की जो एकादशी होती है, उसका क्या नाम है? उसकी विधि क्या है? तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है?, उसका फल क्या है ?, कृपया यह सब बताइये।

भगवान श्रीकृष्ण बोले: हे युधिष्ठिर! फाल्गुन मास के शुक्लपक्षकी एकादशी का नाम आमलकी है। एकादशी का व्रत पवित्र विष्णुलोक की प्राप्ति कराने वाला है।

एक बार राजा मान्धाता ने महात्मा वशिष्ठजी से आमलकी एकादशी के विषय में इसी प्रकार का प्रश्न किया था, वशिष्ठजी ने इस व्रत के बारे में राजा मान्धाता से जो कथा और विधि बतायी थी, उसे ध्यान पूर्वक सुनो।

महाभाग! भगवान विष्णु के थूकने पर उनके मुख से चन्द्रमा के समान कान्तिमान एक बिन्दु प्रकट होकर पृथ्वी पर गिरा था। उसीसे आमलक (अर्थात आँवले) का महान वृक्ष उत्पन्न हुआ, जो सभी वृक्षों का आदिभूत कहलाता है।

इसी समय प्रजा की सृष्टि करने के लिए भगवान ने ब्रह्माजी को उत्पन्न किया और बादमें ब्रह्माजी ने देवता, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, नाग तथा महर्षियों को जन्म दिया। उनमें से देवता और ऋषि उसी स्थान पर आये, जहाँ विष्णुजी का प्रिय आमलक का वृक्ष था।

महाभाग ! उसे देखकर देवताओं को बड़ा विस्मय हुआ क्योंकि उस वृक्ष के बारे में वे कुछ नहीं जानते थे। उन्हें इस प्रकार विस्मित देख आकाशवाणी हुई: 'महर्षियो! यह सर्वश्रेष्ठ आमलक का वृक्ष है, जो विष्णुजी को अतिप्रिय है।

इसके स्मरणमात्र से गोदान का फल मिलता है। इसके स्पर्श करने से इससे दुगना और फल का भक्षण करने से तीगुना पुण्य प्राप्त होता है। यह सब पापों को हरनेवाला पवित्र वृक्ष है। इसके मूल में विष्णु, उसके ऊपर ब्रह्मा, स्कन्ध में भगवान रुद्र, शाखाओं में मुनि, टहनियों में देवता, पत्तों में वसु, फूलों में मरुद्गण तथा फलों में समस्त प्रजापति वास करते हैं। आमलक सर्वदेवमय वृक्ष है। अत: विष्णुभक्त पुरुषों के लिए यह परम पूज्य है। इसलिए सदा प्रयत्नपूर्वक आमलक का सेवन करना चाहिए।

ऋषि बोले: आप कौन हैं? देवता हैं या कोई और? हमें ठीक-ठीक बताइये।

पुन: आकाशवाणी हुई जो सम्पूर्ण भूतों के कर्त्ता और समस्त भुवनों के स्रष्टा हैं, जिन्हें विद्वान पुरुष भी कठिनता से देख पाते हैं, मैं वही सनातन विष्णु हूँ।

देवाधिदेव भगवान विष्णु का यह कथन सुनकर वे ऋषिगण भगवान की स्तुति करने लगे। इससे भगवान श्रीहरि संतुष्ट हुए और बोले: महर्षियो! तुम्हें कौन सा अभीष्ट वरदान दूँ?

ऋषि बोले: भगवन् ! यदि आप संतुष्ट हैं तो हम लोगों के हित के लिए कोई ऐसा व्रत बतलाइये, जो स्वर्ग और मोक्षरुपी फल प्रदान करनेवाला हो।

श्रीविष्णुजी बोले: महर्षियो ! फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष में जो एकादशी हो तो वह महान पुण्य देनेवाली और बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाली होती है। इस दिन आँवले के वृक्ष के पास जाकर वहाँ रात्रि में जागरण करना चाहिए। इससे मनुष्य सब पापों से छुट जाता है और सहस्र गोदान का फल प्राप्त करता है। विप्रगण! यह व्रत सभी व्रतों में उत्तम है, जिसे मैंने तुम लोगों को बताया है।

ऋषि बोले: भगवन्! इस व्रत की विधि बताइये। इसके देवता और मंत्र क्या हैं? पूजन कैसे करें? उस समय स्नान और दान कैसे किया जाता है?

भगवान श्रीविष्णुजी ने कहा: द्विजवरो! इस एकादशी को व्रती प्रात:काल दन्तधावन करके यह संकल्प करे कि ' हे पुण्डरीकाक्ष! हे अच्युत! मैं एकादशी

को निराहार रहकर दुसरे दिन भोजन करूँगा। आप मुझे शरण में रखें। ऐसा नियम लेने के बाद पतित, चोर, पाखण्डी, दुराचारी, परस्त्रीगामी तथा मर्यादा भंग करनेवाले मनुष्यों से वह वार्तालाप न करे। अपने मन को वश में रखते हुए नदी, तालाब, कुएँ पर अथवा घर में ही स्नान करे। स्नान के पहले शरीर में मृत्तिका मंत्र का उच्चारण करके मिट्टी लगाये।

मृत्तिका मंत्र

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
मृत्तिके हर मे पापं जन्मकोटयां समर्जितम्॥

अर्थात: वसुन्धरे! तुम्हारे ऊपर अश्व और रथ चला करते हैं तथा वामन अवतार के समय भगवान विष्णु ने भी तुम्हें अपने पैरों से नापा था। मृत्तिके! मैंने करोड़ों जन्मों में जो पाप किये हैं, मेरे उन सब पापों को हर लो।

फिर स्नान मंत्र का उच्चारण करके जल से स्नान करे।

स्नान मंत्र

त्वं मातः सर्वभूतानां जीवनं तत्तु रक्षकम्।
स्वेदजोद्भिज्जजातीनां रसानां पतये नमः॥
स्नातोऽहं सर्वतीर्थेषु ह्रदप्रस्रवणेषु च्।
नदीषु देवखातेषु इदं स्नानं तु मे भवेत्॥

अर्थात: जल की अधिष्ठात्री देवी! मातः! तुम सम्पूर्ण भूतों के लिए जीवन हो। वही जीवन, जो स्वेदज और उद्भिज्ज जाति के जीवों का भी रक्षक है। तुम रसों की स्वामिनी हो। तुम्हें नमस्कार है। आज मैं सम्पूर्ण तीर्थों, कुण्डों, झरनों, नदियों और देवसम्बन्धी सरोवरों में स्नान कर चुका। मेरा यह स्नान उक्त सभी स्नानों का फल देनेवाला हो।

पश्चयात विद्वान व्यक्ति को परशुरामजी की सोने की प्रतिमा बनवाये। प्रतिमा अपनी शक्ति और धन के अनुसार एक या आधे माशे सुवर्ण की होनी चाहिए। स्नान के पश्चात् घर आकर पूजा और हवन करे। इसके बाद सब प्रकार की सामग्री लेकर आँवले के वृक्ष के पास जाय। वहाँ वृक्ष के चारों ओर की जमीन साफ करके, लीप पोतकर शुद्ध करे। शुद्ध की हुई भूमि में मंत्र पाठपूर्वक जल से भरे हुए नवीन कलश की स्थापना करे। कलश में पंचरत्न और दिव्य गन्ध आदि छोड़ दे। श्वेत चन्दन से उसका लेपन करे। उसके कण्ठ में फूल की माला पहनाये। सब प्रकार के धूप की सुगन्ध फैलाये। जलते हुए दीपकों की पंक्ति सजाकर रखे। तात्पर्य यह है कि सब ओर से सुन्दर और मनोहर दृश्य निर्मित करे। पूजा के लिए नवीन छाता, जूता और वस्त्र भी मँगाकर रखे। कलश के ऊपर एक पात्र रखकर उसे श्रेष्ठ खीलों से भर दे। फिर उसके ऊपर परशुरामजी की मूर्ति (सुवर्ण की) स्थापित करे।

पश्चात उनकी क्रमशः पूजा करे

विशोकाय नमः मंत्र का उच्चारण कर उनके चरणों की,
विश्वरुपिणे नमः उच्चारण कर दोनों घुटनों की,
उग्राय नमः उच्चारण कर जाँघो की,
दामोदराय नमः उच्चारण कर कटिभाग की,
पधनाभाय नमः उच्चारण कर उदर की,
श्रीवत्सधारिणे नमः उच्चारण कर वक्ष: स्थल की,
चक्रिणे नमः उच्चारण कर बायीं बाँह की,
गदिने नमः उच्चारण कर दाहिनी बाँह की,
वैकुण्ठाय नमः उच्चारण कर कण्ठ की,
यज्ञमुखाय नमः उच्चारण कर मुख की,
विशोकनिधये नमः उच्चारण कर नासिका की,
वासुदेवाय नमः उच्चारण कर नेत्रों की,
वामनाय नमः उच्चारण कर ललाट की,
सर्वात्मने नमः उच्चारण कर संपूर्ण अंगो तथा मस्तक की पूजा करनी चाहिए ।

ये ही पूजा के मंत्र हैं। पश्चयात भक्तियुक्त चित्त से शुद्ध फल के द्वारा परशुरामजी को अर्ध्य मंत्र का उच्चारण कर अर्ध्य प्रदान करे।

अर्ध्य मंत्र

नमस्ते देवदेवेश जामदग्न्य नमोऽस्तु ते ।
गृहाणार्ध्यमिमं दत्तमामलक्या युतं हरे ॥

अर्थात: देवदेवेश्वर! जमदग्निनन्दन! श्री विष्णुस्वरुप परशुरामजी! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। आँवले के फल के साथ दिया हुआ मेरा यह अर्ध्य ग्रहण कीजिये।

पश्चयात भक्तियुक्त चित्त से जागरण करे। नृत्य, संगीत, वाघ, धार्मिक उपाख्यान तथा श्रीविष्णु संबंधी

कथा वार्ता आदि के माध्यम से रात्रि जागरण कर व्यतीत करे।

उसके बाद भगवान विष्णु के नाम ले लेकर आमलक वृक्ष की परिक्रमा एक सौ आठ या अट्ठाईस बार करे। फिर सवेरा होने पर श्रीहरि की आरती करे। ब्राह्मण की पूजा करके वहाँ की सब सामग्री उसे निवेदित कर दे। परशुरामजी का कलश, दो वस्त्र, जूता आदि सभी वस्तुएँ दान कर दे और यह भावना करे कि परशुरामजी के स्वरुप में भगवान विष्णु मुझ पर प्रसन्न हों। तत्पश्चात् आमलक का स्पर्श करके उसकी प्रदक्षिणा करे और स्नान करने के बाद विधिपूर्वक ब्राह्मणों को भोजन कराये। तदनन्तर कुटुम्बियों के साथ बैठकर स्वयं भी भोजन करे ।

सम्पूर्ण तीर्थों के सेवन से जो पुण्य प्राप्त होता है तथा सब प्रकार के दान देने दे जो फल मिलता है, वह सब उपर्युक्त विधि के पालन से सुलभता से प्राप्त होता है। समस्त यज्ञों की अपेक्षा भी अधिक फल मिलता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। यह व्रत सब व्रतों में उत्तम है।

इतना कहकर देवेश्वर भगवान विष्णु वहीं अन्तर्धान हो गये। तत्पश्चात् उन समस्त महर्षियों ने उक्त व्रत का पूर्णरुप से पालन किया। वशिष्ठजी बोले: हे महाराज! नृपश्रेष्ठ ! इसी प्रकार तुम्हें भी इस व्रत का अनुष्ठान करना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं: युधिष्ठिर ! यह दुर्धर्ष व्रत मनुष्य को सब पापों से मुक्त करनेवाला है।

महाशिवरात्रि महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महाशिवरात्रि को हिंदू धर्म में एक प्रमुख त्योहार के रूप में मनाय जाता हैं। महाशिवरात्रि को कालरात्रि के नाम से भी जान जाता हैं।

महाशिवरात्रि पर्व प्रति वर्ष फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मनाया जाता हैं। एसी मान्यता हैं कि सृष्टि के प्रारंभ में इसी दिन मध्य रात्रि भगवान शिवजी का ब्रह्मा रुप से रुद्र रूप में अवतार हुआ था। प्रलय के समय में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए समग्र ब्रह्मांड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से समाप्त कर देते हैं। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि कहाजाता हैं।

तीनों लोक की सुंदरी तथा शीलवती गौरां को अपनी अर्धांगिनी बनाने वाले शिव सर्वदा प्रेतों व पिशाचों से घिरे रहते हैं। उनका रूप अनोखा हैं। शरीर पर स्मसान की भस्म, और गले में सर्पों की माला, कंठ में विष, जटा में शशी (चंद्र) एवं पतित पावनी गंगा तथा मस्तक पर प्रलय कारी ज्वाला हैं। नंदि (बैल) को वाहन बनाने वाले हैं।

शिव अमंगल रूप होकर भी अपने भक्तों का अमंगल दूर कर मंगल करते हैं और सुख-संपत्ति एवं शांति प्रदान करते हैं।

शिवरात्रि व्रत का लाभ:

हिंदू संस्कृति में महाशिवरात्रि भगवान शंकर का सबसे पवित्र दिन माना जाता हैं। शिवरात्रि पर अपनी आत्मा को निर्मल करने का महाव्रत माना जाता हैं। महाशिव रात्रि व्रत से मनुष्य के सभी पापों का नाश हो जाता हैं। व्यक्ति की हिंसक प्रवृत्ति बदल जाती हैं। समस्त जीवों के प्रति उसके भितर दया, करुणा इत्यादि सद्द भावो का आगमन होता है।

ईशान संहिता में शिवरात्रि के बारे मे उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

शिवरात्रि व्रतम् नाम सर्वपाम् प्रणाशनम्।
आचाण्डाल मनुष्याणम् भुक्ति मुक्ति प्रदायकं॥

भावार्थ:- शिव रात्रि नाम वाला व्रत समस्त पापों का शमन करने वाला हैं। इस दिन व्रत कर ने से दुष्ट मनुष्य को भी भक्ति मुक्ति प्राप्त होती हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुशार शिवरात्री व्रत का महत्व और लाभ:

चतुर्दशी तिथि के स्वामी शिवजी हैं। ज्योतिष शास्त्रों में चतुर्दशी तिथि को परम शुभ फलदायी मना गया हैं। वैसे तो शिवरात्रि हर महीने चतुर्दशी तिथि को होती हैं। परंतु फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि कहा गया हैं। ज्योतिषी शास्त्र के अनुसार विश्व को उर्जा प्रदान करने वाले सूर्य इस समय तक उत्तरायण में आ होते हैं, और ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यंत शुभ कहा माना जाता हैं। शिव का अर्थ ही है कल्याण करना, एवं शिवजी सबका कल्याण करने वाले देवो के भी देव महादेव हैं। अत: महा शिवरात्रि के दिन शिव कृपा प्राप्त कर व्यक्ति को सरलता से इच्छित सुख की प्राप्ति होती हैं। ज्योतिषीय सिद्धंत के अनुसार चतुर्दशी तिथि तक चंद्रमा अपनी क्षीणस्थ अवस्था में पहुंच जात्ता हैं। अपनी क्षीण अवस्था के कारण बलहीन होकर चंद्रमा सृष्टि को ऊर्जा(प्रकाश) देने में असमर्थ हो जाते हैं।

चंद्र का सीधा संबंध मनुष्य के मन से बताया गया हैं। ज्योतिष सिद्धन्त से जब चंद्र कमजोर होतो मन थोडा कमजोर हो जाता हैं, जिस्से भौतिक संताप प्राणी को घेर लेते हैं, और विषाद, मान्सिक चंचल्ता-अस्थिरता एवं असंतुलन से मनुष्य को विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

धर्म ग्रंथोमे चंद्रमा को शिव के मस्तक पर सुशोभित बताय गया हैं। जिस्से भगवान शिव की कृपा प्राप्त होने से चंद्रदेव की कृपा स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। महाशिवरात्रि को शिव की अत्यंत प्रिय तिथि बताई गई हैं। ज्यादातर ज्योतिषी शिवरात्रि के दिन शिव आराधना कर समस्त कष्टों से मुक्ति पाने की सलाह देते हैं।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वत: ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है। >> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

महाशिवरात्रि आध्यात्मिक आस्था का महापर्व हैं।

संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दु धर्म में महाशिवरात्रि को हर्ष और उल्हास का महा पर्व माना जाता हैं। शिव का व्यक्तित्व हर साधारण व्यक्ति की भावनाओं का प्रतीक है। सदियों से भारत में महाशिवरात्रि उत्सव को पूर्ण आस्था और आध्यात्मिकता के साथ सृष्टि के रचनाकर देव महादेव को आभर प्रकट करते हुए उनकी विशेष कृपा प्राप्त करने का विधान हैं। दार्शनिक चिंताधारा से देखे तो मानव जीवन के कल्याण लिये एवं मानवता को जोड़ ने हेतु।

हजारो वर्षो से भारतीय जीवन शैलि स्वाभाविक-अस्वाभाविक रूप से प्रकृति से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध रखती हैं। भारतीय संस्कृति में शिव को सर्वव्यापी पूर्ण ब्रह्म के रूप में समावेष किया गया हैं।

भारतीय संस्कृति मे शिव जी को पिता और उनकी पत्नि पार्वती जी को मां मान कर उनकी आराधना परिवार, समाज एवं विश्व के कल्याण हेतु की जाती हैं। प्रकृति की भेट बेल पत्र द्वारा शिवलिंग पर अभिषेक कर शिव के समीप अपने कार्य या कामना पूर्ति हेतु प्राथना की जाति हैं। जिस्से व्यक्ति अपने कल्याण कर अपनी हिंसक प्रवृति, क्रोध, अहंकार आदि बूरे कर्मो पर अंकुश लगाने में समर्थ हो सकें।

हिंदू संस्कृति में शिव को प्रसन्न करने हेतु शिवरात्रि पर्व पर शिवलिंग की विशेष पूजा-अर्चना की परम्परा हैं। इसि लिये शिवरात्रि पर देश-विदेश के सभी शिव मंदिरों में विभिन्न प्रकार से धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावना के साथ पूजा, अर्चना, व्रत एव उपासना की जाती हैं। क्योकि शिव स्वयं विष पान करके सृष्टि को अमृत पान कराते हैं। इसी प्रकार शिवरात्रि का महापर्व संसार से बूराईयों को मिटाकर विश्व को सुख, स्मृद्धि, प्रेम एवं शांति फेलाने का हैं।

महाशिवरात्रि व्रत कथा

एक बार पार्वती ने भगवान शिवजी से पूछा, ऐसा कौन सा श्रेष्ठ तथा सरल व्रत अथवा पूजन हैं, जिससे मृत्यु लोक के प्राणी आपकी कृपा सरल ही प्राप्त कर लेते हैं?

प्रश्न के उत्तर में शिवजी ने पार्वती को शिवरात्रि व्रत का विधान बताकर यह कथा सुनाई-

एक गाँव में एक शिकारी रहता था। पशुओं को मार करके वह अपने कुटुम्ब को पालता था। शिकारी एक साहूकार का ऋणी था, लेकिन शिकारी साहूकार का ऋण समय पर न चुका सका। क्रोधवश साहूकार ने शिकारी को शिवमठ में बंदी बना लिया। संयोग से उस दिन शिवरात्रि थी।

शिकारी ध्यानमग्न होकर शिव संबंधी धार्मिक बातें सुनता रहा। चतुर्दशी को उसने शिवरात्रि की कथा भी सुनी। संध्या होते ही साहूकार ने उसे अपने पास बुलाया और ऋण चुकाने के विषय में बात की। शिकारी अगले दिन सारा ऋण लौटा देने का वचन देकर बंधन से छूट गया। अपनी दिनचर्या की भाँति वह जंगल में शिकार के लिए निकला, लेकिन दिनभर बंदीगृह में बंधक रहने के कारण भूख-प्यास से व्याकुल था। शिकार करने के लिए वह एक तालाब के किनारे बेल वृक्ष पर पड़ाव बनाने लगा। उस बेल-वृक्ष के नीचे शिवलिंग था जो बिल्वपत्रों से ढँका हुआ था। शिकारी को शिवलिंग का पता न चला। पड़ाव बनाते समय उसने बेल वृक्ष की टहनियाँ तोड़ कर नीचे फेकदी शिकारी ने जो टहनियाँ तोड़ीं, वे संयोग से शिवलिंग पर गिरीं। इस प्रकार दिनभर भूखे-प्यासे शिकारी का व्रत भी हो गया और शिवलिंग पर बेलपत्र भी चढ़ गए।

एक पहर रात्रि बीत जाने पर एक गर्भिणी मृगी तालाब पर पानी पीने पहुँची। शिकारी ने धनुष पर तीर चढ़ाकर ज्यों ही प्रत्यंचा खींची, मृगी बोली, 'मैं गर्भिणी हूँ। शीघ्र ही प्रसव करूँगी। तुम एक साथ दो जीवों की हत्या करोगे, जो ठीक नहीं है। मैं अपने बच्चे को जन्म देकर शीघ्र ही तुम्हारे सामने प्रस्तुत हो जाऊँगी, तब तुम मुझे मार लेना।' शिकारी ने प्रत्यंचा ढीली कर दी और मृगी झाड़ियों में लुप्त हो गई। कुछ ही देर बाद एक और मृगी उधर से निकली। शिकारी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। समीप आने पर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया। तब उसे देख मृगी ने विनम्रतापूर्वक निवेदन किया, 'हे पारधी ! मैं थोड़ी देर पहले ही ऋतु से निवृत्त हुई हूँ। कामातुर विरहिणी हूँ। अपने प्रिय की खोज में भटक रही हूँ। मैं अपने पति से मिलकर शीघ्र ही तुम्हारे पास आ जाऊँगी।'

शिकारी ने उसे भी जाने दिया। दो बार शिकार को खोकर उसका माथा ठनका। वह चिंता में पड़ गया। रात्रि का आखिरी पहर बीत रहा था। तभी एक अन्य मृगी अपने बच्चों के साथ उधर से निकली शिकारी के लिए यह स्वर्णिम अवसर था। उसने धनुष पर तीर चढ़ाने में देर न लगाई, वह तीर छोड़ने ही वाला था कि मृगी बोली, 'हे पारधी! मैं इन बच्चों को पिता के हवाले करके लौट आऊँगी। इस समय मुझे मत मार।' शिकारी हँसा और बोला, 'सामने आए शिकार को छोड़ दूँ, मैं ऐसा मूर्ख नहीं। इससे पहले मैं दो बार अपना शिकार खो चुका हूँ। मेरे बच्चे भूख-प्यास से तड़प रहे होंगे।'

उत्तर में मृगी ने फिर कहा, 'जैसे तुम्हें अपने बच्चों की ममता सता रही है, ठीक वैसे ही मुझे भी, इसलिए सिर्फ बच्चों के नाम पर मैं थोड़ी देर के लिए जीवनदान माँग रही हूँ। हे पारधी! मेरा विश्वास कर मैं इन्हें इनके पिता के पास छोड़कर तुरंत लौटने की प्रतिज्ञा करती हूँ।'

मृगी का दीन स्वर सुनकर शिकारी को उस पर दया आ गई। उसने उस मृगी को भी जाने दिया। शिकार के आभाव में बेलवृक्ष पर बैठा शिकारी बेलपत्र तोड़-तोड़कर नीचे फेंकता जा रहा था। पौ फटने को हुई तो एक हृष्ट-पुष्ट मृग उसी रास्ते पर आया। शिकारी ने सोच लिया कि इसका शिकार वह अवश्य करेगा।

शिकारी की तनी प्रत्यंचा देखकर मृग विनीत स्वर में बोला,' हे पारधी भाई! यदि तुमने मुझसे पूर्व आने वाली तीन मृगियों तथा छोटे-छोटे बच्चों को मार डाला है तो मुझे भी मारने में विलंब न करो, ताकि उनके वियोग में मुझे एक क्षण भी दुःख न सहना पड़े। मैं उन मृगियों का पति हूँ। यदि तुमने उन्हें जीवनदान दिया है तो मुझे भी कुछ क्षण जीवनदान देने की कृपा करो। मैं उनसे मिलकर तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाऊँगा।'

मृग की बात सुनते ही शिकारी के सामने पूरी रात का घटना-चक्र घूम गया। उसने सारी कथा मृग को सुना दी। तब मृग ने कहा, 'मेरी तीनों पत्नियाँ जिस प्रकार प्रतिज्ञाबद्ध होकर गई हैं, मेरी मृत्यु से अपने धर्म का पालन नहीं कर पाएँगी। अतः जैसे तुमने उन्हें विश्वासपात्र मानकर छोड़ा है, वैसे ही मुझे भी जाने दो। मैं उन सबके साथ तुम्हारे सामने शीघ्र ही उपस्थित होता हूँ।'

उपवास, रात्रि जागरण तथा शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाने से शिकारी का हिंसक हृदय निर्मल हो गया था। उसमें भगवद् शक्ति का वास हो गया था। धनुष तथा बाण उसके हाथ से सहज ही छूट गए। भगवान शिव की अनुकम्पा से उसका हिंसक हृदय कारुणिक भावों से भर गया। वह अपने अतीत के कर्मों को याद करके पश्चाताप की ज्वाला में जलने लगा।

थोड़ी ही देर बाद मृग सपरिवार शिकारी के समक्ष उपस्थित हो गया, ताकि वह उनका शिकार कर सके, किंतु जंगली पशुओं की ऐसी सत्यता, सात्विकता एवं सामूहिक प्रेमभावना देखकर शिकारी को बड़ी ग्लानि हुई। उसके नेत्रों से आँसुओं की झड़ी लग गई। उस मृग परिवार को न मारकर शिकारी ने अपने कठोर हृदय को जीव हिंसा से हटा सदा के लिए कोमल एवं दयालु बना लिया।

देव लोक से समस्त देव समाज भी इस घटना को देख रहा था। घटना की परिणति होते ही देवी-देवताओं ने पुष्प वर्षा की। तब शिकारी तथा मृग परिवार मोक्ष को प्राप्त हुए।

शिवरात्रि पूजन विधान

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महाशिवरात्रि के दिन शिवजी का पूजन अर्चन करने से उनकी कृपा सरलता से प्राप्त होति हैं, इस लिये शिवभक्त, शिवालय/शिव मंदिरों में जाकर शिवलिंग पर दूध, गंगाजल, बेल-पत्र, पुष्प आदि से अभिषेक कर, शिवजी का पूजन कर उपवास कर रात्रि जागरण कर भजन कित्तन करते हैं।

शास्त्रो मे वर्णन मिलता हैं की शिवरात्रि के दिन शिवजी की माता पर्वती से शादी हुई थी इसलिए रात्र के समय शिवजी की बारात निकाली जाती हैं।

शिवरात्रि का पर्व सृष्टि का सृजन कर्ता स्वयं परमात्मा के सृष्टि पर अवतरित होने की स्मृति दिलाता है। यहां 'रात्रि' शब्द अज्ञान (अन्धकार) से होने वाले नैतिक कर्मो के पतन का द्योतक है। केवल परमात्मा ही ज्ञान के सागर हैं जो मनुष्य मात्र को सत्य ज्ञान द्वारा अन्धकार से प्रकाश की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं।

शिवरात्रि का व्रत सभी वर्ग एवं उम्र के लोग कर सकते हैं। इस व्रत के विधान में सुबह स्नान इत्यादि से निवृत्त होकर उपवास रखा जाता हैं।

शिवरात्रि के दिन शिव मंदिर/शिवालय में जाकर शिव लिंग पर अपने कार्य उद्देश्य की पूर्ति के अनुरुप दूध, दही, गंगाजल, घी, मधु (मध,महु), चीनी (मिश्रि) बेल-पत्र, पुष्प आदि का शिव लिंग पर अभिषेक कर शिवलिंग पूजन का विधान हैं।

शिवलिंग पर अभिषेक का महत्व

अभिषक अर्थात स्नान कारना अथवा किसी निर्धारित पदार्थ से वस्तु विशेष पर अर्पण पदार्थ को डालना। शिवलिंग पर स्नान अथवा अभिषेक करना। अभिषेक में भी रुद्राभिषेक का विशेष महत्व हैं। रुद्राभिषेक में रुद्रमंत्रों के उच्चारण के साथ शिवलिंग पर अभिषेक किया जाता हैं।

रुद्राभिषेक को भगवान शिव की आराधना का सर्वश्रेष्ठ उपायो में से एक माना गया हैं। विद्वानो के मत से धर्म शास्त्रो में शिव को जलधारा से अभिषेक करना सर्वाधिक प्रिय माना जाता है। विद्वानो के अनुशार भारत के प्रमुख ग्रंथ ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में उल्लेखित मंत्रो का प्रयोग रुद्रमंत्रों के रुप में किया जाता हैं।

रुद्राक्ष की उत्पत्ति

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्रस्य अक्षि रुद्राक्षः, अक्ष्युपलक्षितम् अश्रु, तज्जन्यः वृक्षः। पुटाभ्यां चारुचक्षुर्भ्यां पतिता जलबिंदवः। तत्राश्रुबिन्दवो जाता वृक्षा रुद्राक्षसंज्ञकाः॥

रुद्राक्ष को भगवान शिव का प्रतिक माना जाता है। रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रु से हुइथी इस लिये इसे रुद्राक्ष कह जाता है। रुद्र का अर्थ है शिव और अक्ष का अर्थ है आँख। दोनो को मिलाकर रुद्राक्ष बना।

रूद्र+अक्ष शब्द का संयोग रूद्राक्ष कहलाता है। रुद्र का अर्थ है। भगवान शिव का रौद्र रूप और अक्ष का अर्थ है आँख। दोनो को मिलाकर रुद्राक्ष बना।

रुद्राक्ष भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होता हैं। धर्मग्रंथों, शास्त्रों व पुराणों में रुद्राक्ष की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। यहां पाठको के मार्गदर्शन के लिए कुछ प्रमुख ग्रंथो में उल्लेखित रुद्राक्ष से संबंधित जानकारीयां दी जा रही हैं।

रुद्राक्ष के गुणो का विस्तृत वर्णन लिंगपुराण, मत्स्यपुराण, स्कंदपुराण, शिवमहापुराण, पदमपुराण, महाकाल संहिता मन्त्र, महार्णव निर्णय सिन्धु, बृहज्जाबालोपनिषद्, कालिकापुराण, रूद्राक्ष जबलोपनिषद, वाराह पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, शिवतत्त्व रत्नाकार, बालोपनिषद, रुद्रपुराण, काठक संहिता, कात्यायनी तंत्र, श्रीमदभागवत, देवी भागवत, मुण्डकोपनिषद, भगवत कर्मपुराण, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, पारस्कर ग्रहसूत्र, विष्णुधर्म सूत्र, समरांगण सूत्रधार, याज्ञवलक्य स्मृति, नित्याचार प्रदीप, वैदिक देवता कल्याण आदि उपनिषदो एवं तन्त्र मन्त्र आदि ग्रन्थो मे मिलता है। विद्वानो के मत से रुद्राक्ष की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न ग्रंथो में विभिन्न पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।

रुद्राक्ष भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए विशेष रुप से फलदायी सिद्ध होता हैं। पुराणों में रुद्राक्ष की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। रुद्राक्ष धारण करने से सौभाग्य प्राप्त होता है।

एक कथा के अनुसार:

एक बार भगवान शिव ने सैकडों हजार वर्षो तक अंतर्ध्यान रहे। जब भगवान शिव ने ध्यान पूर्ण होने के बाद जब शिवजी ने अपने नेत्र खोले, तो उनके नेत्र से आंसुओं की धारा निकलने लगी। शिवजी के नेत्रों से निकली यहं दिव्य अश्रु-बूंद भूलोक पर गिरी, भूलोक पर जहां-जहां भी अश्रु बुंदे गिरे, उनसे अंकुरण फूट पडा! बाद में यही रुद्राक्ष के वृक्ष बन गए। कालांतर में यही रुद्राक्ष शिव भक्तो के प्रिय बन कर समग्र विश्व में व्याप्त हो गए।

दूसरी कथा के अनुशार:

एक बार सती के पिता दक्ष प्रजापति ने अपने यहां यज्ञ का आयोजन किया। हवन करते समय दक्षने भगवान शिव का अपमान कर दिया। शिवजी के अपमान पर क्रोधित होकर शिव की पत्नी सती ने स्वयं को अग्निकुंड में समाहित करलिया। सती का जला शरीर देख कर शिव अत्यंत क्रोधित हो गए।

भगवान शिव ने उन्मत कि भांति सती के जले हुए शरीर को कंधे पर रख वे सभी दिशाओं में भ्रमण करने लगे। सृष्टि व्याकुल हो उठी भयानक संकट उपस्थित देखकर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु आगे बढ़े। उन्हों ने भगवान शिव कि बेसुधी में अपने चक्र से सती के एक-एक अंग को काट-काट कर गिराने लगे। धरती पर इक्यावन स्थानों में सती के अंग कट-कटकर गिरे। जब सती के सारे अंग कट कर गिर गए, तो भगवान शिव पुनः अपने आप में वापस आए। तब शिवजी के नेत्रों से आंसू निकले और उससे रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हो गए।

कुछ विद्वानो का मानना हैं शिवजी ने सती का पार्थिव शरीर अपने कंधे लेकर संपूर्ण ब्रह्मांड को भस्म

कर देने के उद्देश्य से तांडव नृत्य करने लगे। सती का जला शरीर धीरे-धीरे पूरे ब्रह्मांड में बिखर ने लगा। अंत में सिर्फ उनके देह की भस्म ही शिवजी के शरीर पर रह गई, जिसे देख कर शिवजी रो पडे उस समय जो आंसू उनकी आंखों से गिरे, वही पृथ्वी पर रुद्राक्ष के वृक्ष बने।

स्कंद पुराण की कथा:

एक बार भगवान कार्तिक ने अपने पिता भगवान शिवजी से पूछा:- हे पिता श्री ! यह रुद्राक्ष कया हैं? रुद्राक्ष को धाराण करना इस लोक और परलोक में श्रेष्ठ क्यों माना जाता हैं? रुद्राक्ष के कितने मुख होते हैं? उसके कौन से मंत्र हैं? मनुष्य रुद्राक्ष को किस प्रकार धारण करें? कृपा कर यह सब आप मुझे विस्तार से समझाए?

शिव जी बोले हे षडानन रुद्राक्ष की उत्पत्ति का वर्णन मैं तुम्हें संक्षिप्त में बता रहा हूं।

शंकर उवाच:

श्रृणु षण्मुख तत्वेन कथयामि समासतः।
त्रिपुरो नाम दैत्येन्द्रः पूर्वमासीत्सुदुर्जयः॥

अर्थातः हे षडानन (छह वाला) स्कंदजी ! तुम सुनो, पूर्वकाल में त्रिपुर नामक एक महान शक्तिशाली व पराक्रमी दैत्यों का राजा हुआ था। त्रिपुर को जीतने में देव-दानव में से कोई भी समर्थ नहीं था।

उसने अपने पराक्रम से संपूर्ण देवलोक को जीत लिया। तब ब्रह्मा, विष्णुअ, इन्द्रादि सभी देव एवं मुनि गण मेरे पास आए और दैत्यराज त्रिपुर को मारने की प्राथना की। तब मैने त्रिपुर को मारने का निश्चितय किया। लेकिन त्रिपुर को हम त्रिदेवों से अनेक वर प्राप्त थे, इसलिए युद्ध में एक हजार दिव्य वर्षों तक का लम्बा समय लगा।

तब मैंने बिजली के समान चमकदार एवं दिव्य तेजयुक्त कालाग्नि नामक अमोघ शस्त्र से त्रिपुर पर तीव्र प्रकार कियी। उस दिव्य शस्त्र की दिव्य विस्फोटक चमक को देखने में किसी के भी नेत्र देख ने में समर्थता नहीं थी उसी समय कुछ क्षण के लिए मेरे नेत्र बंद रहे। योगमाया की अद्भुत लीलासे जब मैने अपने दोनों नेत्रो को खोला तब नेत्रों से स्वतः ही अश्रु की कुछ बुंदे गिरी।

तेनाश्रुबिंदुभिर्जाता मर्त्ये रुद्राक्षभूरुहाः।

उस नेत्र से निकले अश्रृ बिंदु से भूलोक में रुद्राक्ष के वृक्ष उत्पन्न हो गए।

भक्तों पर कृपा करने के लिए एवं संसारका कल्याण हो इस लक्ष्य से मेरे ये अश्रुबिंदु रुद्राक्ष के रुप में व्याप्त हो गये और रुद्राक्ष के नाम से विख्यात हो गए, ये षडानन रुद्राक्ष को धारण करने से महापुण्य प्राप्त होता हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। फिर मैंने रुद्राक्ष को विष्णु भक्तों तथा चारों वर्गों के लोगो को बांट दिए। शिवजी बोले भूलोक पर अपने भक्तो के कल्याणार्थ मैंने रुद्राक्ष को भिन्न स्थानो में रुद्राक्ष के अंकुर उगा कर उन्हें उत्पन्न किया।

महाशिवरात्रि में रुद्राक्ष धारण करना परम कल्याणकारी हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

रुद्र के अक्ष से प्रकट होने के कारण रुद्राक्ष को साक्षात शिव का लिंगात्मक स्वरुप माना गया हैं। विद्वानो का कथ हैं की रुद्राक्ष में एक विशिष्ट प्रकार की दिव्य उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। प्रायः सभी ग्रंथकारों व विद्वानो ने रुद्राक्ष को असह्य पापों को नाश करने वाला माना हैं।

इस लिए शिव माहा पुराण में उल्लेख किया गया हैं।

शिवप्रियतमो ज्ञेयो रुद्राक्षः परपावनः।
दर्शनात्स्पर्शनाज्जाप्यात्सर्वपापहरः स्मृतः॥

अर्थातः रुद्राक्ष अत्यंत पवित्र, शंकर भगवान का अति प्रिय हैं। उसके दर्शन, स्पर्श व जप द्वारा सर्व पापों का नाश होता हैं।

रुद्राक्ष धारणाने सर्व दुःखनाशः

अर्थातः रुद्राक्ष असंखय दुःखों का नाश करने वाला हैं।

रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से गोदा का फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष के विषय में रुद्राक्ष जावालोपनिषद में स्वयं भगवान कालग्नी का कथन हैं:

तद्रुद्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्रदानेन
यत्फलमवाप्नोति तत्फलमश्नुते ।
करेण स्पृष्ट्वा धारणमात्रेण द्विसहस्त्र
गोप्रदान फल भवति ।
कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश सहस्त्र गोप्रदानफलं भवति ।
एकादश रुद्रत्वं च गच्छति ।
शिरसि धार्यमाणे कोटि ग्रोप्रदान फलं भवति ।

अर्थातः रुद्राक्ष शब्द के उच्चारण से दश गोदान (गाय का दान) का फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष का स्पर्श करने व धारण करने से दो हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। दोनो कानो पर रुद्राक्ष धारण करने से ग्यारा हजार गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं। गले में रुद्राक्ष धारण करने से करोड़ो गोदान (गाय का दान) का फल मिलता हैं।

अलग-अलग रंगों के रुद्राक्ष में अलग-अलग प्रकार की शक्तियां निहित होती हैं। इस लिये रंगो के अनुसार रुद्राक्ष का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया ।
वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयोः शुभाक्षमः ।
श्वेतास्तु ब्राह्मण ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः ॥
पीताः वैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा उदाह्रृताः ॥

अन्य श्लोक में उल्लेख हैं:

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा जाता ममाज्ञया ॥
रुद्राक्षास्ते पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः ॥
श्वेतरक्ताः पीतकृष्णा वर्णाज्ञेयाः क्रमाद्बुधैः ॥
स्वजातीयं नृभिर्धार्यं रुद्राक्षं वर्णतः क्रमात् ॥

श्वेत रंगः सफेद रंग वाले रुद्राक्ष में सात्विक उर्जायुक्त ब्रह्म स्वरुप शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए ब्राह्मण को श्वेत वर्ण का रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रक्तवर्णीय (ताम्र के समान आभायुक्त) : रक्त रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी उर्जायुक्त शत्रुसंहारक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए क्षत्रिय को रक्तवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पीतवर्णीय (कांचन या पीली आभायुक्त) : पीले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में राजसी व तामसी दोनों प्रकार की संयुक्त उर्जा शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए वैश्य को पीतवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

कृष्णवर्णीयः काले रंग की आभायुक्त रुद्राक्ष में तामसी उर्जायुक्त सेवा व समर्पणात्मक शक्ति समाहित होती हैं। इस लिए शूद्र को कृष्णवर्णीय रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

यह शास्त्रों मे उल्लेखित विद्वान ऋषियों का निर्देश है कि मनुष्य को अपने वर्ण के अनुरूप श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण के रुद्राक्ष धारण करने चाहिए। विशेषकर भगवान शिव के भक्तो के लिये तो रुद्राक्ष को धारण करना परम आश्यक हैं।

वर्णैस्तु तत्फलं धार्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः ॥
शिवभक्तैर्विशेषेण शिवयोः प्रीतये सदा ॥
सर्वाश्रमाणांवर्णानां स्त्रीशूद्राणां।
शिवाज्ञया धार्याः सदैव रुद्राक्षाः॥

सभी आश्रमों (ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, गृहस्थ और संन्यासी) एवं वर्णों तथा स्त्री और शूद्र को सदैव रुद्राक्ष धारण करना चाहिये, यह शिवजी की आज्ञा है!

रुद्राक्ष को तीनों लोकों में पूजनीय हैं। रुद्राक्ष के स्पर्श से लक्ष गुणा तथा रुद्राक्ष की माला धारण करने से करोड़ गुना फल प्राप्त होता हैं। रुद्राक्ष की माला से मंत्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

जिस प्रकार समस्त लोक में शिवजी वंदनीय एवं पूजनीय हैं उसी प्रकार रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति संसार में वंदन योग्य हैं।

रुद्राक्ष धारण फलम्

रुद्राक्षा यस्य गोत्रेषु ललाटे च त्रिपुण्ड्रकम्।
स चाण्डालोऽपि सम्म्पूज्यः सर्ववर्णोत्तमो भवेत्॥

अर्थातः जिसके शरीर पर रुद्राक्ष हो और ललाट पर त्रिपुण्ड हो, वह चाण्डाल भी हो तो सब वर्णो में उत्तम पूजनीय हैं।

अभक्त हो या भक्त हो, नींच से नीच व्यक्ति भी यदी रुद्राक्ष को धारण करता हैं, तो वह समस्त पातको के मुक्त हो जाता हैं।

जो मनुष्य नियमानुशार सहस्त्ररुद्राक्ष धारण करता हैं उसे देवगण भी वंदन करते हैं।

उच्छिष्टो वा विकर्मो वा मुक्तो वा सर्वपातकैः।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्पर्शनेन वै॥

अर्थातः जो मनुष्य उच्छिष्ट अथवा अपवित्र रहते हैं या बुरे कर्म करने वाल व अनेक प्रकार के पापों से युक्त वह मनुष्य रुद्राक्ष का स्पर्श करते ही समस्त पापों से छूट जाते हैं।

कण्ठे रुद्राक्षमादाय म्रियते यदि वा खरः।
सोऽपिरुद्रत्वमाप्नोति किं पुनर्भुवि मानवः।

अर्थातः कण्ठ में रुद्राक्ष को धारण कर यदि खर(गधा) भी मृत्यु को प्राप्त हो जाए तो वह भी रुद्र तत्व को प्राप्त होता हैं, तो पृथ्वीलोक के जो मनुष्य हैं उनके बारे में तो कहना ही क्या! आर्थात् सर्व सांसारिक मनुष्यों को स्वर्ग-प्राप्ति व लोक परलोक सुधारने के लिए रुद्राक्ष अवश्य धारण करने योग्य हैं।

रुद्राक्षं मस्तके धृत्वा शिरः स्नानं करोति यः।
गंगास्नानंफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥

अर्थातः रुद्राक्ष को मस्तक पर धारण करके जो मनुष्य सिर से स्नान करता हैं उसे गंगा स्नान के समान परम पवित्र स्नान का फल प्राप्त होता हैं तथा वह मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता हैं इसमें संशय नहीं हैं।

1 से 14 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

एक मुखी:

एक मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्म स्वरुप हैं।

❖ एक मुखी रुद्राक्ष काजू के समान अर्थात अर्धचंद्राकार स्वरुप में प्राप्त होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष गोल आकार में सरलता से प्राप्त नहीं होता हैं। क्योकि गोलाकार में मिलना दुर्लभ मानागया हैं। बडे सौभाग्य किसी मनुष्य को गोल एक मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं प्राप्त से होता हैं।

- इस लिए एकमुखी रुद्राक्ष भोग व मोक्ष प्रदान करने वाला हैं।
- जो मनुष्य ने एकमुखी रुद्राक्ष धारण किया हो उस पर मां लक्ष्मी हमेशा कृपा वर्षाती हैं। या जिस घर में एकमुखी रुद्राक्ष का पूजन होता हों वहां लक्ष्मी का स्थाई वास होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य के घर में धन-धान्य, सुख-समृद्धि-वैभव, मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने वाले मनुष्य की सभी प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- जिस स्थान पर एकमुखी रुद्राक्ष होता हैं वहां से समस्त प्रकार के उपद्रवो का नाश होता हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से अंतःकरण में दिव्य-ज्ञान का संचार होता हैं।
- भगवान शिव का वचन हैं की एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से ब्रह्महत्या व पापों का नाश करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष सर्व प्रकार कि अभीष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धारण करने से धारण कर्ता में सात्विक उर्जा में वृद्धि करने में सहायक, मोक्ष प्रदान करने समर्थ हैं।
- एकमुखी रुद्राक्ष धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करने वाला होता हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ एं हं औं ऎं ॐ॥

दोमुखी रुद्राक्ष:

- दो मुखी रुद्राक्ष बादाम के समान आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष साक्षात अर्द्धनारीश्वर का स्वरुप हैं। कुछ ग्रंथो में दो मुख वाले रुद्राक्ष को देव देवेश्वर कहा गया हैं।
- शिव-शक्ति की निरंतर कृपा प्राप्ति हेतु दोमुखी रुद्राक्ष विशेष लाभकारी होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक शांति प्राप्त होकर तामसिक प्रवृत्तियों का नाश होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता को आध्यात्मिक उन्नति के लिए सहायता प्रदान करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से उदर संबंधित समस्याओं से मुक्ति मिलती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा करने में सहायक सिद्ध होता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गौ हत्या के पापों का नाश करता हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष से अनेक प्रकार की व्याधियां स्वतः ही शांत हो जाती हैं।
- दो मुखी रुद्राक्ष मनुष्य की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला एवं शुभ फल प्रदान करने वाला हैं।
- यदि दो मुखी रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री अपनी कमर पर या भुजा पर धारण करती हैं तो गर्भावस्था के नौ महिने तक उसकी अनजाने भय, तोने-तोटके, बेहोशी, हिस्टीरिया, बूरे स्वप्न आदि से रक्षा होती हैं। साथा ही एक रुद्राक्ष को गर्भवती स्त्री के बिस्तर पर

तकिए के नीचे एक डिब्बि में रखने से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

दो मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ॥

तीन मुखी रुद्राक्ष:

- तीन मुखी रुद्राक्ष थोडा लंबे आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष साक्षात अग्नि का स्वरुप हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गंभिर बीमारियों से रक्षा होती हैं।
- यदि कोई लम्बे समय से रोगग्रस्त हैं तो उसके तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से रोग से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना पीलिया के रोगी के लिए अत्याधिक लाभकारी होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्फूर्ति, कार्यक्षमता में वृद्धि होती हैं।
- जानकारों के मतानुशार तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्त्री हत्या इत्यादि पापों का नाश होता हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की तीन मुखी रुद्राक्ष ब्रह्म हत्या के पाप को नाश करने में भी समर्थ हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीत ज्वर दूर होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अद्भुत विद्या की प्राप्ति होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना मंदबुद्धि बच्चों के बौधिक विकास के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निम्न रक्तचाप को दूर करने में भी तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अग्निदेव की कृपा प्राप्त होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष से अग्नि भय से रक्षण होता हैं।

तीनमुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ रं हूं ह्रीं हूं ओं॥

चार मुखी रुद्राक्ष:

- चार मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रह्मा का स्वरुप हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से बौधिक शक्ति का विकास होता हैं।
- विद्याध्ययन करने वाले बच्चो के बौधिक विकास एवं स्मरण शक्ति के विकास के लिए चार मुखी रुद्राक्ष उत्तम फलदायि सिद्ध होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाणी में मिठास आती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक विकार दूर होते हैं।
- विद्वानो का कथन है की चार मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं स्पर्श से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की शीघ्र प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जीव हत्या के पापों का नाश होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को अभीष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में सहायक व कल्याणकारी हैं।

चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ व्रां क्रां तां हां ई॥

पंच मुखी रुद्राक्ष:

- पंच मुखी रुद्राक्ष साक्षात कालाग्नि का स्वरुप हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के अनिष्ट एवं कश्टो से मुक्ति मिलती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष मनोवांचित फल प्राप्त करने हेतु उत्तम हैं।
- पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-शांति प्राप्त होती हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष शत्रु भय से रक्षा करने के लिए भी लाभदायक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतुओं से रक्षा होती हैं।
- विष के प्रभाव को कम करने में पंचमुखी रुद्राक्ष अति लाभदायक हैं।

- महापुरुषो का कथन हैं की पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से परस्त्री गमन, अभक्ष्य भोजन का भक्षण करने के पापों से मुक्ति मिलती हैं। चित्त का शुद्धि करण हो जाता हैं।
- पंचमुखी रुद्राक्ष को पंचतत्त्वों का प्रतीक मानाजाता हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष को शास्त्रकारों ने आयुवर्द्धक एवं सर्वकल्याणकारी व मंगलप्रदायक माना हैं।
- पंच मुखी रुद्राक्ष अभीष्ट कार्यो की सिद्धि हेतु लाभदाय होता हैं।

जन सामान्य में एसी भ्रमक धारणाएं हैं की पंच मुखी रुद्राक्ष सस्ता एवं आसानी से मिलने के कारण यह अधिक लाभकारी नहीं होता। लेकिन वास्तविकता इससे परे हैं जानकारों का मत हैं की पंचमुखी सर्वाधिक लाभकारक होता हैं। मनुष्य को अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आवश्यक्ता के अनुशार रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।

पंच मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा॥

छः मुखी रुद्राक्ष:

- छः मुखी रुद्राक्ष साक्षात कार्तिकेय का स्वरुप हैं। कुछ विद्वानो के मत से छः मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का प्रतिक हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से माता पार्वती शीघ्र प्रसन्न्न होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विद्या प्राप्ति में सफलता प्राप्त होती हैं। अतः छः मुखी रुद्राक्ष विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाक शक्ति में निपुणता आती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यवसायीक कार्यों में लाभ प्राप्त होता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष से मनुष्यको भौतिक सुख-संपन्नता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने दारिद्र्यता दूर होती हैं।
- जानकारों नें छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करना मूर्च्छा जैसी बीमारी में लाभदायक बताया हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होती हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अपार शक्ति प्राप्त होती हैं व मनुष्यकी सकल इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।
- माहापुरुषो का कथन हैं की छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भ्रूणहत्या आदि पापों का निवारण होता हैं।
- इस लिए इसे शत्रुंजय रुद्राक्ष कहां जाता हैं।
- छः मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार की अभीष्ट सिद्धियां प्राप्ति में सहायता मिलती हैं।

छः मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं॥

सात मुखी रुद्राक्ष:

- सात मुखी रुद्राक्ष सप्त मातृकाओं का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इसे शास्त्रों में अनंग स्वरुप भी कहा गया हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार के रोग शांत हो जाते हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से दीर्धायु की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अभीष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सोने की चोरी, गौवध जैसे अनेक पापों को नाश होता हैं।
- मान्यता हैं की सात मुखी रुद्राक्ष धारण कर्ता की अस्त्र-शस्त्रों के प्रहार से रक्षा करता हैं।
- विद्वानो के मतानुशार सात मुखी रुद्राक्ष अकाल मृत्यु के भय को टालता हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र उत्तम भूमि की प्राप्ति होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विष प्रभाव से रक्षा होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को सन्निपात, मिर्गी रोग, शीत-ज्वर इत्यादि रोगों को शांत करने में लाभदायक होता हैं।

- सात मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्रता दूर होती हैं।
- सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को यश-मानसम्मान की वृद्धि होती हैं।

सात मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्वं क्रीं ह्रीं सौं॥

आठ मुखी रुद्राक्ष:

- आठ मुखी रुद्राक्ष गणेशजी का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। आठ मुखी रुद्राक्ष को भैरव का स्वरुप भी माना जाता हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अष्ट सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से विभिन्न प्रकार के विघ्नों को दूर करने वाला हैं।
- जिन लोगों का चित्त अधिकतर चंचल रहता हैं उनके आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से एकाग्रता बढाने में लाभप्राप्त होता हैं।
- महापुरुषो का का कथन हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से असत्य भाषण, मानकूटादिक व परस्त्रीजन्य पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करके गणेशजी की पूजा-अर्चना एवं साधना करने से वह शीघ्र फलप्रद होती हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्व देवगण प्रसन्न होते हैं।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करने से पूर्णाअयुष्य की प्राप्ति होती हैं।

आठ मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं॥

नव मुखी रुद्राक्ष:

- नव मुखी रुद्राक्ष नवदुर्गा का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को भैरव का प्रतिक भी माना जाता हैं। नव मुखी रुद्राक्ष को नवग्रह, नव-नाथों एवं नवधा भक्ति का प्रतीक भी समझा जाता हैं।
- नवमुखी रुद्राक्ष नव निधियों के प्रदान करने वाला हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को हजारों-लाखो-करोड़ो पापों को नष्ट करने वाला कहा गया हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष मृत्यु भय दूर होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सभी प्रकार की साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के मान-सम्मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को कार्य सिद्ध के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शत्रुपक्ष पराजित होता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष कोर्ट-कचेरी के कार्यो में सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम माना जाता हैं।
- नव मुखी रुद्राक्ष धारण करने से हृदय रोग नियंत्रण करने में विशेष लाभप्रद होता हैं।

नव मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं वं यं रं लं॥

दश मुखी रुद्राक्ष:

- दश मुखी रुद्राक्ष भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। दश मुखी रुद्राक्ष को यम एवं दस दिक्पाल का स्वरुप भी माना गया हैं।
- एसा मानाजाता हैं कि दस मुखी रुद्राक्ष में भगवान विष्णु के दशों अवतारों की शक्ति समाहित होती हैं।
- तांत्रिक साधनाओं में दस मुखी रुद्राक्ष का विशेष महत्व माना जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भूत-प्रेत, मारण-मोहन इत्यादि तांत्रिक बाधाओं के दुष्प्रभाव प्रभाव नहीं होता।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से आकस्मिक दुर्घटनाओं से रक्षा होती हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीघ्र ही मनुष्य का यश दशों दिशाओं में फेल जाता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य की सकल मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

- रोगों को शांत करने में दस मुखी रुद्राक्ष से विशेष लाभदायक होता हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष धारण करने से ग्रहों के अशुभ प्रभाव शांत होते हैं।
- दस मुखी रुद्राक्ष सभी प्रकार की बाधाओं का नाश कर, मनुष्य को सुख-शांति व समृद्धि प्रदान करता हैं

दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ॥

एकादश मुखी रुद्राक्ष:

- एकादश मुखी रुद्राक्ष को एकादश रुद्र का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। इन्द्र को भी एकादश मुखी रुद्राक्ष के देवता माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सुख-समृद्धि व सौभाग्य की वृद्दि होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष को संतान सुख के लिए लाभकारी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष सौभाग्यवती स्त्रीयों को अपने पति कल्याण के लिए धारण करना विशेष शुभ फलदायी माना गया हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सर्वत्र विजय की प्राप्ति होती हैं।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष में समाज को मोहित करने की विशेष शक्ति होती हैं।
- उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए भी एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से संक्रामक रोगों से सुरक्षा होती हैं। व यदि कोई व्यक्ति संक्रामक रोग से पीडित हैं तो शीघ्र स्वस्थ्य लाभ हेतु एकादश मुखी रुद्राक्ष धारण करना चाहिए।
- शास्त्रों में उल्लेख हैं की एकादश मुखी रुद्राक्ष को मस्तक में या शिखा पर धारण करने पर अश्वमेघ यज्ञ करने के समान फल, वाजपेय यज्ञ करने के समान फल एवं चंद्र ग्रहण में किए गए दान पुण्य के समान फल प्राप्त होते हैं।

एकादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ रुं मूं यूं औं॥

द्वादश मुखी रुद्राक्ष:

- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को भगवान विष्णु का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष में सूर्य आदि देवता वास करते हैं। इस लिए इसे आदित्यरुद्राक्ष भी कहते हैं।
- विष्णु भक्तों यदि द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करते हैं तो भगवान शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
- ब्रह्मचार्य व्रत के पालन के लिए द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करना विशेष उपयोगी सिद्ध होता हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के ओज-तेज की वृद्धि होती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से विभिन्न प्रकारकी व्याधियों से स्वतःमुक्ति मिलने लगती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जहरीले जीव-जंतु, चोर-लुटेरों, अग्नि भय, आदि शुद्र शक्तियों से सुरक्षा होती हैं।
- द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश हो जाता हैं।
- विद्वानो का मत हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दरिद्र से दरिद्र मनुष्य का भी समृद्धि को प्राप्त कर लेता हैं।
- ३२ मणकों की माला कंठ में धारण करने से मनुष्य के गो-वध, मनुष्य वध एवं चोरी इत्यादि पापों का नाश होता हैं।
- विद्वानो का कथन हैं की द्वादश मुखी रुद्राक्ष को शिखा पर धारण करने से मनुष्य के मस्तक प्र आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

द्वादश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ह्रीं श्रौं धृणिः श्रीं॥

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष:

- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को कामदेव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को इन्द्र का स्वरुप भी माना गया हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य की संपूर्ण मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अतुल्य धन-संपत्तिअ प्राप्त होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति संपूर्ण धातुओं की रसायनादिक सिद्धियों का ज्ञाता बन जाता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से व्यक्ति को मान-सम्मान, यश, पद-प्रतिष्ठा, आकर्षक व्यक्तित्व की प्राप्ति होती हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष का विशेषज्ञ की सलाह से दूध के साथ प्रयोग लाभकरी सिद्ध होता हैं।
- त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से समस्त प्रकार की शक्ति व सिद्धियों की प्राप्ति में विशेष सहायता प्राप्त होती हैं।

त्रयोदश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ ईं यां आप ओम्॥

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष:

- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को शिव का साक्षात स्वरुप माना जाता हैं। विद्वानो ने चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान का स्वरुप भी माना हैं। इस लिए चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को हनुमान रुद्राक्ष के नाम से भी जाना जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से सकल अभीष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष की उत्पत्ति के बारे में उल्लेख हैं की भगवान शिव के डमरु से चौदह प्रत्याहार निकले थे तथा कुछ प्रमुख शास्त्रों में भी एक से चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष का उल्लेख मिलता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से सभी प्रकार के कष्टों का निवारण हो जाता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से मनुष्य विभिन्न रोगों से मुक्ति मिलती हैं और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से व्यक्ति को सभी क्षेत्रों में उन्नति प्राप्त होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से परम पद की प्राप्ति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से शनि ग्रह से संबंधित अशुभ प्रभाव की शांति होती हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शत्रु व दुष्टों का नाश होता हैं।
- चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष धारण को मस्तक पर धारण करने से समस्त पापों का नाश होता हैं।

चतुर्दश मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-

ॐ औं स्फे खत्फैं हस्त्रौ हसत्फ्रें:॥

जो मनुष्य पृथ्वी पर रुद्राक्ष को मंत्र सहित धारण करते हैं वे रुद्रलोक में जाकर वास करते हैं तथा जो मंत्र रहित रुद्राक्ष धारण करते हैं वे घोर नरक के भागी होते हैं। उपरोक्त रुद्राक्षों को धारण करने वाले मनुष्य को भूत, प्रत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि का भय नहीं रहता। रुद्राक्ष धारण करता मनुष्य पर देवी-देवता शीघ्र प्रसन्न होते हैं। व मनुष्य की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं।

रुद्राक्ष धारण करें सावधानियों के साथ

संकलन गुरुत्व कार्यालय

यदि रुद्राक्ष को कीड़ो ने दूषित किया हो, जो टूटा-फूटा हो, जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो वरणयुक्त हो, इस प्रकार के रुद्राक्षों को धारण नहीं करना चाहिए।

- यदि रुद्राक्ष छिद्र करते हुए फट गये हो और जो शुद्ध रुद्राक्ष जैसे न हों उसे धारण करने से बचे। धारण करने से पहले रुद्राक्ष की परीक्षण कर लें कि रुद्राक्ष असली है या नकली।
- नकली रुद्राक्ष पानी में तैरने लगेगा और असली रुद्राक्ष पानी में डूब जाएगा। लेकिन आज के आधुनिक युग में नूतन तकनीक से पॉली फाइबर या अन्य विशेष द्रव्यों से बने रुद्राक्ष भी आगये हैं। जो दिखने में हुबहू रुद्राक्ष के बराबर दिखते हैं एवं पानी में डूब भी जाते हैं।
- रुद्राक्ष धारण करने पर मद्य, मांस, लहसुन, प्याज इत्यादि तामसिक पदार्थों का परित्याग करना चाहिए।
- भोजन-शौच इत्यादि क्रिया में इसकी पवित्रता का ख्याल रखे अन्यथा पवित्रता खंडित हो जाएगी।
- रुद्राक्ष पहन कर श्मशान या किसी अंत्येष्टि-कर्म में अथवा प्रसूति-गृह में न जाएं।
- स्त्रियां मासिक धर्म के समय रुद्राक्ष धारण न करें।
- रुद्राक्ष धारण कर रात्रि शयन न करें।
- जप आदि कार्यो में छोटे रुद्राक्ष की माला ही विशेष फलदायक होती हैं।
- बड़ा रुद्राक्ष रोगों पर विशेष फलदायी माना जाता है ।
- रुद्राक्ष शिवलिंग से अथवा शिव प्रतिमा से स्पर्श कराकर धारण करना चाहिए।
- निर्दिष्ट मंत्र से अभिमंत्रित किए बिना रुद्राक्ष धारण करने पर उसका शास्त्रोक्त फल प्राप्त नहीं होता है और दोष भी लगता है।
- रूद्राक्ष को शुभ दिनों में शुभ मूहूर्त में धारण करने पर व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।
- विद्या प्रारंभ करते समय, समस्त प्रकार के यज्ञ, तप एवं दान आदि शुभ कार्य करते समय रुद्राक्ष यदि पास में हो तो उस कार्य का फल शीघ्र मिलता हैं।
- विद्वानो का अनुभव हैं की रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले मनुष्य को देखकर सभी देवी-देवाता शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं।
- शिव के नेत्रों से गिरे आसुओं से उत्पन्न कल्याणकारी रुद्राक्ष में सूर्य का तेज, चंद्रमा की शीतलता एवं मानवता का कल्याण कूट कूट कर भरा हैं।
- पुराणोमें रुद्राक्ष के रंग, रुप, आकार के अनुशार एक से चौदह मुखी तक के रुद्राक्ष का महत्व बताया गया है।
- भोग और मोक्ष, दोनों की कामना रखने वाले लोगों को रुद्राक्ष की माला अथवा मनका जरूर पहिनना चाहिए।
- 108 रुद्राक्ष की माला धारण करने वाला मनुष्य अपनी 21 पीढ़ियों का उद्धार करता है।
- जाबाल श्रुति के अनुसार रुद्राक्ष धारण करने से किया गया पाप नगण्य हो जाता है।
- पानी के बर्तन में रात भर रुद्राक्ष रखने के बाद सुबह उस पानी को पीने से कई बीमारियां ठीक हो जाती हैं।
- किसी दूसरे व्यक्ति का धारण किया रुद्राक्ष धारण नहीं करना चाहिए।

- ❖ रुद्राक्ष सोने, चाँदी, ताँबे में बनवाकर धारण करना चाहिए।
- ❖ रुद्राक्ष को धागे में भी धारण किया जा सकता है।
- ❖ विद्वानो का मत हैं की रुद्राक्ष धारण करने के 40 दिनों के भीतर ही व्यक्तित्व में परिवर्तन दिखाई देने लगते हैं।
- ❖ जानकारों का मत हैं कि रुद्राक्ष धारण करनेवाले व्यक्ति को बुढ़ापा देर से आता हैं।
- ❖ रुद्राक्ष का मनोवांछित लाभ प्राप्त करने हेतु उसे समय-समय पर साफ-सफाई करते रहे।
- ❖ यदि रुद्राक्ष शुष्क हो जाए तो उसे तेल में कुछ समय तक डुबाकर रखदें।
- ❖ यदि रुद्राक्ष को किसी धातु में नहीं बनवाते हैं तो उसे ऊनी या रेशमी धागे में भी धारण कर सकते हैं।
- ❖ विद्वानो के मतानुशार ज्यादातर रुद्राक्ष लाल धागे में धारण किए जाते हैं, लेकिन एक मुखी रुद्राक्ष सफेद धागे में, सात मुखी रुद्राक्ष को काले धागे में और ग्यारह, बारह, तेरह मुखी रुद्राक्ष तथा गौरी-शंकर रुद्राक्ष पीले धागे में धारण करना चाहिए।

रुद्राक्ष धारण करने के संक्षिप्त विधि

- रुद्राक्ष धारण करने हेतु उपयुक्त यही रहेगा की आप किसी जानकार व्यक्ति से इसे अभिमंत्रित या चैतन्य युक्त करवाले फिर उसे विधिवत धारण करें।
- रुद्राक्ष को प्राण प्रतिष्ठित करने की संक्षिप्त विधि आपके मार्गदर्शन के लिए प्रस्तुत हैं। रुद्राक्ष को पंचोपचार, अष्टोपचार अथवा षोडोशोपचार विधि से प्राण प्रतिष्ठित किया जा सकता हैं।
- रुद्राक्ष धारण करने के लिए शुभ मुहूर्त या दिन का चयन करले। रुद्राक्ष धारण करने हेतु सोमवार उत्तम है। धारण करने से एक दिन पूर्व संबंधित रुद्राक्ष को किसी संगंधित तेल में डूबादे।
- दूसरे दिन प्रातः काल स्नानादि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर कर उसे स्वच्छ करके कुछ समय के लिए गाय के कच्चे दूध में या गंगाजल में डूबाकर रख कर पवित्र कर लें।
- तत्पश्चात शिवपंचाक्षरी मंत्र **ॐ नमः शिवाय** मंत्र का जप करते हुए रुद्राक्ष को पूजास्थल पर अपने सम्मुख रखदे। फिर उसे पंचामृत (गाय का कच्चा दूध, दही, घी, मधु एवं शक्कर या गुड़) से अभिषेक कर गंगाजल से पवित्र करके अष्टगंध या चंदन एवं केसर का लेप लगाकर धूप, दीप और पुष्प अर्पित कर शिव मंत्रों का जप करते हुए उसका संस्कार करें।
- तत्पश्चात संबद्धित रुद्राक्ष के शास्त्रोक्त बीज मंत्र का 21, 11, 5 माला अथवा कम से कम 1 बार जप करें। तत्पश्चात
- शिव पंचाक्षरी मंत्र ॐ नमः शिवाय अथवा शिव गायत्री मंत्र
- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ मंत्र की 1 माला जप करके रुद्राक्ष-धारण करें।
- अंत में पूजन में हुइ त्रुटियों के निवारण हेतु क्षमा प्रार्थना करें। यदि संभव हो, तो रुद्राक्ष धारण के दिन उपवास करें अथवा सात्विक एवं अल्पाहार ग्रहण करें।
- यदि कोई भक्त इतना भी करने में असमर्थ हो तो रुद्राक्ष को गंगाजल में या गाय के कच्चे दूध में कुछ घंटे के लिए डूबाकर रखले फिर श्रद्धापूर्व भगवान शिव का स्मरण करते हुए धारण करले। उसे निश्चित लाभ प्राप्त होगा इसमें जराभी संदेह नहीं हैं।

रुद्राक्ष के विषय में विशेष जानकारी

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिव पुराण के अनुशार:

जो व्यक्ति कंठ में बत्तीस रुद्राक्ष, मस्तक पर चालीस, कानों में छः-छः, हथों में बारह-बारह, भुजाओं में सोलह-सोलह, शिखा में तथा वक्ष पर एक सौ आठ रुद्राक्षों को धारण करता हैं वह साक्षात भगवान नीलकण्ठ के समान हो जाता हैं।

मनुष्य के जीवन में सुख-शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होती हैं। भगवान शिव के दिव्य-ज्ञान को प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय रुद्राक्ष धारण करना हैं। रुद्राक्ष धारण ने से समाज में मनुष्य के मान-सम्मान में वृद्धि होती हैं। शिवभक्तों का मत हैं की यदि भगवान शिव और देवी पार्वती को प्रसन्न करना हो तो रुद्राक्ष अवश्य धारण करना चाहिए।

विद्वानो ने रुद्राक्ष को आकार के हिसाब से तीन भागों में बांटा हैं।

1- उत्तम श्रेणी का रुद्राक्ष: जो रुद्राक्ष आकार में आंवले के फल के बराबर हो वह सबसे उत्तम माना गया है।

2- मध्यम श्रेणी- जिस रुद्राक्ष का आकार बेर के फल के समान हो वह मध्यम श्रेणी में आता है।

3- निम्न श्रेणी- चने के बराबर आकार वाले रुद्राक्ष को निम्न श्रेणी में गिना जाता है।

जिस रुद्राक्ष को कीड़ों ने खराब कर दिया हो या टूटा-फूटा हो, या पूरा गोल न हो। जिसमें उभरे हुए दाने न हों। ऐसा रुद्राक्ष नहीं पहनना चाहिए। वहीं जिस रुद्राक्ष में अपने आप डोरा पिरोने के लिए छेद हो गया हो, वह उत्तम होता है।

भगवान शंकर को रुद्राक्ष अतिप्रिय है। भगवान शंकर के उपासक इन्हें माला के रूप में पहनते हैं।

- जो रुद्राक्ष आंवले से फल के बराबर हो वह सर्व प्रकारके अनिष्टों का नाश करने वाला व श्रेष्ठ माना गया हैं।
- जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर हो वह, उत्तम फल देने वाला, सुख सौभाग्यकी वृद्धि करने वाला होता हैं।
- गुंजाफल के समान बहुत छोटे आकार का रुद्राक्ष संपूर्ण मोनोरथ को सिद्ध करने वाला होता हैं।
- रुद्राक्ष जितना छोटा होता हैं वहं उतना ही अधिक फल देने वाला होता हैं।
- एक बड़े रुद्राक्ष से छोटा, अर्थात एक छोटे रुद्राक्ष से छोटा रुद्राक्ष दस गुना अधिक फल देने वाला माना जाता हैं।

पौराणिक मान्यता हैं कि असली रुद्राक्ष पानी में डूब जाता हैं! यदि रुद्राक्ष नकली हो या किड़े ने खाया हो तो वह पानी में तैरता हैं! लेकिन आज के आधुनिक युग में नूतन तकनीक से पॉली फाइबर या अन्य विशेष द्रव्यों से बने रुद्राक्ष भी आगये हैं। जो दिखने में हुबहू रुद्राक्ष के बराबर दिखते हैं एवं पानी में डूब भी जाते हैं। इस कारण चालबाज़ व्यापारी या घुमक्कड़ ढोंगी साधु-बाबा-फकिर आदि धर्म के नाम पर भोले-भाले अनजान व्यक्ति को नकली रुद्राक्ष बेचकर मोटी रकम एठलेते हैं। अतः रुद्राक्ष खरीदने में अत्याधिक सावधानी बर्ते।

प्रायः देखने-सुनने में आता हैं की पर्यटक स्थानों या धार्मिक स्थानों के निकट पर कुछ निम्न वर्ग के बेइमान व्यापारी या दुकानदार ग्राहक को नकली रुद्राक्ष बेचते है या रुद्राक्ष के वास्तविक मूल्य से कई गुना अधिक मूल्य बसूल लेते हैं। अतः यदि किसी पर्यटक स्थानों या धार्मिक स्थानों से रुद्राक्ष खरीदे तों किसी विश्वसनीय व्यक्ति, दुकानदार या संस्था से ही रुद्राक्ष खरीदे। अन्यथा अपने निकटवर्ती भरोसेमंद संस्था या दुकानदार से रुद्राक्ष खरीदे।

महामृत्युंजय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

अकाल मृत्यु एवं असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये शीघ्र प्रभावि उपाय

अकाल मृत्यु एवं असाध्य रोगों से मुक्ति के लिये शीघ्र प्रभावि उपाय महामृत्युंजय
मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं
"शरीरं व्याधिमंदिरम्" अर्थात् ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यघि पीड़ाए उत्पन्न होती रहती हैं।
ज्योतिष शास्त्र एवं आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य द्वारा पूर्वकाल में किये गयें कर्मो का फल ही व्यक्ति के शरीर में विभिन्न रोगों के रूप में प्रगट होतें हैं।

हरित सहिंता के अनुशार:

जन्मान्तर कृतम् पापम् व्याधिरुपेण बाधते।
तच्छान्तिरौषधैर्दानजर्पहोमसुरार्चनैः॥

अर्थातः पूर्व जन्म में किये गये पाप कर्म ही व्याधि के रूप में हमारे शरीर में उत्पन्न हो कर कष्टकारी हो जाता हैं। तथा औषध, दान, जप, होम व देवपूजा से रोग की शांति होती हैं।

शास्त्रोक्त विधान के अनुशार देवी भगवती ने भगवान शिव से कहा कि, हे देव! आप मुझे मृत्यु से रक्षा करने वाला और सभी प्रकार के अशुभों का नाश करने वाल कवच बतलाईये? तब शिवजी ने महामृत्युंजय कवच के बारे में बतलाया। विद्वानो ने महामृत्युंजय कवच को मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अचूक व अद्भूत उपाय माना हैं। आज के इर्षा भरे युग में हर मनुष्य को सभी प्रकार के अशुभ से अपनी रक्षा हेतु महामृत्युंजय कवच को अवश्य धारण करना चाहिये।

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा

सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं।

अमोघ महामृत्युंजय कवच धारण कर अन्य सामग्री को अपने पूजा स्थान में स्थापित करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, मनुष्य के सर्व रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि जीवन में किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, मारक ग्रहो की दशा का अशुभ प्रभाव प्राप्त होकर मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त हो रहे हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। मृत्युजय देवाधिदेव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन **शिव पुराण, काशीखंड** और **महापुराण** में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र का महत्व:

मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजयः स्मृतः या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,

अर्थात: जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता है।

मंत्र जप के लिए विशेष:

यः शास्त्रविधि मृत्सृज्य वर्तते काम कारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥ (श्रीमद् भगवद् गीता:षोडशोऽध्याय)

भावार्थ : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परमगति को और न सुख को ही॥23॥

ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ऋषि का जीवन अत्यंत अल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र के जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा। भगवान शिवजी शनिदेव के गुरु भी हैं इस लिए महामृत्युंजय मंत्र के जप से शनि से संबंधित पीड़ाए दूर हो जाती हैं।

जो मनुष्य पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र का जप व अनुष्ठान संपन्न करने में असमर्थ हो! वह व्यक्ति संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित **अमोघ महामृत्युंजय कवच** व सामग्री गुरुत्व कार्यालय द्वारा बनवा सकते हैं।

नोट: व्यक्ति अपने कुल ब्राह्मण/पुरोहित द्वारा भी पूर्ण विधि-विधान से मंत्र जप व अनुष्ठान संपन्न करवा सकते हैं। यदि आप अनुष्ठान से संबंधित यंत्र व अन्य सामग्री प्राप्त करना चाहते हैं तो गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

सर्व रोग नाशक महामृत्युन्जय मंत्र अचूक प्रभावी

संकलन गुरुत्व कार्यालय

महामृत्युंजय मंत्र के विधि विधान के साथ में जाप करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर व्यक्ति को स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि स्नान करते समय शरीर पर पानी डालते समय महामृत्युन्जय मंत्र का जप करने से त्वचा सम्बन्धित समस्याए दूर होकर स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

यदि किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। जिस्से व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान देने वाले देवो के देव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन **शिव पुराण, काशीखंड** और **महापुराण** में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महामृत्युंजय मंत्र का महत्व:

मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजय:
स्मृत: या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,

अर्थात: जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता है।

मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं"शरीरं व्याधिमंदिरम्" ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यघि उपाधियां उत्पन्न होती रहती हैं। इस लिए हमें अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आहार-विहार, खान-पान और नियमित दिनचर्या निश्चित समय पर करना पडता हैं।

यदि इन सब को निश्चित समय अवधि पर करते रहने के बाद भी यदि कोई रोग या व्याधि हो जाए एवं वह रोग इलाज कराने के बाद भी यदि ठीक नहीं हो एवं सभी जगा से निराशा हाथ लगरही हो तो एसे अरिष्ट की निवृत्ति या शांति के लिए महामृत्युज्य मंत्र जप का प्रयोग अवश्य करें।

शास्त्रों में मृत्यु भयको विपत्ति या संकट माना गया हैं, एवं शास्रो के अनुशार विपत्ति या मृत्य के निवारण के देवता शिव हैं।

ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ऋषि का जीवन अत्यल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा।

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

मंत्र उच्चारण विचार :

महामृत्युंजय मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र है। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

महामृत्युंजय मंत्र के अन्य प्रयोग

प्रयोग: 1

हर दिन स्नानादि से निवृत्त होकर अपने हाथो को स्वच्छ पानी से धोले। अपने पूजा स्थान पर एक तांबे

के पात्र में या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में 1-2 ग्लास जल भरलें। उस जल भरे पात्र में अपने दाहिने हाथ की चारों उंगली व अंगूठे को डूबादें और महामृत्युंजय मंत्र का जप करते हुएं 108 बार या 5 मिनट या 10 मिनट तक **महामृत्युंजय मंत्र** का जप करते हुएं उस जल को पीले या 1-2 घंटो में थोडा-थोडा जल पीते रहें।

एसा करने से आपके शारीर की उर्जा जाग्रत होकर उस जल भरें पात्र में सकारात्मक उर्जा केन्द्रित होती हैं। सकारात्मक उर्जा भरें इस जल को पीने से शरीर के समस्त रोग, आधि-व्याधियां स्वतः नाश हो जाती हैं।

प्रयोग: 2

जलभरा पात्र लेकर जल पर द्रष्टी डालते हुए महामृत्युंजय मंत्र जप करना भी लाभप्रद होता हैं।

प्रयोग: 3

यदि यह करने में भी आप असमर्थ हैं। संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित व पूर्ण चैतन्य युक्त ताम्बे में निर्मित महामृत्युंजय यंत्र को प्राप्त करलें।

अपने पूजन घरमें महामृत्युंजय यंत्र को स्थापित कर के प्रतिदिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर एक स्वच्छ पात्र में यंत्र को रखदें उस यंत्र पर शुद्ध जल से महामृत्युंजय मंत्र का उच्चारण करते हुए महामृत्युंजय यंत्र के उपर जलधार डाले। फिर उस जल को ग्रहण करें। महामृत्युंजय यंत्र के उपर चमच्च से एक-एक मंत्र उच्चारण करते हुए भी महामृत्युंजय यंत्र पर जल चढा कर और उस जल को ले सकते हैं।

अन्यथा आपके घर में पानी रखने का जो मटका, फिलटर इत्यादि जो साधन हो उस के अंदर महामृत्युंजय यंत्र को डूबाकर भी रख सकते हैं। इस प्रयोग से घर के सभी सदस्यो का स्वास्थ्य उत्तम रहता हैं।

नोट:

हाथ व पात्र को शुद्ध पानी से अच्छि तरह साफ करलें व पात्र में शुद्ध जल ही भरे। अन्यथा हाथ में लगी धूल-मिट्टी व किटाणु पानी के साथ मिलकर आपके भितर जायेंगे जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकता हैं।

मंत्र का जप जब पानी में हाथ डूबा हो तब 5-10 मिनट से अधिक न करें अन्यथा हाथ में पसीना होने लगेगा और पात्र के जल में उसका मिश्रण अधिक मात्रा में होने पर स्वास्थ्य के लिये नुक्शानदेह हो सकता हैं।

उक्त सभी प्रयोग हमारे वर्षो के अनुभव व शोध के आधार पर हमने पाया हैं कि यह प्रयोग तत्काल प्रभावि हैं। आप भी अपने जीवन में इस प्रयोग को अपनाकर देखलें। जिससे इस प्रयोग का शुभ परिणाम/लाभ पूर्ण पार्दर्शीता से आपके सामने होगा इस में जरा भी संदेह नहीं हैं। यहं प्रयोग हमने स्वयं व हमारे साथ लम्बे समय से जुडे हजारो बंधु/बहन प्रतिदिन करते आरहे हैं। यहं प्रयोग व्यक्ति को सभी प्रकार के रोगो से मुक्ति व उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु पूर्णतः सक्षम हैं। क्योकि इस प्रयोग से साधक अपनी स्वयं की शक्ति को केंद्रीत करता हैं।

यदि कोई व्यक्ति उक्त प्रयोग को स्वयं करने में सक्षन नहीं हो तो उसके परिवार का कोई भी सदस्य इस प्रयोग को कर के उस जल को रोगी को पीला सकते हैं।

- मंत्रजप पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा से करें।
- महिलाओं के लिये अशुद्धि के दौरान प्रयोग करना निषिध हैं।

महामृत्युंजय मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

महामृत्युंजय मंत्र के विधि विधान के साथ में जाप करने से अकाल मृत्यु तो टलती ही हैं, रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर व्यक्ति को स्वस्थ आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

यदि स्नान करते समय शरीर पर पानी डालते समय **महामृत्युन्जय मंत्र** का जप करने से त्वचा सम्बन्धित समस्याए दूर होकर स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

यदि किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं। जिस्से व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान देने वाले देवो के देव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।

मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है। महामृत्यंजय मंत्र की महिमा का वर्णन शिव पुराण, काशीखंड और महापुराण में किया गया हैं। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी मृत्युंजय मंत्र का उल्लेख है। मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इस मंत्र को मृत्युंजय कहा जाता है।

महत्व: **मृत्युर्विनिर्जितो यस्मात् तस्मान्मृत्युंजयः स्मृतः या मृत्युंजयति इति मृत्युंजय,**

अर्थात : जो मृत्यु को जीत ले, उसे ही मृत्युंजय कहा जाता हैं।

मानव शरीर में जो भी रोग उत्पन्न होते हैं उसके बारे में शास्त्रो में जो उल्लेख हैं वह इस प्रकार हैं। **"शरीरं व्याधिमंदिरम्"** ब्रह्मांड के पंच तत्वों से उत्पन्न शरीर में समय के अंतराल पर नाना प्रकार की आधि-व्यधि उपाधियां उत्पन्न होती रहती हैं। इस लिए हमें अपने शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आहार-विहार, खान-पान और नियमित दिनचर्या निश्चित समय पर करना पडता हैं। यदि इन सब को निश्चित समय अवधि पर करते रहने के बाद भी यदि कोई रोग या व्याधि हो जाए एवं वह रोग इलाज कराने के बाद भी यदि ठीक नहीं हो एवं सभी जगा से निराशा हाथ लगरही हो तो एसे अरिष्ट की निवृत्ति या शांति के लिए महामृत्युज्य मंत्र जप का प्रयोग अवश्य करें।

शास्त्रों में मृत्यु भयको विपत्ति या संकट माना गया हैं, एवं शास्रो के अनुशार विपत्ति या मृत्य के निवारण के देवता शिव हैं। एवं ज्योतिषशास्त्र के अनुशार दुख, विपत्ति या मृत्य के प्रदाता एवं निवारण के देवता शनिदेव हैं, क्योकि शनि व्यक्ति के कर्मो के अनुरुप व्यक्ति को फल प्रदान करते हैं। शास्त्रो के अनुशार मार्कण्डेय ऋषि का जीवन अत्यल्प था, परंतु महामृत्युंजय मंत्र जप से शिव कृपा प्राप्त कर उन्हें चिरंजीवी होने का वरदान प्राप्त हुवा।

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव

बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

मंत्र उच्चारण विचार :इस मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र कि समग्र शक्ति समाहित होती हैं। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

महामृत्युंजय मंत्र

महामृत्युंजय मंत्र का जप आवश्यकता के अनुरूप होते हैं। अलग-अलग उद्देश्य के लिये अलग-अलग मंत्रों का प्रयोग होता है। मंत्र में दिए अक्षरों एवं उसकी संख्या के अनुरुप से उसके प्रभाग मे बदलाव आते है। यह मंत्र निम्न प्रकार से है-

एकाक्षरी मंत्र- हौं । (एक अक्षर का मंत्र)

त्र्यक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः । (तीन अक्षर का मंत्र)

चतुरक्षरी मंत्र- ॐ वं जूं सः। (चार अक्षर का मंत्र)

नवाक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः पालय पालय। (नव अक्षर का मंत्र)

दशाक्षरी मंत्र- ॐ जूं सः मां पालय पालय। (दश अक्षर का मंत्र)

(स्वयं के लिए इस मंत्र का जप इसी तरह होगा। यदि किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह जप किया जा रहा हो तो 'मां' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेना होगा)

महामृत्युंजय का वेदोक्त मंत्र निम्नलिखित है-

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इस मंत्र में द्वात्रिंशाक्षरी)32 अक्षर का मंत्र (का प्रयोग हुआ है और इसी मंत्र में ॐ' लगा देने से 33 शब्द हो जाते हैं। इसे 'त्र्यत्रिंशाक्षरी या तैंतीस अक्षरी मंत्र कहते हैं। श्री वशिष्ठजी ने इन 33 शब्दों के 33 देवता समाहित है अर्थात् शक्तियाँ निश्चित की हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

इस मंत्र में

8 वसु,

11 रुद्र,

12 आदित्य

1 प्रजापति तथा

1 वषट को माना है।

मंत्र उच्चारण विचार :

इस मंत्र में आए प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि स्पष्ट शब्द उच्चारण मे ही मंत्र है। इस मंत्र में उल्लेखित प्रत्येक शब्द अपने आप में एक संपूर्ण बीज मंत्र का अर्थ लिए हुए है।

रुद्राभिषेकस्तोत्र

ॐ सर्वदेवताभ्यो नम :

ॐ नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च ।
पशूनाम् पतये नित्यमुग्राय च कपर्दिने ॥१॥
महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय च शान्तये ।
ईशानाय मखघ्नाय नमोऽस्त्वन्धकघातिने ॥२॥
कुमारगुरवे तुभ्यम् नीलग्रीवाय वेधसे ।
पिनाकिने हिवष्याय सत्याय विभवे सदा ॥३॥
विलोहिताय धूम्राय व्याधायानपराजिते ।
नित्यनीलिशखण्डाय शूलिने दिव्यचक्षुषे ॥४॥
हन्त्रे गोप्त्रे त्रिनेत्राय व्याधाय वसुरेतसे ।
अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुताय च ॥५॥
वृषध्वजाय मुण्डाय जिटने ब्रह्मचारिणे ।
तप्यमानाय सिलले ब्रह्मण्यायाजिताय च ॥६॥
विश्वात्मने विश्वसृजे विश्वमावृत्य तिष्ठते ।
नमो नमस्ते सेव्याय भूतानां प्रभवे सदा ॥७॥
ब्रह्मवक्त्राय सर्वाय शंकराय शिवाय च ।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानां पतये नम: ॥८॥
नमो विश्वस्य पतये महतां पतये नम: ।
नम :सहस्रिशरसे सहस्रभुजमृत्यवे ।
सहस्रनेत्रपादाय नमोऽसंख्येयकर्मणे॥९॥
नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च ।
भक्तानुकिम्पने नित्यं सिध्यतां नो वर :प्रभो ॥१०॥
एवं स्तुत्वा महादेवं वासुदेव :सहार्जुन: ।
प्रसादयामास भवं तदा ह्यस्त्रोपलब्धये ॥११॥

॥ इति रुद्राभिषेकस्तोत्रम् संपूर्ण ॥

प्रयोग : तांबेके लोटे में शुध्ध पानी या गंगाजल, गाय का कच्चा दूध, सफेद या काले तिल इन सबको लोटे में मिलाकर शिवलिंग उपर दूध की धारा चालु रखकर उपरोक्त लघुरुद्राभिषेक स्तोत्र का पाठ ग्यारा बार श्रध्धा पूर्वक करने से जीवन में आयी हुई और आनेवाली समस्त प्रकार के कष्टो से छुटकारा मिलता हैं और सुख शांति एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है। इसमें लेस मात्र सदेह नहीं हैं।

शिवपूजन का महत्व क्या हैं?

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

हिन्दू धर्म में सप्ताह के हर दिवस का संबंध किसी न किसी देवता व ग्रह से माना गया हैं।

रविवार के दिन सूर्य की उपासना की जाती है जिसका कारक ग्रह सूर्य हैं। सोमवार को भगवान शिव कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह चंद्रमा हैं। मंगलवार को भगवान गणपति और हनुमानजी कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह मंगल हैं। बुधवार को गणेश पूजन व बुध कि पूजा कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह बुध हैं। बृहस्पतिवार को श्री हरि का पूजन करने का विधान हैं जिसके कारक ग्रह देव गुरु बृहस्पति हैं। शुक्रवार के दिन मां लक्ष्मी एवं माता संतोषी कि उपासना कि जाती हैं, जिसका कारक ग्रह शुक्र हैं। शनिवार को मां महाकाली, हनुमान, भैरव व कर्म के देवता शनिदेव की उपासना की जाती हैं जिसके कारक ग्रह शनिदेव हैं।

इस प्रकार भरतीय परंपरा में विभिन्न वार में संबंधित देवि-देवता का पूजन-अर्चन विशेष फलदायि सिद्ध होने की मान्यता पौराणिक काल से चली आरही हैं।

धर्म ग्रंथो में भगवान शिव की उपासना पूरे सप्ताह के दिन करने से विभिन्न फलो कि प्राप्ति होने का सविस्तार उल्लेख किया गया हैं।

परंतु यदि किसी शिव भक्त व श्रद्धालु के मन में एसे प्रश्न अवश्य उठते हैं, कि शिवजी की आराधना व हेतु सोमवार का विशेष आग्रह क्यो किया जाता हैं!

आपके मार्गदर्शन हेतु शास्त्रोक्त विधान के कुछ अंश यहा प्रस्तुत हैं।

सप्ताह के दिनों की उत्पत्ति भगवान शिव से ही प्रकट होने का उल्लेख हमारे ग्रंथो में किया गया हैं।

शिव-महापुराण में उल्लेख हैं:

आदिसृष्टौ महादेवः सर्वज्ञः करुणाकरः॥
सर्वलोकोपकारार्थं वारान्कल्पितवान्प्रभुः॥

(श्रीशिवमहापुराणम्)

प्राणियों की आयु निर्धारण करने के लिए भगवान शिव ने काल की कल्पना कि थी। काल से ही देव-मानव से लेकर समस्त छोटे-बडे जीवों की आयुष्य का अनुमान लगाया जाता है। काल को ही व्यवस्थित करने के लिए भगवान शिव ने सप्तवारों की कल्पना कि थी।

संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ।
आय्वारोग्यदं वारं स्ववारं कृतवान्प्रभुः ॥
संपत्कारं स्वमायाया वरं च कृतवांस्ततः ॥
जनने दुर्गतिक्रांते कुमारस्य ततः परम् ॥
आलस्यदुरितक्रांत्यै वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
रक्षकस्य तथा विष्णोर्लोकानां हितकाम्यया ॥
पुष्ट्यर्थं चैव रक्षार्थं वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
आयुष्करं ततो वारमायुषां कर्तुरेव हि ॥
त्रैलोक्यसृष्टिकर्तुर्हि ब्रह्मणः परमेष्ठिनः ॥
जगदायुष्यसिद्ध्यर्थं वारं कल्पितवान्प्रभुः ॥
आदौ त्रैलोक्यवृद्ध्यर्थं पुण्यपापे प्रकल्पिते ॥
तयोः कर्त्रोस्ततो वारमिंद्रस्य च यमस्य च ॥
(श्रीशिवमहापुराणम्)

सर्वप्रथम भगवान शिव सूर्य के रूप में प्रकट होकर आरोग्य के लिए प्रथमवार की कल्पना की। अपनी सर्वसौभाग्यदात्री शक्ति के लिए द्वितीयवार की कल्पना की। उसके बाद अपने ज्येष्ठ पुत्र कुमार के लिए अत्यन्त सुन्दर तृतीयवार की कल्पना की। उसके बाद सर्वलोकों की रक्षा का भार वहन करने वाले परम मित्र मुरारी के लिए चतुर्थवार की कल्पना की। देवगुरु बृहस्पति के नाम से पच्चमवार की कल्पना कर उसका स्वामी यम को बनाया। असुरगुरु शुक्र के नाम से छठे वार की

कल्पना करके उसका स्वामी ब्रह्मा को बना दिया एवं सप्तमवार की कल्पना कर उसका स्वामी इंद्र को बना दिया। नक्षत्र चक्र में भी सात मूल ग्रह ही दृष्टिगोचर होते हैं, इसलिए भगवान् ने सूर्य से लेकर शनि तक के लिए सातवारों की कल्पना की गई। क्योकि राहु और केतु छाया ग्रह होने के कारण दृष्टिगत न होने से उनके वार की कल्पना नहीं की गई।

शिवमहापुराण ग्रंथ के अनुशार भगवान शिव की उपासना सप्ताह के हर वार को अलग फल प्रदान करती है।

आरोग्यंसंपद चैव व्याधीनांशांतिरेव च।
पुष्टिरायुस्तथाभोगोमृतेर्हानिर्यथाक्रमम्॥

(शिवमहापुराण)

अर्थातः स्वास्थ्य, संपत्ति, रोग-नाश, पुष्टि, आयु, भोग तथा मृत्यु हानि से रक्षा के लिए रविवार से लेकर शनिवार तक भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए।

विद्वानो के अनुशार सभी वारों में शिव फलप्रद हैं फिर भी लोग सोमवार का आग्रह इस लिये करते हैं, क्योकि की मनुष्य मात्र को भौतिक सुख-सम्पत्ति से अत्यधिक प्रेम होता है, इसलिए उसने शिव के लिए सोमवार का चयन किया।

विद्वानो के मतानुशार यदि कोई श्रधालु सप्ताह के सात दिन शिव पूजन नही कर सके तो उन्हे सोमवार को शिव पूजन अवश्य करनी चाहिये। आखिर ऐसा क्यों? शिव के लिए सोमवार का आग्रह ही क्यों? आपके ज्ञान की वृद्धि के लिये शास्त्रोक्त विधान प्रस्तुत हैं।

पुराणों के अनुसार सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा भगवान् शङ्कर के शीश पर मुकुटायमान होकर अत्यन्त सुशोभित होता है। लगता है कि भगवान् शङ्कर ने जैसे कुटिल, कलंकी, कामी, वक्री एवं क्षीण चंद्रमा को उसके अपराधी होते हुए भी क्षमा कर अपने शीश पर स्थान दिया वैसे ही भगवान् हमें भी सिर पर नहीं तो चरणों में जगह अवश्य देंगे। यह याद दिलाने के लिए सोमवार को ही लोगों ने शिव का वार बना दिया।

विद्वानो के मत से सोम (SOM) में ॐ (OM) समाहित है। धार्मिक ग्रंथो के अनुशार भगवान शिव ॐ कार स्वरूप हैं।

सोम का अर्थ चंद्रमा होता है और चंद्रमा मन का प्रतीक है। जड़ मन में चेतनता जाग्रत करने वाले परमेश्वर ही है। इसलिए देवाधिदेव महादेव की उपासना सोमवार को की जाती है। भगवान शिव का सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण तीनों पर एक समान अधिकार हैं। शिवने अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण कर शशि शेखर कहलाये हैं। चंद्रमा से शिव को विशेष स्नेह होने के कारण चंद्र सोमवार का अधिपति हैं इस लिये शिव का प्रिय वार सोमवार हैं।

***

क्यों शिव को प्रिय हैं बेल पत्र?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

क्या हैं बेल पत्र अथवा बिल्व-पत्र?

बिल्व-पत्र एक पेड़ की पत्तियां हैं, जिस के हर पत्ते लगभग तीन-तीन के समूह में मिलते हैं। कुछ पत्तियां चार या पांच के समूह की भी होती हैं। किन्तु चार या पांच के समूह वाली पत्तियां बड़ी दुर्लभ होती हैं। बेल के पेड को बिल्व भी कहते हैं। बिल्व के पेड़ का विशेष धार्मिक महत्व हैं। शास्त्रोक्त मान्यता हैं कि बेल के पेड़ को पानी या गंगाजल से सींचने से समस्त तीर्थो का फल प्राप्त होता हैं एवं भक्त को शिवलोक की प्राप्ति होती हैं। बेल कि पत्तियों में औषधि गुण भी होते हैं। जिसके उचित औषधीय प्रयोग से कई रोग दूर हो जाते हैं। भारतिय संस्कृति में बेल के वृक्ष का धार्मिक महत्व हैं, क्योकि बिल्व का वृक्ष भगवान शिव का ही रूप है। धार्मिक ऐसी मान्यता हैं कि बिल्व-वृक्ष के मूल अर्थात उसकी जड़ में शिव लिंग स्वरूपी भगवान शिव का वास होता हैं। इसी कारण से बिल्व के मूल में भगवान शिव का पूजन किया जाता हैं। पूजन में इसकी मूल यानी जड़ को सींचा जाता हैं।

धर्मग्रंथों में भी इसका उल्लेख मिलता हैं-

बिल्वमूले महादेवं लिंगरूपिणमव्ययम्। यः पूजयति पुण्यात्मा स शिवं प्राप्नुयाद्॥
बिल्वमूले जलैर्यस्तु मूर्धानमभिषिञ्चति। स सर्वतीर्थस्नातः स्यात्स एव भुवि पावनः॥ (शिवपुराण)

भावार्थ :बिल्व के मूल में लिंगरूपी अविनाशी महादेव का पूजन जो पुण्यात्मा व्यक्ति करता है, उसका कल्याण होता है। जो व्यक्ति शिवजी के ऊपर बिल्वमूल में जल चढ़ाता है उसे सब तीर्थो में स्नान का फल मिल जाता है।

बिल्व पत्र तोड़ने का मंत्र

बिल्व-पत्र को सोच-समझ कर ही तोड़ना चाहिए। बेल के पत्ते तोड़ने से पहले निम्न मंत्र का उच्चरण करना चाहिए-

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेवप्रियःसदा।
गृह्णामि तव पत्राणि शिवपूजार्थमादरात्॥ -(आचारेन्दु)

भावार्थ :अमृत से उत्पन्न सौंदर्य व ऐश्वर्यपूर्ण वृक्ष महादेव को हमेशा प्रिय है। भगवान शिव की पूजा के लिए हे वृक्ष में तुम्हारे पत्र तोड़ता हूं।

कब न तोड़ें बिल्व कि पत्तियां?

- विशेष दिन या विशेष पर्वो के अवसर पर बिल्व के पेड़ से पत्तियां तोड़ना निषेध हैं।
- शास्त्रों के अनुसार बेल कि पत्तियां इन दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए-
- बेल कि पत्तियां सोमवार के दिन नहीं तोड़ना चाहिए।
- बेल कि पत्तियां चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या की तिथियों को नहीं तोड़ना चाहिए।
- बेल कि पत्तियां संक्रांति के दिन नहीं तोड़ना चाहिए।

अमारिक्तासु संक्रान्त्यामष्टम्यामिन्दुवासरे ।
बिल्वपत्रं न च छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकं व्रजेत ॥ (लिंगपुराण)

भावार्थ: अमावस्या, संक्रान्ति के समय, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी और चतुर्दशी तिथियों तथा सोमवार के दिन बिल्व-पत्र तोड़ना वर्जित है।

चढ़ाया गया पत्र भी पूनः चढ़ा सकते हैं?

शास्त्रों में विशेष दिनों पर बिल्व-पत्र तोडकर चढ़ाने से मना किया गया हैं तो यह भी कहा गया है कि इन दिनों में

चढ़ाया गया बिल्व-पत्र धोकर पुन :चढ़ा सकते हैं।

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनः पुनः।
शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि चित्॥ (स्कन्दपुराण) और (आचारेन्दु)

भावार्थ: अगर भगवान शिव को अर्पित करने के लिए नूतन बिल्व-पत्र न हो तो चढ़ाए गए पत्तों को बार-बार धोकर चढ़ा सकते हैं।

बेल पत्र चढाने का मंत्र

भगवान शंकर को विल्वपत्र अर्पित करने से मनुष्य कि सर्वकार्य व मनोकामना सिद्ध होती हैं। श्रावण में विल्व पत्र अर्पित करने का विशेष महत्व शास्त्रो में बताया गया हैं।

विल्व पत्र अर्पित करते समय इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए:

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्। त्रिजन्मपापसंहार, विल्वपत्र शिवार्पणम्

भावार्थ: तीन गुण, तीन नेत्र, त्रिशूल धारण करने वाले और तीन जन्मों के पाप को संहार करने वाले हे शिवजी आपको त्रिदल बिल्व पत्र अर्पित करता हूं।

* शिव को बिल्व-पत्र चढ़ाने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

शिव महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

धर्म शास्त्रो में भगवान शिव को जगत पिता बताया गया हैं। क्योकि भगवान शिव सर्वव्यापी एवं पूर्ण ब्रह्म हैं। हिंदू संस्कृति में शिव को मनुष्य के कल्याण का प्रतीक माना जाता हैं। शिव शब्द के उच्चारण या ध्यान मात्र से ही मनुष्य को परम आनंद प्रदान करता हैं। भगवान शिव भारतीय संस्कृति को दर्शन ज्ञान के द्वारा संजीवनी प्रदान करने वाले देव हैं। इसी कारण अनादि काल से भारतीय धर्म साधना में निराकार रूप में होते हुवे भी शिवलिंग के रूप में साकार मूर्ति की पूजा होती हैं। देश-विदेश में भगवान शिव के मंदिर हर छोटे-बडे शहर एवं कस्बो में मोजुद हैं, जो भगवान महादेव की व्यापकता को एवं उनके भक्तो कि आस्था को प्रकट करते हैं।

भगवान शिव एक मात्र एसे देव हैं जिसे भोले भंडारी कहा जाता हैं, भगवान शिव थोडी सी पूजा-अर्चना से ही वह प्रसन्न हो जाते हैं। मानव जाति की उत्पत्ति भी भगवान शिव से मानी जाती हैं। अतः भगवान शिव के स्वरूप को जानना प्रत्येक शिव भक्त के लिए परम आवश्यक हैं। भगवान भोले नाथ ने समुद्र मंथन से निकले हुए समग्र विष को अपने कंठ में धारण कर वह नीलकंठ कहलाये।

शिव उपासना का महत्व

भगवान शिव का सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण तीनों पर एक समान अधिकार हैं। शिवने अपने मस्तक पर चंद्रमा को धारण कर शशि शेखर कहलाये हैं। चंद्रमा से शिव को विशेष स्नेह होने के कारण चंद्र सोमवार का अधिपति हैं इस लिये शिव का प्रिय वार सोमवार हैं। शिव कि पूजा-अर्चना के लिये सोमवार के दिन करने का विशेष महत्व हैं, इस दिन व्रत रखने से या शिव लिंग पर अभिषेक करने से शिवकी विशेष कृपा प्राप्त होती हैं।

सभी सोमवार शिव को प्रिय हैं, परंतु पूरे श्रावण मास के सभी सोमवार को किये गये व्रत-पूजा अर्चना अभिषेक पूरे वर्ष किये गये व्रत के समान फल प्रदान करने वाली होती हैं।

शिव को श्रावण मास इस लिये अधिक प्रिय हैं क्योकि श्रावण मास में वातावरण में जल तत्व कि अधिकता होती हैं एवं चंद्र जलतत्व का अधिपती ग्रह हैं। जो शिव के मस्तक पर सुशोभित हैं।

शिव उपासना के विभिन्न रूप वेदों में वर्णित हैं। शिव मंत्र उपासना में पंचाक्षरी "नम :शिवाय "या "ॐ नम :शिवाय " और महामृत्युंजय इत्यादि मंत्रों के जप का भी श्रावण मास में विशेष महत्व हैं, श्रावण मास में किय गये मंत्र जाप कई गुना अधिक प्रभाव शाली सिद्ध होते देखे गये हैं। जहा शिव पंचाक्षरी मंत्र मनुष्य को समस्त भौतिक सुख साधनो कि प्राप्ति हेतु विशेष लाभकारी हैं, वहीं महामृत्युंजय मंत्र के जप से मनुष्य के सभी प्रकार के मृत्यु भय-रोग-कष्ट-दरिद्रता दूर होकर उसे दीर्घायु की प्राप्ति होती हैं। महामृत्युंजय मंत्र, रूद्राभिषेक आदि का सामुहिक अनुष्ठान करने से अतिवृष्टि, अनावृष्टि एवं महामारी आदि से रक्षा होती हैं एवं अन्य सभी प्रकार के उपद्रवों की शांति होती हैं।

शिवलिंग पूजा का महत्व क्या हैं?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवमहा पुराण के सृष्टिखंड अध्याय १२ श्लोक ८२ से ८६ में ब्रह्मा जी के पुत्र संतकुमार जी वेदव्यास जी को उपदेश देते हुए कहते हैं, हर गृहस्थ मनुष्य को अपने सद्गुरू से विधिवत दीक्षा लेकर पंचदेवों (गणेश, सूर्य, विष्णु, दुर्गा, शिव) की प्रतिमाओं का नित्य पूजन करना चाहिए। क्योंकि शिव ही सबके मूल हैं, इस लिये मूल (शिव) को सींचने से सभी देवता तृत्प हो जाते हैं परन्तु सभी देवताओं को प्रसन्न करने पर भी शिव प्रसन्न नहीं होते। यह रहस्य केवल और केवल सद्गुरू कि शरण में रहने वाले व्यक्ति ही जान सकते हैं।

- सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु ने एक बार सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा के साथ निर्गुण, निराकार शिव से प्रार्थना की, प्रभु आप कैसे प्रसन्न होते हैं। भगवान शिव बोले मुझे प्रसन्न करने के लिए शिवलिंग का पूजन करो। जब किसी प्रकार का संकट या दु:ख हो तो शिवलिंग का पूजन करने से समस्त दु:खों का नाश हो जाता है।(शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- जब देवर्षि नारद ने भगवान श्री विष्णु को शाप दिया और बाद में पश्चाताप किया तब विष्णु ने नारदजी को पश्चाताप के लिए शिवलिंग का पूजन, शिवभक्तों का सत्कार, नित्य शिवशत नाम का जाप आदि उपाय सुझाये। (शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- एक बार सृष्टि रचयिता ब्रह्माजी सभी देवताओं को लेकर क्षीर सागर में श्री विष्णु के पास परम तत्व जानने के लिए पहोच गये। श्री विष्णु ने सभी को शिवलिंग की पूजा करने का सुझाव दिया और विश्वकर्मा को बुलाकर देवताओं के अनुसार अलग-अलग द्रव्य पदार्थ के शिवलिंग बनाकर देने का आदेश देकर सभी को विधिवत पूजा से अवगत करवाया। (शिवमहापुराण सृष्टिखंड)
- ब्रह्मा जी ने देवर्षि नारद को शिवलिंग की पूजा की महिमा का उपदेश देते हुवे कहा। इसी उपदेश से जो ग्रंथ कि रचना हुई वो शिव महापुराण हैं। माता पार्वती के अत्यन्त आग्रह से, जनकल्याण के लिए निर्गुण, निराकार शिव ने सौ करोड़ श्लोकों में शिवमहापुराण की रचना कि। जो चारों वेद और अन्य सभी पुराण शिवमहापुराण की तुलना में नहीं आ सकते। भगवान शिव की आज्ञा पाकर विष्णु के अवतार वेदव्यास जी ने शिवमहापुराण को २४६७२ श्लोकों में संक्षिप्त किया हैं।
- जब पाण्डव वनवास में थे , तब कपट से दुर्योधन पाण्डवों को दुर्वासा ऋषि को भेजकर तथा मूक नामक राक्षस को भेजकर कष्ट देता था। तब पाण्ड़वों ने श्री कृष्ण से दुर्योधन के दुर्व्यवहार से अवगत कराया और उससे छुटकारा पाने का मार्ग पूछा। तब श्री कृष्ण ने पाण्डवों को भगवान शिव की पूजा करने के लिए सलाह दी और कहा मैंने स्वयंने अपने सभी मनोरथों को प्राप्त करने के लिए भगवान शिव की पूजा की हैं और आज भी कर रहा हुं। आप लोग भी करो। वेदव्यासजी ने भी पाण्ड़वों को भगवान शिव की पूजा का उपदेश दिया। हिमालय से लेकर पाण्डव विश्व के हर कोने में जहां भी गये उन सभी स्थानो पर शिवलिंग कि स्थापना कर पूजा अर्चना करने का वर्णन शास्त्रों में मिलता हैं।

शिव महापुराण

सृष्टिखंड अध्याय ११ श्लोक १२ से १५ में शिव पूजा से प्राप्त होने वाले सुखों का वर्णन इस प्रकार हैं:

दरिद्रता, रोग कष्ट, शत्रु पीड़ा एवं चारों प्रकार के पाप तभी तक कष्ट देता है, जब तक भगवान शिव की पूजा नहीं की जाती। महादेव का पूजन कर लेने पर सभी प्रकार के दु:खोका शमन हो जाता हैं। सभी प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं एवं इससे सभी मनोकामनाएं सिद्ध हो जाती हैं।(शिवमहापुराण सृष्टिखंड अध्याय- ११ श्लोक१२ से १५

साक्षात ब्रह्म हैं शिवलिंग

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शिवलिंगकी पूजा-अर्चना अनादिकालसे विश्वव्यापक रही हैं। संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ **ऋग्वेद में लिंग उपासना का उल्लेख मिलता हैं।**

सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः शिवात्मकाः।

भावार्थः भगवान शिव और रुद्र सर्व देवों में विराजमान होने से ब्रह्म के ही पर्यायवाची शब्द हैं। प्रायः सभी सभी शास्त्र एवं पुराणों में शिवलिंग के पूजन का उल्लेख मिलता हैं। हिन्दू शास्त्रों में जहां भी शिव उपासनाका वर्णन किया गया हैं, वहां शिवलिंग की महिमा का गुण-गान अवश्य मिलता हैं।

स्कन्दपुराणमें शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

आकाशं लिङ्गमित्याहुःपृथ्वी तस्यपीठिका।

आलयः सर्वदेवानांलयनाल्लिङ्गमुच्यते॥

भावार्थः आकाश लिंग है और पृथ्वी उसकी पीठिका हैं। इस लिंग में समस्त देवताओं का वास हैं। सम्पूर्ण सृष्टि का इसमें लय हैं, इसीलिए इसे लिंग कहते हैं।

शिवपुराणमें शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

लिङ्गमर्थं हि पुरुषंशिवंगमयतीत्यद:।
शिव-शक्त्योश्च चिह्नस्यमेलनंलिङ्गमुच्यते॥

भावार्थ: शिव-शक्ति के चिह्नोंका सम्मिलित स्वरूप ही शिवलिंग हैं। इस प्रकार लिंग में सृष्टि के जनक की अर्चना होती है।

- लिंग परमपुरुष सदा शिवका बोधक हैं। इस प्रकार यह विदित होता है कि लिंग का प्रथम अर्थ प्रकट करने वाला हुआ, क्योंकि इसी से सृष्टि की उत्पत्ति हुई हैं।
- दूसरा **भावार्थ:** यह प्राणियों का परम कारण और निवास-स्थान हैं।
- तीसरा **भावार्थ:** शिव- शक्ति का लिंग योनि भाव और अृद्धनारीश्वर भाव मूलत:एक ही स्वरुप हैं। सृष्टि के बीज को देने वाले परम लिंग रूप भगवान शिव जब अपनी प्रकृति रूपा शक्ति से आधार-आधेय की भाँति संयुक्त होते हैं, तभी सृष्टि की उत्पत्ति होती है, अन्यथा नहीं।

लिंगपुराण शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

मूले ब्रह्मा तथा मध्येविष्णुस्त्रिभुवनेश्वर:।
रुद्रोपरिमहादेव: प्रणवाख्य:सदाशिव:॥
लिङ्गवेदीमहादेवी लिङ्गसाक्षान्महेश्वर:।
तयो:सम्पूजनान्नित्यंदेवी देवश्चपूजितो॥

भावार्थ: शिव लिंगके मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा शीर्ष में शंकर हैं। प्रणव (ॐ) स्वरूप होने से सदाशिवमहादेव कहलाते हैं। शिवलिंगप्रणव का रूप होने से साक्षात् ब्रह्म ही है। लिंग महेश्वर और उसकी वेदी महादेवी होने से लिगांचर्नके द्वारा शिव-शिक्त दोनों की पूजा स्वत:सम्पन्न हो जाती है। लिंगपुराण में शिव को त्रिदेवमयऔर शिव-शक्ति का संयुक्त स्वरूप होने का उल्लेख किया गया हैं।

भगवान शिव द्वारा शिवलिंग महिमा इस प्रकार की गई है-

लोकं लिङ्गात्मकंज्ञात्वालिङ्गेयोऽर्चयतेहि माम्।
न मेतस्मात्प्रियतर:प्रियोवाविद्यतेक्वचित्॥

भावार्थ: जो भक्त संसार के मूल कारण महाचैतन्यलिंग की अर्चना करता हैं और लोक को लिंगात्मकजानकर लिंग-पूजा में तत्पर रहता हैं, मुझे उससे अधिक प्रिय अन्य कोई मनुष्य नहीं हैं।

कैसे करें शिव का पूजन

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

भगवान शिव का प्रिय- सोमवार, माह की दोनो चतुर्दशी, प्रदोष व्रत, माह श्रावण मास हैं, इस विशेष शुभ अवशरो पर अल्प समय में शिव पूजन का पूर्ण लाभ प्राप्त हो इस लिये शिवपूजन की वर्णित विधि से पूर्ण की जा सकती हैं।

- ❖ उक्त शुभ अवसरो पर प्रातः काल उठकर स्नानादि से निवृत्त होकर त्रिदल वाले सुन्दर-साफ, बिना कटे-फटे पाँच-सात- नौ-ग्यारा यथा शक्ति विषम संख्या में बिल्व पत्र लेने चाहिये। यदि बिल्व पत्र प्राप्त नहो तो अक्षत अर्थात बिना टूटे-फूटे चावल को पूजन में ले सकते हैं।
- ❖ साफ लोटे या किसी अन्य सुंदर पात्र में गंगा जल यदि गंगाजल न हो तो स्वच्छ जल ले सकते हैं।
- ❖ पूजन हेतु अपनी सामर्थ्य के अनुसार अष्टगंध, चन्दन, हल्दी, धूप, दीप, अगरबत्ती इत्यादी सभी आवश्यक सामग्री लेकर किसी भी शिव मंदिर (शिवालय) में करना अधिक लाभ प्रद होता हैं। अन्यथा घर में शिवलिंग स्थापित कर सकते हैं।
- ❖ समस्त सामग्री को किसी स्वच्छ पात्र में रखदें। यदि कोई पात्र उपलब्ध न हो, तो भूमि को लीप-पोतकर स्वच्छ करके निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए समस्त सामग्री भूमी पर रख दें।

मंत्र-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशा।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्मसमारम्भे॥
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विनकर्तारस्ते नष्टन्तु शिवाज्ञया।

उक्त विधान के पश्चयात यदि शिवलिंग को स्वच्छ जल से धोएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

गंगा सिन्धुश्य कावेरी यमुना च सरस्वती।
रेवा महानदी गोदा अस्मिन् जले सन्निधौ कुरु।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर अष्टगंध, चन्दन इत्यादि द्रव्य चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ भूः भुर्वः स्वः क्क द्रव्य त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टि वर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामुतः।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर अक्षत चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठाया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ।।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर पुष्प चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।

उक्त विधान के पश्चयात भगवान को धूप अर्पण करें तथा भगवान को बिल्वपत्र अर्पण करें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

काशीवास निवासिनाम् कालभैरव पूजनम्।

कोटिकन्या महादानम् एक बिल्वं समर्पणम्।

दर्षनं बिल्वपत्रस्य स्पर्षनं पापनाशनम्।

अघोर पाप संहार एकबिल्वं शिवार्पणम।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।

त्रिजन्मपाप संहारं एकबिल्वं शिवार्पणम।

उक्त विधान के पश्चयात शिवलिंग के ऊपर गंगा जल या शुद्ध जल चढ़ाएँ और निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

मंत्र-

गंगोत्तरी वेग बलात् समुद्धृतम् सुवर्ण पात्रेण हिमान्षु शीतलम् सुनिर्मलाम्भो ह्यमृतोपमम् जलम् गृहाण काशीपति भक्त वत्सल

उक्त विधान के पश्चयात भगवान शिव से पूजन में हुई तृटि हेतु निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए क्षमा याचना करें।

अपराधो सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निषम् मया, दासोऽयमिति माम् मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।

आवाहनम् न जानामि न जानामि विसर्जनम् पूजाम् चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।

मन्त्रहीनम् क्रियाहीनम् भक्तिहीनम् सुरेश्वर, यत्पूजितम् मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे।

बिना मंत्र पढ़े भी उक्त समस्त सामग्री भगवान शिव को पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से अर्पित की जा सकती है।

व्यक्ति के अंतर मन में केवल विश्वास एवं श्रद्धा होनी चाहिए।

क्योकि भगवान भोलेनाथ के वचन हैं:

न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भभक्तः श्वपचोऽपि यः।

तस्मै देयम् ततो ग्राह्यम् स च पूज्यो यथा ह्यहम्॥

पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम् यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

तस्याहम् न प्रणस्यामि स च मे न प्रणस्यति॥

अर्थातः जो भक्तिभाव से बिना किसी वेद मंत्र के उच्चारण किए मात्र पत्र, पुष्प, फल अथवा जल समर्पित करता हैं उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह भी मेरी दृष्टि से कभी ओझल नहीं होता हैं।

॥दारिद्र्य दहन शिवस्तोत्रं॥

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय कणामृताय शशिशेखरधारणाय।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥

चर्मम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मंझीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥४॥

पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥५॥

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥६॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥७॥

मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य दुःखदहनाय नमः शिवाय॥८॥

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणं। सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात्॥९॥
॥इति वसिष्ठ विरचितं दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

फल: एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जो व्यक्ति श्रद्धा भाव से तीनोकाल सुबह, संध्या एवं रात्री के समय दारिद्र्य दहन शिवस्तोत्रं का पाठ करते उनके दुख एवं सर्व रोग का निवारण होकर उसे, संपत्ति एवं संतान लाभ प्राप्त होता हैं।

मकर : गंगा जल या दही के साथ में काले तिल, सफेद चंदन, शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल),सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को अभिषेक गंगा जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

कुंभ : गंगा जल या दही के साथ में काले तिल, सफेद चंदन, शक्कर(मिश्री), अक्षत(चांवल),सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को अभिषेक गंगा जल या दही के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

मीन : जल या दूध के साथ में हल्दी , केसर, चावल, घी, शहद, पीले फुल, पीली सरसों, नागकेसर सब मिला कर या किसी भी एक वस्तु को जल/ दूध के साथ मिला कर अभिषेक करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

महाशिव रात्रि एवं श्रावण मास मे सोमवार के दिन कोइ भी व्यक्ति जिसे अपनी राशि पता नहीं हैं वह व्यक्ति चाहे तो पंचामृत से शिवलिंग का अभिषेक कर सकते हैं

शिवपच्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न काराय नम: शिवाय॥१॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय। तस्मै म काराय नम: शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय। श्री

नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शि काराय नम: शिवाय ॥३॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै व काराय नम: शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै य काराय नम: शिवाय॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं य: पठेच्छिवसन्निधौ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

अर्थ :- जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अङ्गराज (अनुलेपन) है, दिशाएँ ही जिनका वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न हैं) उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर न कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥१॥ गङ्गाजल और चन्दन से जिनकी अर्चना हुई है, मन्दार-पुष्प तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथगणों के स्वामी महेश्वर म कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥२॥ जो कल्याणस्वरूप हैं, पार्वती जी के मुखकमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिए जो सूर्य स्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिह्न है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ शि कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥३॥ वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन व कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥४॥ जिन्होंने यक्षरूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव य कारस्वरूप शिव को नमस्कार है॥५॥ जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता और वहां शिवजी के साथ आनन्दित होता है॥६॥

पुराण को पढ़ने की इच्छा की है- अथवा इसके अध्ययन को अभीष्ट साधन माना है। इसी तरह इसका प्रेमपूर्वक श्रवण भी सम्पूर्ण मनोवंछित फलों के देनेवाला है। भगवान् शिव के इस पुराण को सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है तथा इस जीवन में बड़े-बड़े उत्कृष्ट भोगों का उपभोग करके अन्त में शिवलोक को प्राप्त कर लेता है।

॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम् ॥

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥१॥
श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम् ॥२॥
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम् ॥ ३॥
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैवमान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ४॥
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ ५॥
याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ६॥
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैर्यक्ष महोरगाढ्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ७॥
सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे ।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ ८॥
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥९॥
यं डाकिनिशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च ।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्दं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥ १०॥
सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ११॥
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणम् प्रपद्ये ॥ १२॥
ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण ।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च ॥

॥ इति द्वादश ज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

सोमवार व्रत कथा

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

विदित हो कि कैलाश के उत्तर में निषध पर्वत के शिखर पर स्वयं प्रभा नामक एक विशाल पुरी थी जिसमें धन वाह्न नामक एक गणविराज रहते थे। समय अनुसार उन्हे आठ पुत्र और अंत में एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम गंधर्व सेना था। वह अत्यन्त रूपवती थी और उसे अपने रूप का बहुत अभिमान था। वह कहा करती थी कि संसार में कोई गंधर्व या देवी मेरे रूप के करोड़वे अंश के समान भी नहीं है। एक दिन एक आकाशचरीगण नायक ने उसकी बात सुनी तो उसे शाप दे दिया 'तुम रूप के अभिमान' में गंधर्वो और देवताओं का अपमान करती हो अत :तुम्हारे शरीर में कोढ़ हो जायेगा। शाप सुन कर कन्या भयभीत हो गयी और दया की भीख मांगने लगी। उसकी बिनती सुन कर गणनायक को दया आ गयी और उन्होंने कहा हिमालय के वन में गोश्रृंग नाम के श्रेष्ठ मुनी रहते है। वे तुम्हारा उपकार करेगे। ऐसा कह कर गणनायक चला गया। गंधर्व सेना व छोड़ कर अपने पिता के पास आई और अपने कुष्ट होने के कारण तथा उससे मुक्ति का उपाय बताया। माता पिता उसे तत्क्षण लेकर हिमालय पर्वत पर गए और गोश्रृंग का दर्शन करके स्तुति करने लगे। मुनि के पूछने पर उन्होंने कहा कि मेरे बेटी को कोढ़ हो गया है कृपया इसकी शांति का कोई उपाय बताएं।

मुनि ने कहा कि समुद्र के समीप भगवान सोमनाथ विराजमान है। वहां जाकर सोमवार व्रत द्वारा भगवान शंकर की आराधना करो। ऐसा करने से पुत्री का रोग दूर हो जायेगा। मुनि के वचन सुन कर धनवाह्न अपनी पुत्री के साथ प्रभास क्षेत्र में जाकर सोमनाथ के दर्शन किए और पूरे विधि विधान के साथ सोमवार व्रज करते हुए भगवान शंकर की आराधना किए उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शंकर भगवान ने उस कन्या के रोगों को दूर किया और उन्हे अपनी भक्ति भी दान में दिया। आज भी लोग शिव जी को प्रसन्न करने के लिए इस व्रत को पूरी निष्ठा एवं भक्ति के साथ करते है और शिव कि कृपा को प्राप्त करते है।

॥ शिवषडक्षर स्तोत्रम् ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥१॥
नमंति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।
नरा नमंति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥२॥
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः ॥३॥
शिवं शांतं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥४॥
वाह्नं वृषभो यस्य वासुकिः कंठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं वेदं वकाराय नमो नमः ॥५॥
यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥६॥
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥७॥

॥ इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे षडक्षरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

शिव मंत्र

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शंकर भगवान की महिमा का वर्णन हिंदू धर्म शास्त्रो में कल्याणकारी देव के रूपमे किया गया हैं। क्योकि शिवजी सिफ मनुष्य मात्र का कल्याण नहीं करते, देवता और दानवो का भी कल्याण करते हैं।

इसी लिये शिवजी एसे देव हैं, जो तीनो में पूजनिय हैं। इसी लिये उन्हे देवो के भी देव महादेव के नाम से जाना जाता हैं, एवं भगवान शिव की कृपा प्राप्ति हेतु तीनो लोक मे उनकी पूजा उपासना की जाती हैं।

शिव में आस्था रखने वालो का मत हैं की महादेव ने कभी उन्हें निराश नहीं किया, शिव से जो मांगा हैं उनकी कृपा से वह पाया हैं। क्योकी शिव जी भोले भंडारी हैं, भोले अपने भक्तो के समस्त संकट दूर कर उन्हें सुख समृद्धि एवं मोक्ष प्रदान करते हैं। शंकर जी एक एसे देव हैं जो अत्यन्त शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

शिवपुराण के अनुसार भगवान शंकर का सर्वाधिक प्रभावी एवं सरल मंत्र हैं पंचाक्षरी मंत्र।

पंचाक्षरी मंत्र-: नम :शिवाय

पंचाक्षरी मंत्र को सभी वर्गो के लोगों के लिए अत्यन्त फलदायीहैं। इस लिए कोई भी व्यक्ति इस पंचाक्षरीमंत्र को नित्य श्रद्धा पूर्वकजप कर सरलता से महादेव की कृपा प्राप्त सकता है।

पंचाक्षरी मंत्र के पांच अक्षरों में पंचानन (पांच मुख वाले) महादेव की सभी शक्तियां समायी हुई हैं।

पंचाक्षरी मंत्र के जाप करने से बडे से बडे संकट का निवारण सरलता से हो जाता हैं।

शिव के अन्य कल्याणकारी मंत्र

भगवान शिव कि शीघ्र कृपा प्राप्ति एवं तीव्र कामना सिद्धि हेतु तेजस्वी मंत्र के अनुभूत प्रयोग। इस मंत्रो के माध्यम से व्यक्ति अपनी समस्त मनोकामनाओं कि पूर्ति कर व्यक्ति दिन-प्रतिदिन सफलता कि और अग्रस्त होकर अपने जीवन में सुख समृद्धि एवं शांति सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान शिव के मंत्रो के जाप हेतु रुद्राक्ष की माला उत्तम होती हैं। जाप हेतु पूर्व या उत्तर दिशा का चुनाव करें, एवं उत्तर-पूर्व में मुख कर जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती हैं।

1. नमः शिवाय।
2. ॐ नमः शिवाय।
3. प्रौं ह्रीं ठः।
4. ऊर्ध्व भू फट्।
5. इं क्षं मं औं अं।
6. नमो नीलकण्ठाय।
7. ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय।
8. ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्त्तये मह्यं मेधा प्रयच्छ स्वाहा।

शिव पंचदेवों में देवो के देव महादेव हैं।

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रीय मतसे

शास्त्रोमें पंचदेवों की उपासना करने का विधान हैं।

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

(शब्दकल्पद्रुम)

भावार्थ: - पंचदेवों कि उपासना का ब्रह्मांड के पंचभूतों के साथ संबंध है। पंचभूत पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से बनते हैं। और पंचभूत के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव ये पंचदेव भी पूजनीय हैं। हर एक तत्त्व का हर एक देवता स्वामी हैं-

आकाशस्याधिपो विष्णुरग्नेश्चैव महेश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः।।

भावार्थ:- क्रम इस प्रकार हैं महाभूत अधिपति

1. क्षिति (पृथ्वी) शिव
2. अप् (जल) गणेश
3. तेज (अग्नि) शक्ति (महेश्वरी)
4. मरूत् (वायु) सूर्य (अग्नि)
5. व्योम (आकाश) विष्णु

भगवान् श्रीशिव पृथ्वी तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शिवलिंग के रुप में पार्थिव-पूजा का विधान हैं। भगवान् विष्णु के आकाश तत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति करने का विधान हैं। भगवती देवी के अग्नि तत्त्व का अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवनादि के द्वारा पूजा करने का विधान हैं। श्रीगणेश के जलतत्त्व के अधिपति होने के कारण उनकी सर्वप्रथम पूजा करने का विधान हैं, क्योंकि ब्रह्मांद में सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाले जीव तत्त्व 'जल' का अधिपति होने के कारण गणेशजी ही प्रथम पूज्य के अधिकारी होते हैं।

जब शिवजी नें ब्रह्माजी की आलोचना की?

संकलन गुरुत्व कार्यालय

शास्त्रो में उल्लेखित कथा के अनुशार एक बार ब्रह्माजी और विष्णुजी में विवाद छिड़ गया कि दोनों देवो में में श्रेष्ठ कौन हैं। एक तरफ सृष्टि के रचयिता होने के कारण ब्रह्माजी स्वयंको श्रेष्ठ होने का चूनाव कर रहे थे, दूसरी तरफ भगवान विष्णु पूरी सृष्टि के पालन कर्ता होने के कारण स्वयं को श्रेष्ठ बता रहे थे।

उसी समय वहां एक विराट ज्योतिर्मय लिंग प्रकट हुआ। ज्योतिर्मय लिंग को देख कर दोनों देवताओं के विचार-विमर्श से यह निश्चय किया कि दोनो में से जो इस ज्योतिर्मय लिंग के छोर का सबसे पहले पता लगायेगा उसे ही श्रेष्ठ माना जायेगा। इस लिये दोनों देवता विपरीत दिशा में ज्योतिर्मय लिंग का छोर ढूंढने निकल गये।

ज्योतिर्मय लिंग का छोर नहीं मिलने के कारण विष्णुजी वापस लौट आये। ब्रह्मा जी भी ज्योतिर्मय लिंग का छोर ढूंढ ने में असफल रहे लेकिन ब्रह्माजी ने वापस आकर विष्णुजी से कहा कि वे छोर तक पहुँच गये थे। ब्रह्माजी ने केतकी के फूल को ज्योतिर्मय लिंग तक पहुँच ने की बात का साक्षी बताया। ब्रह्मा जी के असत्य कहते ही स्वयं शिवजी वहाँ प्रकट हुए और उन्होंने ब्रह्मा जी की आलोचना की।

शिवजी की उपस्थिती से दोनों देवताओं ने भगवान शिव की स्तुति की तब शिव जी बोले कि मैं ही सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, धरता और स्वामी हूँ। मैंने ही आप दोनों को उत्पन्न किया हैं। तब शिवजी ने क्रोधीत हो कर केतकी पुष्प को झूठी साक्षी देने के लिए दंडित करते हुए कहा कि यह पुष्प मेरी पूजा में प्रयुक्त नहीं होगा। तब से लेकर भगवान शिव के पूजन में केतकी पुष्प का प्रयोग नहीं किया जाता।

जब शिवजी ने चंद्रमा को शाप मुक्त किया

संकलन गुरुत्व कार्यालय

पुराणो में उल्लेखित कथा के अनुशार

शिव पुराण की कथा अनुशार प्राचीन काल में एक दक्ष नामके राजा थे दक्षकी सत्ताईस कन्याएं थीं। दक्ष ने अश्विनी समेत अपनी सभी कन्याओं का विवाह चंद्रमा से किये थे। जहां एक ओर चंद्रमा सत्ताईस कन्याओं के पति बन के बेहद खुश थे। वहीं दूसरी ओर दक्ष की कन्याएं चंद्रमा की पत्नीयां भी चंद्रमा को वर के रूप में पाकर अति प्रसन्न थीं। लेकिन चंद्रमा की पत्नीओं की ये प्रसन्नता ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रह सकी। क्योंकि कुछ दिनों के बाद चंद्रमा उनमें से एक रोहिणी पर ज्यादा आकर्षित व मोहित हो गए।

इस बात का जब राजा दक्ष को पता चली तो वो चंद्रमा को समझाने गए। चंद्रमा ने उनकी बातें सुनीं, लेकिन कुछ दिनों के बाद फिर रोहिणी पर उनकी आसक्ति और तेज हो गई। जब राजा दक्ष को यह बात पता चली तो वो गुस्से में चंद्रमा के पास गए। दक्षने कहा कि मैं तुमको पहले भी समझा चुका हूं। लेकिन लगता है तुम पर मेरी बात का असर नहीं होने वाला। इसलिए मैं तुम्हें शाप देता हूं कि तुम क्षय रोग के पीडित हो जाओ।

राजा दक्ष के इस श्राप के तुरंत बाद चंद्रमा क्षय रोग से ग्रस्त होकर धूमिल होती गई। उनकी रौशनी जाती रही। यह देखकर समस्त देवता और ऋषि-मुनि बहुत परेशान हुए। इसके बाद सारे ऋषि मुनि और देवता इंद्र के साथ भगवान ब्रह्माजी के पास में गए। फिर ब्रह्माजी ने उन्हें एक उपाय बताया।

उपाय के अनुशार चंद्रमा को भारत के पश्चिम में सौराष्ट्र (गुजरात) में स्थित सोमनाथ जा कर भगवान शिव का तप करने को कहा, ब्रह्मा जी के अनुशार इसी स्थान पर शिवजी प्रत्यक्ष रुप से प्रकट होने के बाद वो दक्ष के शाप से चंद्रमा मुक्त हो सकते थे।

ब्रह्मा से उपाय पाकर चंद्रमा सोमनाथ गए। भगवान शिव के महामृत्युंजय मंत्र से विधि-वत पूजन किया। चंद्रमा छह महीने तक शिव की कठोर तपस्या करते रहे। चंद्रमा की कठोर तपस्या से प्रशन्न हो भगवान शिव ने प्रत्यक्ष दर्शन दिये और चंद्रमा से वर मांगने को कहा।

चंद्रमा ने वर मांगा कि हे भगवन अगर आप मेरी आराधना से प्रशन्न हैं तो मुझे इस क्षय रोग से मुक्ति दीजिए और मेरे सारे अपराधों को क्षमा कर दीजिए।

भगवान शिव ने कहा कि तुम्हें दक्षने शाप दिया है वो दक्ष कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारे लिए कु उपाय करूंगा जरूर। इसके बाद भगवान शिव एक उपाय खोज निकाला, और चंद्रमा से कहां, कि मैं तुम्हारे लिए ये कर सकता हूं एक माह में जो दो पक्ष होते हैं, उसमें से एक पक्ष में तुम निखरते जाओगे अर्थात तुम्हारा तेज फेलेगा। लेकिन दूसरे पक्ष में तुम क्षीण भी होओगे अर्थात तुम्हारा तेज कम होता जयेगा।

यह पौराणिक मान्यता है जिस के फल स्वरुप चंद्रमा के शुक्ल और कृष्ण पक्ष का जिसमें एक पक्ष में वो बढ़ते हैं और दूसरे में वो घटते जाते हैं। भगवान शिव के इस वर से भी चंद्रमा काफी खुश हो गए। चंद्रमाने भगवान शिव का आभार प्रकट किया उनकी स्तुति की।

शिवाष्टकं

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजाम् ।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ १॥

गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणेशाधिपालम् ।
जटाजूटभङ्गोत्तरङ्गैर्विशालं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ २॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डल भस्मभूषधरंतम् ।
अनादिह्यपारं महामोहहारं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ३॥

तटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदासुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं महेशं सुरेशं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४॥

गिरिन्द्रात्मजासंग्रहीतार्धदेहं गिरौ संस्थितं सर्वदा सन्नगेहम् ।
परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्ध्यमानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ६॥

शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्द पात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ७॥

हरं सर्पहारं चिता भूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वदन्तं मनोजं दहन्तं शिवं
शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ ८॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणे पठेत् सर्वदा भर्गभावानुरक्तः ।
स पुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं
समासाद्य मोक्षं प्रयाति ॥९॥

॥ इति शिवाष्टकम् संपूर्णम्॥

॥वैद्यनाथाष्टकम्॥

श्रीरामसौमित्रिजटायुवेद षडाननादित्य कुजार्चिताय।
श्रीनीलकण्ठाय दयामयाय श्रीवैद्यनाथाय नमःशिवाय॥१॥

गङ्गाप्रवाहेन्दु जटाधराय त्रिलोचनाय स्मर कालहन्त्रे।
समस्त देवैरभिपूजिताय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥२॥

भक्तःप्रियाय त्रिपुरान्तकाय पिनाकिने दुष्टहराय नित्यम्।
प्रत्यक्षलीलाय मनुष्यलोके श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥३॥

प्रभूतवातादि समस्तरोग प्रनाशकर्त्रे मुनिवन्दिताय।
प्रभाकरेन्द्वग्नि विलोचनाय श्रीवैद्यनाथाय नमः
शिवाय॥४॥

वाक् श्रोत्र नेत्राङ्घ्रि विहीनजन्तोः वाक्श्रोत्रनेत्रांघ्रिसुखप्रदाय।
कुष्ठादिसर्वोन्नतरोगहन्त्रे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥५॥

वेदान्तवेद्याय जगन्मयाय योगीश्वरद्येय पदाम्बुजाय।
त्रिमूर्तिरूपाय सहस्रनाम्ने श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥६॥

स्वतीर्थमृद्भस्मभृताङ्गभाजां पिशाचदुःखार्तिभयापहाय।
आत्मस्वरूपाय शरीरभाजां श्रीवैद्यनाथाय नमः
शिवाय॥७॥

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय स्रक्गन्ध
भस्माद्यभिशोभिताय।
सुपुत्रदारादि सुभाग्यदाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय॥८॥

वालाम्बिकेश वैद्येश भवरोगहरेति च।
जपेन्नामत्रयं नित्यं महारोगनिवारणम्॥९॥

॥इति श्री वैद्यनाथाष्टकम्॥

मृतसञ्जीवन कवचम्

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना कवचं प्रजपेत् सदा ॥१॥
सारात् सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम् ।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनामकम् ॥२॥
समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभं।
श्रुत्वैतद्दिव्यकवचं रहस्यं कुरु सर्वदा ॥३॥
वराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः ।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा ॥४॥

दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः ।
सदाशिवोऽग्निरूपी मामाग्नेय्यां पातु सर्वदा ॥५॥
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः ।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदाऽवतु ॥६॥
खड्गभयकरो धीरो रक्षोगणनिषेवितः ।
रक्षोरूपी महेशो मां नैरृत्यां सर्वदाऽवतु ॥७॥
पाशाभयभुजः सर्वरत्नाकरनिषेवितः ।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ॥८॥

गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः ।
वायव्यां मारुतात्मा मां शङ्करः पातु सर्वदा ॥९॥
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः ।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शङ्करः प्रभुः ॥१०॥
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः ।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः ॥११॥
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु ।
शिरो मे शङ्करः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः ॥१२॥

भ्रूमध्यं सर्वलोकेशस्त्रिनेत्रो लोचनेऽवतु ।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः ॥१३॥
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिर्दन्तान्मे गिरिशोऽवतु ॥१४॥
मृत्यञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः ।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ॥१५॥
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वौ मे पार्वतीपतिः ॥१६॥

कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः ।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः ॥१७॥
जानुनी मे जगद्धर्ता जङ्घे मे जगदम्बिका ।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः ॥१८॥
गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान्मम ।
मृर्त्युञ्जयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः ॥१९॥
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः ।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ॥२०॥

मृतसञ्जीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम् ।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम् ॥२१॥
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं श्रावयेत्सुसमाहितः ।
स कालमृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते ॥२२॥
हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन ॥२३॥
कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा ।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ॥२४॥

युद्धारम्भे पठित्वेदमष्टाविंशतिवारकम् ।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते ॥२५॥
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै ।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा ॥२६॥
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्कवचं शुभम् ।
अक्षय्यं लभते सौख्यमिह लोके परत्र च ॥२७॥
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडषवार्षिकः ॥२८॥

विचरत्यखिलाँल्लोकान्प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान् ।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम् ॥२९॥
मृतसञ्जीवनं नाम्ना दैवतैरपिदुर्लभम् ॥
॥इति मृतसञ्जीवनकवचं सम्पूर्णम् ॥

मृतसञ्जीवन कवचं का नियमित शुद्ध चित्त से पाठ करने से व्यक्ति को जीवन में विभिन्न प्रकार के कष्ट से रक्षण होता एवं अकाल मृत्यु का भय दूर होता हैं।।

मृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीभैरव उवाच।

अधुना शृणु देवेशि सहस्राख्यस्तवोत्तमम्।

महामृत्युञ्जयस्यास्य सारात् सारोत्तमोत्तमम् ॥

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जसहस्रनामस्तोत्र मन्त्रस्य,

भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीमहामृत्युञ्जयो देवता,

ॐ बीजं, जुं शक्तिः, सः कीलकं, पुरुषार्थसिद्धये

सहस्रनाम पाठे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

उद्यच्चन्द्रसमानदीप्तिममृतानन्दैकहेतुं शिवं

ॐजुंसःभुवनैकसृष्टिप्रलयोद्भूत्येकरक्षाकरम्।

श्रीमत्तारदशार्णमण्डिततनुं त्र्यक्षं द्विबाहुं परं

श्रीमृत्युञ्जयमीड्यविक्रमगुणैः पूर्णं हृदब्जे भजे ॥

ॐजुंसःहौं महादेवो मन्त्रज्ञो मानदायकः।

मानी मनोरमाङ्गश्च मनस्वी मानवर्धनः ॥१॥

मायाकर्ता मल्लरूपो मल्लो मारान्तको मुनिः।

महेश्वरो महामान्यो मन्त्री मन्त्रिजनप्रियः ॥२॥

मारुतो मरुतां श्रेष्ठो मासिकः पक्षिकोऽमृतः।

मातङ्गको मत्तचित्तो मत्तचिन्मत्तभावनः ॥३॥

मानवेष्टप्रदो मेषो मेनकापतिवल्लभः।

मानकायो मधुस्तेयी मारयुक्तो जितेन्द्रियः ॥४॥

जयो विजयदो जेता जयेशो जयवल्लभः।

डामरेशो विरूपाक्षो विश्वभोक्ता विभावसुः ॥५॥

विश्वेशो विश्वनाथश्च विश्वसूर्विश्वनायकः।

विनेता विनयी वादी वान्तदो वाक्प्रदो वटुः ॥६॥

स्थूलः सूक्ष्मोऽचलो लोलो लोलजिह्वः करालकः।

विराधेयो विरागीनो विलासी लास्यलालसः ॥७॥

लोलाक्षो लोलधीर्धर्मी धनदो धनदार्चितः।

धनी ध्येयोऽप्यध्येयश्च धर्म्यो धर्ममयो दयः ॥८॥

दयावान् देवजनको देवसेव्यो दयापतिः।

डुलिचक्षुर्दरीवासो दम्भी देवमयात्मकः ॥९॥

कुरूपः कीर्तिदः कान्तः क्लीवोऽक्लीवात्मकः कुजः।

बुधो विद्यामयः कामी कामकालान्धकान्तकः ॥१०॥

जीवो जीवप्रदः शुक्रः शुद्धः शर्मप्रदोऽनघः।

शनैश्चरो वेगगतिर्वाचालो राहुरव्ययः ॥११॥

केतुः कारापतिः कालः सूर्योऽमितपराक्रमः।

चन्द्रो रुद्रपतिः भास्वान् भाग्यदो भर्गरूपभृत् ॥१२॥

क्रूरो धूर्तो वियोगी च सङ्गी गङ्गाधरो गजः।

गजाननप्रियो गीतो गानी स्नानार्चनप्रियः ॥१३॥

परमः पीवराङ्गश्च पार्वतीवल्लभो महान्।

परात्मको विराड्धौम्यः वानरोऽमितकर्मकृत् ॥१४॥

चिदानन्दी चारुरूपो गारुडो गरुडप्रियः।

नन्दीश्वरो नयो नागो नागालङ्कारमण्डितः ॥१५॥

नागहारो महानागो गोधरो गोपतिस्तपः।

त्रिलोचनस्त्रिलोकेशस्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः ॥१६॥

त्रिधामयो लोकमयो लोकैकव्यसनापहः।

व्यसनी तोषितः शम्भुस्त्रिधारूपस्त्रिवर्णभाक् ॥१७॥

त्रिज्योतिस्त्रिपुरीनाथस्त्रिधाशान्तस्त्रिधागतिः।

त्रिधागुणी विश्वकर्ता विश्वभर्ताऽऽधिपूरुषः ॥१८॥

उमेशो वासुकिर्वीरो वैनतेयो विचारकृत्।

विवेकाक्षो विशालाक्षोऽविधिर्विधिरनुत्तमः ॥१९॥

विद्यानिधिः सरोजाक्षो निःस्मरः स्मरनाशनः।

स्मृतिमान् स्मृतिदः स्मार्तो ब्रह्मा ब्रह्मविदां वरः ॥२०॥

ब्राह्मव्रती ब्रह्मचारी चतुरश्चतुराननः।

चलाचलोऽचलगतिर्वेगी वीराधिपो वरः ॥२१॥

सर्ववामः सर्वगतिः सर्वमान्यः सनातनः।

सर्वव्यापी सर्वरूपः सागरश्च समेश्वरः ॥२२॥

समनेत्रः समद्युतिः समकायः सरोवरः।
सरस्वान् सत्यवाक् सत्यः सत्यरूपः सुधीः सुखी ॥२३॥
सुराट् सत्यः सत्यमती रुद्रो रौद्रवपुर्वसुः।
वसुमान् वसुधानाथो वसुरूपो वसुप्रदः ॥२४॥
ईशानः सर्वदेवानामीशानः सर्वबोधिनाम्।
ईशोऽवशेषोऽवयवी शेषशायी श्रियः पतिः ॥२५॥

इन्द्रश्चन्द्रावतंसी च चराचरजगत्स्थितिः।
स्थिरः स्थाणुरणुः पीनः पीनवक्षाः परात्परः ॥२६॥
पीनरूपो जटाधारी जटाजूटसमाकुलः।
पशुरूपः पशुपतिः पशुज्ञानी पयोनिधिः ॥२७॥
वेद्यो वैद्यो वेदमयो विधिज्ञो विधिमान् मृडः।
शूली शुभङ्करः शोभ्यः शुभकर्ता शचीपतिः ॥२८॥
शशाङ्कधवलः स्वामी वज्री शङ्खी गदाधरः।
चतुर्भुजश्चाष्टभुजः सहस्रभुजमण्डितः ॥२९॥
स्रुवहस्तो दीर्घकेशो दीर्घो दम्भविवर्जितः।
देवो महोदधिर्दिव्यो दिव्यकीर्तिर्दिवाकरः ॥३०॥

उग्ररूप उग्रपतिरुग्रवक्षास्तपोमयः।
तपस्वी जटिलस्तापी तापहा तापवर्जितः ॥३१॥
हविर्हरो हयपतिर्हयदो हरिमण्डितः।
हरिवाही महौजस्को नित्यो नित्यात्मकोऽनलः ॥३२॥
सम्मानी संसृतिर्हारी सर्गी सन्निधिरन्वयः।
विद्याधरो विमानी च वैमानिकवरप्रदः ॥३३॥
वाचस्पतिर्वसासारो वामाचारी बलन्धरः।
वाग्भवो वासवो वायुर्वासनाबीजमण्डितः ॥३४॥
वासी कोलशृतिर्दक्षो दक्षयज्ञविनाशनः।
दाक्षो दौर्भाग्यहा दैत्यमर्दनो भोगवर्धनः ॥३५॥

भोगी रोगहरो हेयो हारी हरिविभूषणः।
बहुरूपो बहुमतिर्बहुवित्तो विचक्षणः ॥३६॥
नृत्तकृच्चित्तसन्तोषो नृत्तगीतविशारदः।
शरद्वर्णविभूषाढ्यो गलदग्धोऽघनाशनः ॥३७॥

नागी नागमयोऽनन्तोऽनन्तरूपः पिनाकभृतः।
नटनो हाटकेशानो वरीयांश्च विवर्णभृत् ॥३८॥
झाङ्कारी टङ्कहस्तश्च पाशी शार्ङ्गी शशिप्रभः।
सहस्ररूपो समगुः साधूनामभयप्रदः ॥३९॥
साधुसेव्यः साधुगतिः सेवाफलप्रदो विभुः।
सुमहा मद्यपो मत्तो मत्तमूर्तिः सुमन्तकः ॥४०॥

कीली लीलाकरो लान्तः भवबन्धैकमोचनः।
रोचिष्णुर्विष्णुरच्युतश्चूतनो नूतनो नवः ॥४१॥
न्यग्रोधरूपो भयदो भयहाऽभीतिधारणः।
धरणीधरसेव्यश्च धराधरसुतापतिः ॥४२॥
धराधरोऽन्धकरिपुर्विज्ञानी मोहवर्जितः।
स्थाणुकेशो जटी ग्राम्यो ग्रामारामो रमाप्रियः ॥४३॥
प्रियकृत् प्रियरूपश्च विप्रयोगी प्रतापनः।
प्रभाकरः प्रभादीप्तो मन्युमान् अवनीश्वरः ॥४४॥
तीक्ष्णबाहुस्तीक्ष्णकरस्तीक्ष्णांशुस्तीक्ष्णलोचनः।
तीक्ष्णचित्तस्त्रयीरूपस्त्रयीमूर्तिस्त्रयीतनुः ॥४५॥

हविर्भुग् हविषां ज्योतिर्हालाहलो हलीपतिः।
हविष्मल्लोचनो हालामयो हरितरूपभृत् ॥४६॥
म्रदिमाऽऽम्रमयो वृक्षो हुताशो हुतभुग् गुणी।
गुणज्ञो गरुडो गानतत्परो विक्रमी क्रमी ॥४७॥
क्रमेश्वरः क्रमकरः क्रमिकृत् क्लान्तमानसः।
महातेजा महामारो मोहितो मोहवल्लभः ॥४८॥
महस्वी त्रिदशो बालो बालापतिरघापहः।
बाल्यो रिपुहरो हाही गोविर्गविमतोऽगुणः ॥४९॥
सगुणो वित्तराड् वीर्यो विरोचनो विभावसुः।
मालामयो माधवश्च विकर्तनो विकत्थनः ॥५०॥

मानकृन्मुक्तिदोऽतुल्यो मुख्यः शत्रुभयङ्करः।
हिरण्यरेताः सुभगः सतीनाथः सिरापतिः ॥५१॥
मेढ्री मैनाकभगिनीपतिरुत्तमरूपभृत्।
आदित्यो दितिजेशानो दितिपुत्रक्षयङ्करः ॥५२॥

वसुदेवो महाभाग्यो विश्वावसुर्वसुप्रियः।
समुद्रोऽमिततेजाश्च खगेन्द्रो विशिखी शिखी ॥५३॥
गरुत्मान् वज्रहस्तश्च पौलोमीनाथ ईश्वरः।
यज्ञपेयो वाजपेयः शतक्रतुः शताननः ॥५४॥
प्रतिष्ठस्तीव्रविस्रम्भी गम्भीरो भाववर्धनः।
गायिष्ठो मधुरालापो मधुमत्तश्च माधवः ॥५५॥

मायात्मा भोगिनां त्राता नाकिनामिष्टदायकः।
नाकीन्द्रो जनको जन्यः स्तम्भनो रम्भनाशनः ॥५६॥
शङ्कर ईश्वर ईशः शर्वरीपतिशेखरः।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो वेदाध्यक्षो विचारकः ॥५७॥
भर्गोऽनर्घ्यो नरेशानो नरवाहनसेवितः।
चतुरो भविता भावी भावदो भवभीतिहा ॥५८॥
भूतेशो महितो रामो विरामो रात्रिवल्लभः।
मङ्गलो धरणीपुत्रो धन्यो बुद्धिविवर्धनः ॥५९॥
जयी जीवेश्वरो जारो जाठरो जह्नुतापनः।
जह्नुकन्याधरः कल्पो वत्सरो मासरूपधृत् ॥६०॥

ऋतुरृभूसुताध्यक्षो विहारी विहगाधिपः।
शुक्लाम्बरो नीलकण्ठः शुक्लो भृगुसुतो भगः ॥६१॥
शान्तः शिवप्रदोऽभेयोऽभेदकृच्छान्तकृत् पतिः।
नाथो दान्तो भिक्षुरूपी दातृश्रेष्ठो विशाम्पतिः ॥६२॥
कुमारः क्रोधनः क्रोधी विरोधी विग्रही रसः।
नीरसः सरसः सिद्धो वृषणी वृषघातनः ॥६३॥
पञ्चास्यः षण्मुखश्चैव विमुखः सुमुखीप्रियः।
दुर्मुखो दुर्जयो दुःखी सुखी सुखविलासदः ॥६४॥
पात्री पौत्री पवित्रश्च भूतात्मा पूतनान्तकः।
अक्षरं परमं तत्वं बलवान् बलघातनः ॥६५॥

भल्ली भौलिर्भवाभावो भावाभावविमोचनः।
नारायणो मुक्तकेशो दिग्देवो धर्मनायकः ॥६६॥
कारामोक्षप्रदोऽजेयो महाङ्गः सामगायनः।
तत्सङ्गमो नामकारी चारी स्मरनिसूदनः ॥६७॥

कृष्णः कृष्णाम्बरः स्तुत्यस्तारावर्णस्त्रपाकुलः।
त्रपावान् दुर्गतित्राता दुर्गमो दुर्गघातनः ॥६८॥
महापादो विपादश्च विपदं नाशको नरः।
महाबाहुर्महोरस्को महानन्दप्रदायकः ॥६९॥
महानेत्रो महादाता नानाशास्त्रविचक्षणः।
महामूर्धा महादन्तो महाकर्णो महोरगः ॥७०॥

महाचक्षुर्महानासो महाग्रीवो दिगालयः।
दिग्वासा दितिजेशानो मुण्डी मुण्डाक्षसूत्र भृत् ॥७१॥
श्मशाननिलयोऽरागी महाकटिरनूतनः।
पुराणपुरुषोऽपारः परमात्मा महाकरः ॥७२॥
महालस्यो महाकेशो महोष्ठो मोहनो विराट्।
महामुखो महाजङ्घो मण्डली कुण्डली नटः ॥७३॥
असपत्नः पत्रकरः पात्रहस्तश्च पाटवः।
लालसः सालसः सालः कल्पवृक्षश्च कम्पितः ॥७४॥
कम्पहा कल्पनाहारी महाकेतुः कठोरकः।
अनलः पवनः पाठः पीठस्थः पीठरूपकः ॥७५॥

पाटीनः कुलिशी पीनो मेरुधामा महागुणी।
महातूणीरसंयुक्तो देवदानवदर्पहा ॥७६॥
अथर्वशीर्षः सोम्यास्यः ऋक्सहस्रामितेक्षणः।
यजुःसाममुखो गुह्यो यजुर्वेदविचक्षणः ॥७७॥
याज्ञिको यज्ञरूपश्च यज्ञज्ञो धरणीपतिः।
जङ्गमी भङ्गदो भाषादक्षोऽभिगमदर्शनः ॥७८॥
अगम्यः सुगमः खर्वः खेटी खट्वाननः नयः।
अमोघार्थः सिन्धुपतिः सैन्धवः सानुमध्यगः ॥७९॥
प्रतापी प्रजयी प्रातर्मध्याह्नसायमध्वरः।
त्रिकालज्ञः सुगणकः पुष्करस्थः परोपकृत् ॥८०॥

उपकर्तापहर्ता च घृणी रणजयप्रदः।
धर्मी चर्माम्बरश्चारुरूपश्चारुविशोषणः ॥८१॥
नक्तञ्चरःकालवशी वशी वशिवरोऽवशः।
वश्यो वश्यकरो भस्मशायी भस्मविलेपनः ॥८२॥

भस्माङ्गी मलिनाङ्गश्च मालामण्डितमूर्धजः।
गणकार्यः कुलाचारः सर्वाचारः सखा समः ॥८३॥
सुकुरः गोत्रभिद् गोप्ता भीमरूपो भयानकः।
अरुणश्चैकचिन्त्यश्च त्रिशङ्कुः शङ्कुधारणः ॥८४॥
आश्रमी ब्राह्मणो वज्री क्षत्रियः कार्यहेतुकः।
वैश्यः शूद्रः कपोतस्थः त्वष्टा तुष्टो रुषाकुलः ॥८५॥

रोगी रोगापहः शूरः कपिलः कपिनायकः।
पिनाकी चाष्टमूर्तिश्च क्षितिमान् धृतिमांस्तथा ॥८६॥
जलमूर्तिर्वायुमूर्तिर्हुताशः सोममूर्तिमान्।
सूर्यदेवो यजमान आकाशः परमेश्वरः ॥८७॥
भवहा भवमूर्तिश्च भूतात्मा भूतभावनः।
भवः शर्वस्तथा रुद्रः पशुनाथश्च शङ्करः ॥८८॥
गिरिजो गिरिजानाथो गिरीन्द्रश्च महेश्वरः।
गिरीशः खण्डहस्तश्च महानुग्रो गणेश्वरः ॥८९॥
भीमः कपर्दी भीतिज्ञः खण्डपश्चण्डविक्रमः।
खड्गभृत् खण्डपरशुः कृत्तिवासा विषापहः ॥९०॥

कङ्कालः कलनाकारः श्रीकण्ठो नीललोहितः।
गणेश्वरो गुणी नन्दी धर्मराजो दुरन्तकः ॥९१॥
भृङ्गिरीटी रसासारो दयालू रूपमण्डितः।
अमृतः कालरुद्रश्च कालाग्निः शशिशेखरः ॥९२॥
सद्योजातः सुवर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्।
दुःस्वप्नहृत् प्रसहनो गुणिनादप्रतिष्ठितः ॥९३॥
शुक्लस्त्रिशुक्लः सम्पन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः।
यज्ञरूपो यज्ञमुखो यजमानेष्टदः शुचिः ॥९४॥
धृतिमान् मतिमान् दक्षो दक्षयज्ञविघातकः।
नागहारी भस्मधारी भूतिभूषितविग्रहः ॥९५॥

कपाली कुण्डली भर्गः भक्तार्तिभञ्जनो विभुः।
वृषध्वजो वृषारूढो धर्मवृषविवर्धकः ॥९६॥
महाबलः सर्वतीर्थः सर्वलक्षणलक्षितः।
सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत् ॥९७॥

पवित्रस्त्रिककुन्मन्त्रः कनिष्ठः कृष्णपिङ्गलः।
ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान् ॥९८॥
पद्मगर्भो महागर्भो ब्रह्मगर्भो जलोद्भवः।
देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायण ॥९९॥
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृत्।
गुहप्रियो गणसेव्यः पवित्रः सर्वपावनः ॥१००॥

ललाटाक्षो विश्वदेवो दमनः श्वेतपिङ्गलः।
विमुक्तिर्मुक्तितेजस्को भक्तानां परमा गतिः ॥१०१॥
देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः।
कैलासगिरिवासी च हिमवद्गिरिसंश्रयः ॥१०२॥
नाथपूज्यः सिद्धनृत्यो नवनाथसमर्चितः।
कपर्दी कल्पकृद् रुद्रः सुमना धर्मवत्सलः ॥१०३॥
वृषाकपिः कल्पकर्ता नियतात्मा निराकुलः।
नीलकण्ठो धनाध्यक्षो नाथः प्रमथनायकः ॥१०४॥
अनादिरन्तरहितो भूतिदो भूतिविग्रहः।
सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युगकरो हरिः ॥१०५॥

युगरूपो महारूपो महागीतो महागुणः।
विसर्गो लिङ्गरूपश्च पवित्रः पापनाशनः ॥१०६॥
ईड्यो महेश्वरः शम्भुर्देवसिंहो नरर्षभः।
विबुधोऽग्रवरः सूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः ॥१०७॥
सुयुक्तः शोभनो वज्री देवानां प्रभवोऽव्ययः।
गुहः कान्तो निजसर्गः पवित्रः सर्वपावनः ॥१०८॥
शृङ्गी शृङ्गप्रियो बभ्रू राजराजो निरामयः।
देवासुरगणाध्यक्षो नियमेन्द्रियवर्धनः ॥१०९॥
त्रिपुरान्तकः श्रीकण्ठस्त्रिनेत्रः पञ्चवक्त्रकः।
कालहृत् केवलात्मा च ऋग्यजुःसामवेदवान् ॥११०॥

ईशानः सर्वभूतामीश्वरः सर्वरक्षसाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिस्तथा ॥१११॥
ब्रह्मा शिवः सदानन्दी सदानन्तः सदाशिवः।
मे-अस्तुरूपश्चार्वङ्गो गायत्रीरूपधारणः ॥११२॥

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च।
सर्वतः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥११३॥
वामदेवस्तथा ज्येष्ठः श्रेष्ठः कालः करालकः।
महाकालो भैरवेशो वेशी कलविकरणः ॥११४॥
बलविकरणो बालो बलप्रमथनस्तथा।
सर्वभूतादिदमनो देवदेवो मनोन्मनः ॥११५॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः।
भवे भवे नातिभवे भजस्व मां भवोद्भवः ॥११६॥
भावनो भवनो भाव्यो बलकारी परं पदम्।
परः शिवः परो ध्येयः परं ज्ञानं परात्परः ॥११७॥
पारावारः पलाशी च मांसाशी वैष्णवोत्तमः।
ॐऐंह्रींश्रींह्सौः देवो ॐश्रींह्रौं भैरवोत्तमः ॥११८॥
ॐह्रां नमः शिवायेति मन्त्रो वटुर्वरायुधः।
ॐह्रीं सदाशिवः ॐह्रीं आपदुद्धारणो मनुः ॥११९॥
ॐह्रीं महाकरालास्यः ॐह्रीं बटुकभैरवः।
भगवांस्त्र्यम्बक ॐह्रीं ॐह्रीं चन्द्रार्धशेखरः ॥१२०॥

ॐह्रीं सञ्जटिलो धूम्रो ॐह्रीं त्रिपुरघातनः।
ह्रांह्रींहुं हरिवामाङ्ग ॐह्रींहूंह्रीं त्रिलोचनः ॥१२१॥
ॐ वेदरूपो वेदज्ञ ऋग्यजुःसाममूर्तिमान्।
रुद्रो घोररवोऽघोरो ॐ क्ष्म्यूं अघोरभैरवः ॥१२२॥
ॐजुंसः पीयुषसक्तोऽमृताध्यक्षोऽमृतालसः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥१२३॥
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
ॐह्रौंजुंसः ॐभूर्भुवः स्वः ॐजुंसः मृत्युञ्जयः ॥१२४॥
इदं नाम्नां सहस्रं तु रहस्यं परमाद्भुतम्।
सर्वस्वं नाकिनां देवि जन्तूनां भुवि का कथा ॥१२५॥

तव भक्त्या मयाख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।
गोप्यं सहस्रनामेदं साक्षादमृतरूपकम् ॥१२६॥
यः पठेत् पाठयेद्वापि श्रावयेच्छृणुयात् तथा।
मृत्युञ्जयस्य देवस्य फलं तस्य शिवे शृणु ॥१२७॥

लक्ष्म्या कृष्णो धिया जीवो प्रतापेन दिवाकरः।
तेजसा वह्निदेवस्तु कवित्वे चैव भार्गवः ॥१२८॥
शौर्येण हरिसङ्काशो नीत्या द्रुहिणसन्निभः।
ईश्वरत्वेन देवेशि मत्समः किमतः परम् ॥१२९॥
यः पठेदर्धरात्रे च साधको धैर्यसंयुतः।
पठेत् सहस्रनामेदं सिद्धिमाप्नोति साधकः ॥१३०॥

चतुष्पथे चैकलिङ्गे मरुदेशे वनेऽजने।
श्मशाने प्रान्तरे दुर्गे पाठात् सिद्धिर्न संशयः ॥१३१॥
नौकायां चौरसङ्घे च सङ्कटे प्राणसंक्षये।
यत्र यत्र भये प्राप्ते विषवह्निभयादिषु ॥१३२॥
पठेत् सहस्रनामाशु मुच्यते नात्र संशयः।
भौमावस्यां निशीथे च गत्वा प्रेतालयं सुधीः ॥१३३॥
पठित्वा स भवेद् देवि साक्षादिन्द्रोऽर्चितः सुरैः।
शनौ दर्शदिने देवि निशायां सरितस्तटे ॥१३४॥
पठेन्नामसहस्रं वै जपेदष्टोत्तरं शतम्।
सुदर्शनो भवेदाशु मृत्युञ्जयप्रसादतः ॥१३५॥

दिगम्बरो मुक्तकेशः साधको दशधा पठेत्।
इह लोके भवेद्राजा परे मुक्तिर्भविष्यति ॥१३६॥
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम्।
मन्त्रगर्भं मनुमयं न चाख्येयं दुरात्मने ॥१३७॥
नो दद्यात् परशिष्येभ्यः पुत्रेभ्योऽपि विशेषतः।
रहस्यं मम सर्वस्वं गोप्यं गुप्ततरं कलौ ॥१३८॥
षण्मुखस्यापि नो वाच्यं गोपनीयं तथात्मनः।
दुर्जनाद् रक्षणीयं च पठनीयमहर्निशम् ॥१३९॥

श्रोतव्यं साधकमुखाद्रक्षणीयं स्वपुत्रवत्।

॥इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे श्रीदेवीरहस्ये
मृत्युञ्जयसहस्रनामं सम्पूर्णम् ॥

मृत्युञ्जय अष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ भगवते नमः।
ॐ सदाशिवाय नमः।
ॐ सकलतत्त्वात्मकाय नमः।
ॐ सर्वमन्त्ररूपाय नमः।
ॐ सर्वयन्त्राधिष्ठिताय नमः।
ॐ तन्त्रस्वरूपाय नमः।
ॐ तत्त्वविदूराय नमः।
ॐ ब्रह्मरुद्रावतारिणे नमः।
ॐ नीलकण्ठाय नमः।
ॐ पार्वतीप्रियाय नमः।
ॐ सौम्यसूर्याग्निलोचनाय नमः।
ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः।
ॐ महामणिमकुटधारणाय नमः।
ॐ माणिक्यभूषणाय नमः।
ॐ सृष्टिस्थितिप्रलयकालरौद्रावताराय नमः।
ॐ दक्षाध्वरध्वंसकाय नमः।
ॐ महाकालभेदकाय नमः।
ॐ मूलाधारैकनिलयाय नमः।
ॐ तत्त्वातीताय नमः।
ॐ गंगाधराय नमः।
ॐ सर्वदेवाधिदेवाय नमः।
ॐ वेदान्तसाराय नमः।
ॐ त्रिवर्गसाधनाय नमः।
ॐ अनेककोटिब्रह्माण्डनायकाय नमः।
ॐ अनन्तादिनागकुलभूषणाय नमः।
ॐ प्रणवस्वरूपाय नमः।
ॐ चिदाकाशाय नमः।
ॐ आकाशादिस्वरूपाय नमः।
ॐ ग्रहनक्षत्रमालिने नमः।
ॐ सकलाय नमः।
ॐ कलंकरहिताय नमः।
ॐ सकललोकैककर्त्रे नमः।
ॐ सकललोकैकसंहर्त्रे नमः।
ॐ सकलनिगमगुह्याय नमः।
ॐ सकलवेदान्तपारगाय नमः।

ॐ सकललोकैकवरप्रदाय नमः।
ॐ सकललोकैकशंकराय नमः।
ॐ शशांकशेखराय नमः।
ॐ शाश्वतनिजावासाय नमः।
ॐ निराभासाय नमः।
ॐ निरामयाय नमः।
ॐ निर्लोभाय नमः।
ॐ निर्मोहाय नमः।
ॐ निर्मदाय नमः।
ॐ निश्चिन्ताय नमः।
ॐ निरहंकाराय नमः।
ॐ निराकुलाय नमः।
ॐ निष्कलंकाय नमः।
ॐ निर्गुणाय नमः।
ॐ निष्कामाय नमः।
ॐ निरुपप्लवाय नमः।
ॐ निरवद्याय नमः।
ॐ निरन्तराय नमः।
ॐ निष्कारणाय नमः।
ॐ निरातंकाय नमः।
ॐ निष्प्रपंचाय नमः।
ॐ निस्संगाय नमः।
ॐ निर्द्वन्द्वाय नमः।
ॐ निराधाराय नमः।
ॐ निरोगाय नमः।
ॐ निष्क्रोधाय नमः।
ॐ निर्गमाय नमः।
ॐ निर्भयाय नमः।
ॐ निर्विकल्पाय नमः।
ॐ निर्भेदाय नमः।
ॐ निष्क्रियाय नमः।
ॐ निस्तुलाय नमः।
ॐ निस्संशयाय नमः।
ॐ निरञ्जनाय नमः।
ॐ निरूपविभवाय नमः।
ॐ नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णाय नमः।

ॐ नित्याय नमः।
ॐ शुद्धाय नमः।
ॐ बुद्धाय नमः।
ॐ परिपूर्णाय नमः।
ॐ सच्चिदानन्दाय नमः।
ॐ अदृश्याय नमः।
ॐ परमशान्तस्वरूपाय नमः।
ॐ तेजोरूपाय नमः।
ॐ तेजोमयाय नमः।
ॐ महारौद्राय नमः।
ॐ भद्रावताराय नमः।
ॐ महाभैरवाय नमः।
ॐ कल्पान्तकाय नमः।
ॐ कपालमालाधराय नमः।
ॐ खट्वांगाय नमः।
ॐ खड्गपाशांकुशधराय नमः।
ॐ डमरुत्रिशूलचापधराय नमः।
ॐ बाणगदाशक्तिबिन्दिपालधराय नमः।
ॐ तौमरमुसलमुद्गरधराय नमः।
ॐ पत्तिसपरशुपरिघधराय नमः।
ॐ भुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्ययुधधराय नमः।
ॐ भीषणकरसहस्रमुखाय नमः।
ॐ विकटाट्टहासविस्फारिताय नमः।
ॐ ब्रह्मांडमंडलाय नमः।
ॐ नागेन्द्रकुंडलाय नमः।
ॐ नागेन्द्रहाराय नमः।
ॐ नागेन्द्रवलयाय नमः।
ॐ नागेन्द्रचर्मधराय नमः।
ॐ त्र्यम्बकाय नमः।
ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः।
ॐ विरूपाक्षाय नमः।
ॐ विश्वेश्वराय नमः।
ॐ विश्वरूपाय नमः।
ॐ विश्वतोमुखाय नमः।
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः।

श्रीशिवसहस्रनामावली

1) ॐ स्थिराय नमः।
2) ॐ स्थाणवे नमः।
3) ॐ प्रभवे नमः।
4) ॐ भीमाय नमः।
5) ॐ प्रवराय नमः।
6) ॐ वरदाय नमः।
7) ॐ वराय नमः।
8) ॐ सर्वात्मने नमः।
9) ॐ सर्वविख्याताय नमः।
10) ॐ सर्वस्मै नमः।
11) ॐ सर्वकराय नमः।
12) ॐ भवाय नमः।
13) ॐ जटिने नमः।
14) ॐ चर्मिणे नमः।
15) ॐ शिखण्डिने नमः।
16) ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
17) ॐ सर्वभावनाय नमः।
18) ॐ हराय नमः।
19) ॐ हरिणाक्षाय नमः।
20) ॐ सर्वभूतहराय नमः।
21) ॐ प्रभवे नमः।
22) ॐ प्रवृत्तये नमः।
23) ॐ निवृत्तये नमः।
24) ॐ नियताय नमः।
25) ॐ शाश्वताय नमः।
26) ॐ ध्रुवाय नमः।
27) ॐ श्मशानवासिने नमः।
28) ॐ भगवते नमः।
29) ॐ खचराय नमः।
30) ॐ गोचराय नमः।
31) ॐ अर्दनाय नमः।
32) ॐ अभिवाद्याय नमः।
33) ॐ महाकर्मणे नमः।
34) ॐ तपस्विने नमः।
35) ॐ भूतभावनाय नमः।
36)ॐउन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः।
37)ॐसर्वलोकप्रजापतये नमः।
38) ॐ महारूपाय नमः।
39) ॐ महाकायाय नमः।
40) ॐ वृषरूपाय नमः।
41) ॐ महायशसे नमः।
42) ॐ महात्मने नमः।
43) ॐ सर्वभूतात्मने नमः।
44) ॐ विश्वरूपाय नमः।
45) ॐ महाहणवे नमः।
46) ॐ लोकपालाय नमः।
47) ॐ अन्तर्हितत्मने नमः।
48) ॐ प्रसादाय नमः।
49) ॐ हयगर्धभये नमः।
50) ॐ पवित्राय नमः।
51) ॐ महते नमः।
52) ॐनियमाय नमः।
53) ॐ नियमाश्रिताय नमः।
54) ॐ सर्वकर्मणे नमः।
55) ॐ स्वयंभूताय नमः।
56) ॐ आदये नमः।
57) ॐ आदिकराय नमः।
58) ॐ निधये नमः।
59) ॐ सहस्राक्षाय नमः।
60) ॐ विशालाक्षाय नमः।
61) ॐ सोमाय नमः।
62) ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः।
63) ॐ चन्द्राय नमः।
64) ॐ सूर्याय नमः।
65) ॐ शनये नमः।
66) ॐ केतवे नमः।
67) ॐ ग्रहाय नमः।
68) ॐ ग्रहपतये नमः।
69) ॐ वराय नमः।
70) ॐ अत्रये नमः।
71) ॐ अत्र्या नमस्कर्त्रे नमः।
72) ॐ मृगबाणार्पणाय नमः।
73) ॐ अनघाय नमः।
74) ॐ महातपसे नमः।
75) ॐ घोरतपसे नमः।
76) ॐ अदीनाय नमः।
77) ॐ दीनसाधकाय नमः।
78) ॐ संवत्सरकराय नमः।
79) ॐ मन्त्राय नमः।
80) ॐ प्रमाणाय नमः।
81) ॐ परमायतपसे नमः।
82) ॐ योगिने नमः।
83) ॐ योज्याय नमः।
84) ॐ महाबीजाय नमः।
85) ॐ महारेतसे नमः।
86) ॐ महाबलाय नमः।
87) ॐ सुवर्णरेतसे नमः।
88) ॐ सर्वज्ञाय नमः।
89) ॐ सुबीजाय नमः।
90) ॐ बीजवाहनाय नमः।
91) ॐ दशबाहवे नमः।
92) ॐ अनिमिशाय नमः।
93) ॐ नीलकण्ठाय नमः।
94) ॐ उमापतये नमः।
95) ॐ विश्वरूपाय नमः।
96) ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः।
97) ॐ बलवीराय नमः।
98) ॐ अबलोगणाय नमः।
99) ॐ गणकर्त्रे नमः।
100) ॐ गणपतये नमः।
101) ॐ दिग्वाससे नमः।
102) ॐ कामाय नमः।
103) ॐ मन्त्रविदे नमः।
104) ॐ परमाय मन्त्राय नमः।
105) ॐ सर्वभावकराय नमः।
106) ॐ हराय नमः।
107) ॐ कमण्डलुधराय नमः।
108) ॐ धन्विने नमः।
109) ॐ बाणहस्ताय नमः।
110) ॐ कपालवते नमः।
111) ॐ अशनये नमः।
112) ॐ शतघ्निने नमः।
113) ॐ खड्गिने नमः।
114) ॐ पट्टिशिने नमः।
115) ॐ आयुधिने नमः।
116) ॐ महते नमः।
117) ॐ स्रुवहस्ताय नमः।
118) ॐ सुरूपाय नमः।
119) ॐ तेजसे नमः।
120) ॐ तेजस्कराय निधये नमः।
121) ॐ उष्णीषिणे नमः।
122) ॐ सुवक्त्राय नमः।
123) ॐ उदग्राय नमः।
124) ॐ विनताय नमः।
125) ॐ दीर्घाय नमः।
126) ॐ हरिकेशाय नमः।
127) ॐ सुतीर्थाय नमः।
128) ॐ कृष्णाय नमः।
129) ॐ शृगालरूपाय नमः।
130) ॐ सिद्धार्थाय नमः।
131) ॐ मुण्डाय नमः।
132) ॐ सर्वशुभङ्कराय नमः।
133) ॐ अजाय नमः।
134) ॐ बहुरूपाय नमः।
135) ॐ गन्धधारिणे नमः।
136) ॐ कपर्दिने नमः।
137) ॐ उर्ध्वरेतसे नमः।
138) ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः।
139) ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः।
140) ॐ नभस्थलाय नमः।
141) ॐ त्रिजटिने नमः।
142) ॐ चीरवाससे नमः।
143) ॐ रुद्राय नमः।
144) ॐ सेनापतये नमः।
145) ॐ विभवे नमः।
146) ॐ अहश्चराय नमः।
147) ॐ नक्तंचराय नमः।
148) ॐ तिग्ममन्यवे नमः।
149) ॐ सुवर्चसाय नमः।
150) ॐ गजघ्ने नमः।
151) ॐ दैत्यघ्ने नमः।
152) ॐ कालाय नमः।

153) ॐ लोकधात्रे नमः।
154) ॐ गुणाकराय नमः।
155) ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः।
156)ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः।
157) ॐ कालयोगिने नमः।
158) ॐ महानादाय नमः।
159) ॐ सर्वकामाय नमः।
160) ॐ चतुष्पथाय नमः।
161) ॐ निशाचराय नमः।
162) ॐ प्रेतचारिणे नमः।
163) ॐ भूतचारिणे नमः।
164) ॐ महेश्वराय नमः।
165) ॐ बहुभूताय नमः।
166) ॐ बहुधराय नमः।
167) ॐ स्वर्भानवे नमः।
168) ॐ अमिताय नमः।
169) ॐ गतये नमः।
170) ॐ नृत्यप्रियाय नमः।
171) ॐ नित्यनर्ताय नमः।
172) ॐ नर्तकाय नमः।
173) ॐ सर्वलालसाय नमः।
174) ॐ घोराय नमः।
175) ॐ महातपसे नमः।
176) ॐ पाशाय नमः।
177) ॐ नित्याय नमः।
178) ॐ गिरिरुहाय नमः।
179) ॐ नभसे नमः।
180) ॐ सहस्रहस्ताय नमः।
181) ॐ विजयाय नमः।
182) ॐ व्यवसायाय नमः।
183) ॐ अतन्द्रिताय नमः।
184) ॐ अधर्षणाय नमः।
185) ॐ धर्षणात्मने नमः।
186) ॐ यज्ञघ्ने नमः।
187) ॐ कामनाशकाय नमः।
188) ॐ दक्ष्यागपहारिणे नमः।
189) ॐ सुसहाय नमः।
190) ॐ मध्यमाय नमः।
191) ॐ तेजोपहारिणे नमः।
192) ॐ बलघ्ने नमः।
193) ॐ मुदिताय नमः।
194) ॐ अर्थाय नमः।
195) ॐ अजिताय नमः।
196) ॐ अवराय नमः।
197) ॐ गम्भीरघोषय नमः।
198) ॐ गम्भीराय नमः।
199) ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः।
200) ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः।
201) ॐ न्यग्रोधाय नमः।
202) ॐ वृक्षकर्णस्थिताय नमः।
203) ॐ विभवे नमः।
204) ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः।
205) ॐ महाकायाय नमः।
206) ॐ महाननाय नमः।
207) ॐ विश्वक्सेनाय नमः।
208) ॐ हरये नमः।
209) ॐ यज्ञाय नमः।
210)ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः।
211)ॐ तीक्ष्णातापाय नमः।
212) ॐ हर्यश्वाय नमः।
213) ॐ सहायाय नमः।
214) ॐ कर्मकालविदे नमः।
215)ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः।
216) ॐ यज्ञाय नमः।
217) ॐ समुद्राय नमः।
218) ॐ बडवामुखाय नमः।
219) ॐ हुताशनसहायाय नमः।
220) ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
221) ॐ हुताशनाय नमः।
222) ॐ उग्रतेजसे नमः।
223) ॐ महातेजसे नमः।
224) ॐ जन्याय नमः।
225) ॐ विजयकालविदे नमः।
226)ॐ ज्योतिषामयनाय नमः।
227) ॐ सिद्धये नमः।
228) ॐ सर्वविग्रहाय नमः।
229) ॐ शिखिने नमः।
230) ॐ मुण्डिने नमः।
231) ॐ जटिने नमः।
232) ॐ ज्वलिने नमः।
233) ॐ मूर्तिजाय नमः।
234) ॐ मूर्धजाय नमः।
235) ॐ बलिने नमः।
236) ॐ वैनविने नमः।
237) ॐ पणविने नमः।
238) ॐ तालिने नमः।
239) ॐ खलिने नमः।
240)ॐ कालकटङ्कटाय नमः।
241)ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः।
242) ॐ गुणबुद्धये नमः।
243) ॐ लयाय नमः।
244) ॐ अगमाय नमः।
245) ॐ प्रजापतये नमः।
246) ॐ विश्वबाहवे नमः।
247) ॐ विभागाय नमः।
248) ॐ सर्वगाय नमः।
249) ॐ अमुखाय नमः।
250) ॐ विमोचनाय नमः।
251) ॐ सुसरणाय नमः।
252)ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः।
253) ॐ मेढ्रजाय नमः।
254) ॐ बलचारिणे नमः।
255) ॐ महीचारिणे नमः।
256) ॐ स्रुताय नमः।
257)ॐ सर्वतूर्यविनोदिने नमः।
258)ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय नमः।
259) ॐ व्यालरूपाय नमः।
260) ॐ गुहावासिने नमः।
261) ॐ गुहाय नमः।
262) ॐ मालिने नमः।
263) ॐ तरङ्गविदे नमः।
264) ॐ त्रिदशाय नमः।
265) ॐ त्रिकालधृते नमः।
266)ॐ कर्मसर्वबंधविमोचनाय नमः।
267)ॐ असुरेन्द्राणांबन्धनाय नमः।
268)ॐ युधि शत्रुविनाशनाय नमः।
269)ॐ साङ्ख्यप्रसादाय नमः।
270) ॐ दुर्वाससे नमः।
271)ॐ सर्वसाधिनिषेविताय नमः।
272) ॐ प्रस्कन्दनाय नमः।
273)ॐ यज्ञविभागविदे नमः।
274) ॐ अतुल्याय नमः।
275) ॐ यज्ञविभागविदे नमः।
276) ॐ सर्ववासाय नमः।
277) ॐ सर्वचारिणे नमः।
278) ॐ दुर्वाससे नमः।
279) ॐ वासवाय नमः।
280) ॐ अमराय नमः।
281) ॐ हैमाय नमः।
282) ॐ हेमकराय नमः।
283) ॐ निष्कर्माय नमः।
284) ॐ सर्वधारिणे नमः।
285) ॐ धरोत्तमाय नमः।
286) ॐ लोहिताक्षाय नमः।
287) ॐ माक्षाय नमः।
288) ॐ विजयक्षाय नमः।
289) ॐ विशारदाय नमः।
290) ॐ संग्रहाय नमः।
291) ॐ निग्रहाय नमः।
292) ॐ कर्त्रे नमः।
293)ॐ सर्पचीरनिवासनाय नमः।
294) ॐ मुख्याय नमः।
295) ॐ अमुख्याय नमः।
296) ॐ देहाय नमः।
297) ॐ काहलये नमः।
298) ॐ सर्वकामदाय नमः।
299) ॐ सर्वकालप्रसादये नमः।
300) ॐ सुबलाय नमः।
301) ॐ बलरूपधृते नमः।
302) ॐ सर्वकामवराय नमः।
303) ॐ सर्वदाय नमः।
304) ॐ सर्वतोमुखाय नमः।
305) ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः।
306) ॐ निपातिने नमः।
307) ॐ अवशाय नमः।
308) ॐ खगाय नमः।
309) ॐ रौद्ररूपाय नमः।
310) ॐ अंशवे नमः।
311) ॐ आदित्याय नमः।
312) ॐ बहुरश्मये नमः।

313) ॐ सुवर्चसिने नमः।
314) ॐ वसुवेगाय नमः।
315) ॐ महावेगाय नमः।
316) ॐ मनोवेगाय नमः।
317) ॐ निशाचराय नमः।
318) ॐ सर्ववासिने नमः।
319) ॐ श्रियावासिने नमः।
320) ॐ उपदेशकराय नमः।
321) ॐ अकराय नमः।
322) ॐ मुनये नमः।
323) ॐ आत्मनिरालोकाय नमः।
324) ॐ सम्भग्नाय नमः।
325) ॐ सहस्रदाय नमः।
326) ॐ पक्षिणे नमः।
327) ॐ पक्षरूपाय नमः।
328) ॐ अतिदीप्ताय नमः।
329) ॐ विशाम्पतये नमः।
330) ॐ उन्मादाय नमः।
331) ॐ मदनाय नमः।
332) ॐ कामाय नमः।
333) ॐ अश्वत्थाय नमः।
334) ॐ अर्थकराय नमः।
335) ॐ यशसे नमः।
336) ॐ वामदेवाय नमः।
337) ॐ वामाय नमः।
338) ॐ प्राचे नमः।
339) ॐ दक्षिणाय नमः।
340) ॐ वामनाय नमः।
341) ॐ सिद्धयोगिने नमः।
342) ॐ महर्शये नमः।
343) ॐ सिद्धार्थाय नमः।
344) ॐ सिद्धसाधकाय नमः।
345) ॐ भिक्षवे नमः।
346) ॐ भिक्षुरूपाय नमः।
347) ॐ विपणाय नमः।
348) ॐ मृदवे नमः।
349) ॐ अव्ययाय नमः।
350) ॐ महासेनाय नमः।
351) ॐ विशाखाय नमः।
352) ॐ षष्टिभागाय नमः।
353) ॐ गवां पतये नमः।
354) ॐ वज्रहस्ताय नमः।
355) ॐ विष्कम्भिने नमः।
356) ॐ चमूस्तम्भनाय नमः।
357) ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः।
358) ॐ तालाय नमः।
359) ॐ मधवे नमः।
360) ॐ मधुकलोचनाय नमः।
361) ॐ वाचस्पत्याय नमः।
362) ॐ वाजसेनाय नमः।
363)ॐ नित्यमाश्रितपूजिताय नमः।
364) ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
365) ॐ लोकचारिणे नमः।
366) ॐ सर्वचारिणे नमः।
367) ॐ विचारविदे नमः।
368) ॐ ईशानाय नमः।
369) ॐ ईश्वराय नमः।
370) ॐ कालाय नमः।
371) ॐ निशाचारिणे नमः।
372) ॐ पिनाकभृते नमः।
373) ॐ निमित्तस्थाय नमः।
374) ॐ निमित्ताय नमः।
375) ॐ नन्दये नमः।
376) ॐ नन्दिकराय नमः।
377) ॐ हरये नमः।
378) ॐ नन्दीश्वराय नमः।
379) ॐ नन्दिने नमः।
380) ॐ नन्दनाय नमः।
381) ॐ नन्दिवर्धनाय नमः।
382) ॐ भगहारिणे नमः।
383) ॐ निहन्त्रे नमः।
384) ॐ कलाय नमः।
385) ॐ ब्रह्मणे नमः।
386) ॐ पितामहाय नमः।
387) ॐ चतुर्मुखाय नमः।
388) ॐ महालिङ्गाय नमः।
389) ॐ चारुलिङ्गाय नमः।
390) ॐ लिङ्गाध्याक्षाय नमः।
391) ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
392) ॐ योगाध्यक्षाय नमः।
393) ॐ युगावहाय नमः।
394) ॐ बीजाध्यक्षाय नमः।
395) ॐ बीजकर्त्रे नमः।
396)ॐ अध्यात्मानुगताय नमः।
397) ॐ बलाय नमः।
398) ॐ इतिहासाय नमः।
399) ॐ सकल्पाय नमः।
400) ॐ गौतमाय नमः।
401) ॐ निशाकराय नमः।
402) ॐ दम्भाय नमः।
403) ॐ अदम्भाय नमः।
404) ॐ वैदम्भाय नमः।
405) ॐ वश्याय नमः।
406) ॐ वशकराय नमः।
407) ॐ कलये नमः।
408) ॐ लोककर्त्रे नमः।
409) ॐ पशुपतये नमः।
410) ॐ महाकर्त्रे नमः।
411) ॐ अनौषधाय नमः।
412) ॐ अक्षराय नमः।
413) ॐ परमाय ब्रह्मणे नमः।
414) ॐ बलवते नमः।
415) ॐ शक्राय नमः।
416) ॐ नित्यै नमः।
417) ॐ अनित्यै नमः।
418) ॐ शुद्धात्मने नमः।
419) ॐ शुद्धाय नमः।
420) ॐ मान्याय नमः।
421) ॐ गतागताय नमः।
422) ॐ बहुप्रसादाय नमः।
423) ॐ सुस्वप्नाय नमः।
424) ॐ दर्पणाय नमः।
425) ॐ अमित्रजिते नमः।
426) ॐ वेदकाराय नमः।
427) ॐ मन्त्रकाराय नमः।
428) ॐ विदुषे नमः।
429) ॐ समरमर्दनाय नमः।
430) ॐ महामेघनिवासिने नमः।
431) ॐ महाघोराय नमः।
432) ॐ वशिने नमः।
433) ॐ कराय नमः।
434) ॐ अग्निज्वालाय नमः।
435) ॐ महाज्वालाय नमः।
436) ॐ अतिधूम्राय नमः।
437) ॐ हुताय नमः।
438) ॐ हविषे नमः।
439) ॐ वृषणाय नमः।
440) ॐ शङ्कराय नमः।
441) ॐ नित्यं वर्चस्विने नमः।
442) ॐ धूमकेतनाय नमः।
443) ॐ नीलाय नमः।
444) ॐ अङ्गलुब्धाय नमः।
445) ॐ शोभनाय नमः।
446) ॐ निरवग्रहाय नमः।
447) ॐ स्वस्तिदाय नमः।
448) ॐ स्वस्तिभावाय नमः।
449) ॐ भागिने नमः।
450) ॐ भागकराय नमः।
451) ॐ लघवे नमः।
452) ॐ उत्सङ्गाय नमः।
453) ॐ महाङ्गाय नमः।
454)ॐ महागर्भपरायणाय नमः।
455) ॐ कृष्णवर्णाय नमः।
456) ॐ सुवर्णाय नमः।
457)ॐ सर्वदेहिनां इन्द्रियाय नमः।
458) ॐ महापादाय नमः।
459) ॐ महाहस्ताय नमः।
460) ॐ महाकायाय नमः।
461) ॐ महायशसे नमः।
462) ॐ महामूर्ध्ने नमः।
463) ॐ महामात्राय नमः।
464) ॐ महानेत्राय नमः।
465) ॐ निशालयाय नमः।
466) ॐ महान्तकाय नमः।
467) ॐ महाकर्णाय नमः।
468) ॐ महोष्ठाय नमः।
469) ॐ महाहणवे नमः।
470) ॐ महानासाय नमः।
471) ॐ महाकम्बवे नमः।
472) ॐ महाग्रीवाय नमः।

473) ॐ श्मशानभाजे नमः।
474) ॐ महावक्षसे नमः।
475) ॐ महोरस्काय नमः।
476) ॐ अन्तरात्मने नमः।
477) ॐ मृगालयाय नमः।
478) ॐ लम्बनाय नमः।
479) ॐ लम्बितोष्ठाय नमः।
480) ॐ महामायाय नमः।
481) ॐ पयोनिधये नमः।
482) ॐ महादन्ताय नमः।
483) ॐ महादंष्ट्राय नमः।
484) ॐ महजिह्वाय नमः।
485) ॐ महामुखाय नमः।
486) ॐ महानखाय नमः।
487) ॐ महारोमाय नमः।
488) ॐ महाकोशाय नमः।
489) ॐ महाजटाय नमः।
490) ॐ प्रसन्नाय नमः।
491) ॐ प्रसादाय नमः।
492) ॐ प्रत्ययाय नमः।
493) ॐ गिरिसाधनाय नमः।
494) ॐ स्नेहनाय नमः।
495) ॐ अस्नेहनाय नमः।
496) ॐ अजिताय नमः।
497) ॐ महामुनये नमः।
498) ॐ वृक्षाकाराय नमः।
499) ॐ वृक्षकेतवे नमः।
500) ॐ अनलाय नमः।
501) ॐ वायुवाहनाय नमः।
502) ॐ गण्डलिने नमः।
503) ॐ मेरुधाम्ने नमः।
504) ॐ देवाधिपतये नमः।
505) ॐ अथर्वशीर्षाय नमः।
506) ॐ सामास्याय नमः।
507)ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः।
508) ॐ यजुः पाद भुजाय नमः।
509) ॐ गुह्याय नमः।
510) ॐ प्रकाशाय नमः।
511) ॐ जङ्गमाय नमः।
512) ॐ अमोघार्थाय नमः।

513) ॐ प्रसादाय नमः।
514) ॐ अभिगम्याय नमः।
515) ॐ सुदर्शनाय नमः।
516) ॐ उपकाराय नमः।
517) ॐ प्रियाय नमः।
518) ॐ सर्वाय नमः।
519) ॐ कनकाय नमः।
520) ॐ कञ्चनच्छवये नमः।
521) ॐ नाभये नमः।
522) ॐ नन्दिकराय नमः।
523) ॐ भावाय नमः।
524) ॐ पुष्करस्थापतये नमः।
525) ॐ स्थिराय नमः।
526) ॐ द्वादशाय नमः।
527) ॐ त्रासनाय नमः।
528) ॐ आद्याय नमः।
529) ॐ यज्ञाय नमः।
530) ॐ यज्ञसमाहिताय नमः।
531) ॐ नक्तं नमः।
532) ॐ कलये नमः।
533) ॐ कालाय नमः।
534) ॐ मकराय नमः।
535) ॐ कालपूजिताय नमः।
536) ॐ सगणाय नमः।
537) ॐ गणकाराय नमः।
538) ॐ भूतवाहनसारथये नमः।
539) ॐ भस्मशयाय नमः।
540) ॐ भस्मगोप्त्रे नमः।
541) ॐ भस्मभूताय नमः।
542) ॐ तरवे नमः।
543) ॐ गणाय नमः।
544) ॐ लोकपालाय नमः।
545) ॐ अलोकाय नमः।
546) ॐ महात्मने नमः।
547) ॐ सर्वपूजिताय नमः।
548) ॐ शुक्लाय नमः।
549) ॐ त्रिशुक्लाय नमः।
550) ॐ सम्पन्नाय नमः।
551) ॐ शुचये नमः।
552) ॐ भूतनिषेविताय नमः।

553) ॐ आश्रमस्थाय नमः।
554) ॐ क्रियावस्थाय नमः।
555) ॐ विश्वकर्ममतये नमः।
556) ॐ वराय नमः।
557) ॐ विशालशाखाय नमः।
558) ॐ ताम्रोष्ठाय नमः।
559) ॐ अम्बुजालाय नमः।
560) ॐ सुनिश्चलाय नमः।
561) ॐ कपिलाय नमः।
562) ॐ कपिशाय नमः।
563) ॐ शुक्लाय नमः।
564) ॐ अयुशे नमः।
565) ॐ पराय नमः।
566) ॐ अपराय नमः।
567) ॐ गन्धर्वाय नमः।
568) ॐ अदितये नमः।
569) ॐ तार्क्ष्याय नमः।
570) ॐ सुविज्ञेयाय नमः।
571) ॐ सुशारदाय नमः।
572) ॐ परश्वधायुधाय नमः।
573) ॐ देवाय नमः।
574) ॐ अनुकारिणे नमः।
575) ॐ सुबान्धवाय नमः।
576) ॐ तुम्बवीणाय नमः।
577) ॐ महाक्रोधाया नमः।
578) ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
579) ॐ जलेशयाय नमः।
580) ॐ उग्राय नमः।
581) ॐ वशङ्कराय नमः।
582) ॐ वंशाय नमः।
583) ॐ वंशनादाय नमः।
584) ॐ अनिन्दिताय नमः।
585) ॐ सर्वाङ्गरूपाय नमः।
586) ॐ मायाविने नमः।
587) ॐ सुहृदाय नमः।
588) ॐ अनिलाय नमः।
589) ॐ अनलाय नमः।
590) ॐ बन्धनाय नमः।
591) ॐ बन्धकर्त्रे नमः।
592)ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः।

593) ॐ सयज्ञारये नमः।
594) ॐ सकामारये नमः।
595) ॐ महादंश्ट्राय नमः।
596) ॐ महायुधाय नमः।
597) ॐ बहुधानिन्दिताय नमः।
598) ॐ शर्वाय नमः।
599) ॐ शङ्कराय नमः।
600) ॐ शङ्कराय नमः।
601) ॐ अधनाय नमः।
602) ॐ अमरेशाय नमः।
603) ॐ महादेवाय नमः।
604) ॐ विश्वदेवाय नमः।
605) ॐ सुरारिघ्ने नमः।
606) ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
607) ॐ अनिलाभाय नमः।
608) ॐ चेकितानाय नमः।
609) ॐ हविषे नमः।
610) ॐ अजैकपाते नमः।
611) ॐ कापालिने नमः।
612) ॐ त्रिशङ्कवे नमः।
613) ॐ अजिताय नमः।
614) ॐ शिवाय नमः।
615) ॐ धन्वन्तरये नमः।
616) ॐ धूमकेतवे नमः।
617) ॐ स्कन्दाय नमः।
618) ॐ वैश्रवणाय नमः।
619) ॐ धात्रे नमः।
620) ॐ शक्राय नमः।
621) ॐ विष्णवे नमः।
622) ॐ मित्राय नमः।
623) ॐ त्वष्ट्रे नमः।
624) ॐ धृवाय नमः।
625) ॐ धराय नमः।
626) ॐ प्रभावाय नमः।
627) ॐ सर्वगाय वायवे नमः।
628) ॐ अर्यम्ने नमः।
629) ॐ सवित्रे नमः।
630) ॐ रवये नमः।
631) ॐ उषङ्गवे नमः।
632) ॐ विधात्रे नमः।

633) ॐ मान्धात्रे नमः।
634) ॐ भूतभावनाय नमः।
635) ॐ विभवे नमः।
636) ॐ वर्णविभाविने नमः।
637)ॐ सर्वकामगुणावहाय नमः।
638) ॐ पद्मनाभाय नमः।
639) ॐ महागर्भाय नमः।
640) ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः।
641) ॐ अनिलाय नमः।
642) ॐ अनलाय नमः।
643) ॐ बलवते नमः।
644) ॐ उपशान्ताय नमः।
645) ॐ पुराणाय नमः।
646) ॐ पुण्यचञ्चवे नमः।
647) ॐ ये नमः।
648) ॐ कुरुकर्त्रे नमः।
649) ॐ कुरुवासिने नमः।
650) ॐ कुरुभूताय नमः।
651) ॐ गुणौषधाय नमः।
652) ॐ सर्वाशयाय नमः।
653) ॐ दर्भचारिणे नमः।
654) ॐ सर्वेषं प्राणिनां पतये नमः।
655) ॐ देवदेवाय नमः।
656) ॐ सुखासक्ताय नमः।
657) ॐ सते नमः।
658) ॐ असते नमः।
659) ॐ सर्वरत्नविदे नमः।
660) ॐ कैलासगिरिवासिने नमः।
661)ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः।
662) ॐ कूलहारिणे नमः।
663) ॐ कुलकर्त्रे नमः।
664) ॐ बहुविद्याय नमः।
665) ॐ बहुप्रदाय नमः।
666) ॐ वणिजाय नमः।
667) ॐ वर्धकिने नमः।
668) ॐ वृक्षाय नमः।
669) ॐ वकिलाय नमः।
670) ॐ चन्दनाय नमः।
671) ॐ छदाय नमः।
672) ॐ सारग्रीवाय नमः।
673) ॐ महाजत्रवे नमः।
674) ॐ अलोलाय नमः।
675) ॐ महौषधाय नमः।
676) ॐ सिद्धार्थकारिणे नमः।
677) ॐ सिद्धार्थश्छन्दो व्याकरणोत्तराय नमः।
678) ॐ सिंहनादाय नमः।
679) ॐ सिंहदंष्ट्राय नमः।
680) ॐ सिंहगाय नमः।
681) ॐ सिंहवाहनाय नमः।
682) ॐ प्रभावात्मने नमः।
683) ॐ जगत्कालस्थालाय नमः।
684) ॐ लोकहिताय नमः।
685) ॐ तरवे नमः।
686) ॐ सारङ्गाय नमः।
687) ॐ नवचक्राङ्गाय नमः।
688) ॐ केतुमालिने नमः।
689) ॐ सभावनाय नमः।
690) ॐ भूतालयाय नमः।
691) ॐ भूतपतये नमः।
692) ॐ अहोरात्राय नमः।
693) ॐ अनिन्दिताय नमः।
694) ॐ सर्वभूतानां वाहित्रे नमः।
695) ॐ निलयाय नमः।
696) ॐ विभवे नमः।
697) ॐ भवाय नमः।
698) ॐ अमोघाय नमः।
699) ॐ संयताय नमः।
700) ॐ अश्वाय नमः।
701) ॐ भोजनाय नमः।
702) ॐ प्राणधारणाय नमः।
703) ॐ धृतिमते नमः।
704) ॐ मतिमते नमः।
705) ॐ दक्षाय नमः।
706) ॐ सत्कृताय नमः।
707) ॐ युगाधिपाय नमः।
708) ॐ गोपालये नमः।
709) ॐ गोपतये नमः।
710) ॐ ग्रामाय नमः।
711) ॐ गोचर्मवसनाय नमः।
712) ॐ हरये नमः।
713) ॐ हिरण्यबाहवे नमः।
714) ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय नमः।
715) ॐ प्रकृष्टारये नमः।
716) ॐ महाहर्शाय नमः।
717) ॐ जितकामाय नमः।
718) ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
719) ॐ गान्धाराय नमः।
720) ॐ सुवासाय नमः।
721) ॐ तपस्सक्ताय नमः।
722) ॐ रतये नमः।
723) ॐ नराय नमः।
724) ॐ महागीताय नमः।
725) ॐ महानृत्याय नमः।
726) ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः।
727) ॐ महाकेतवे नमः।
728) ॐ महाधातवे नमः।
729) ॐ नैकसानुचराय नमः।
730) ॐ चलाय नमः।
731) ॐ आवेदनीयाय नमः।
732) ॐ आदेशाय नमः।
733) ॐ सर्वगन्धसुखाहवाय नमः।
734) ॐ तोरणाय नमः।
735) ॐ तारणाय नमः।
736) ॐ वाताय नमः।
737) ॐ परिधीने नमः।
738) ॐ पतिखेचराय नमः।
739) ॐ संयोगाय वर्धनाय नमः।
740) ॐ वृद्धाय नमः।
741) ॐ अतिवृद्धाय नमः।
742) ॐ गुणाधिकाय नमः।
743)ॐ नित्यमात्मसहायाय नमः।
744) ॐ देवासुरपतये नमः।
745) ॐ पतये नमः।
746) ॐ युक्ताय नमः।
747) ॐ युक्तबाहवे नमः।
748) ॐ दिविसुपर्णोदेवाय नमः।
749) ॐ आषाढाय नमः।
750) ॐ सुषाढाय नमः।
751) ॐ ध्रुवाय नमः।
752) ॐ हरिणाय नमः।
753) ॐ हराय नमः।
754) ॐ आवर्तमानेभ्योवपुषे नमः।
755) ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः।
756) ॐ महापथाय नमः।
757) ॐ शिरोहारिणे नमः।
758) ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः।
759) ॐ अक्षाय रथयोगिने नमः।
760) ॐ सर्वयोगिने नमः।
761) ॐ महाबलाय नमः।
762) ॐ समाम्नायाय नमः।
763) ॐ अस्माम्नायाय नमः।
764) ॐ तीर्थदेवाय नमः।
765) ॐ महारथाय नमः।
766) ॐ निर्जीवाय नमः।
767) ॐ जीवनाय नमः।
768) ॐ मन्त्राय नमः।
769) ॐ शुभाक्षाय नमः।
770) ॐ बहुकर्कशाय नमः।
771) ॐ रत्नप्रभूताय नमः।
772) ॐ रत्नाङ्गाय नमः।
773) ॐ महार्णवनिपानविदे नमः।
774) ॐ मूलाय नमः।
775) ॐ विशालाय नमः।
776) ॐ अमृताय नमः।
777) ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।
778) ॐ तपोनिधये नमः।
779) ॐ आरोहणाय नमः।
780) ॐ अधिरोहाय नमः।
781) ॐ शीलधारिणे नमः।
782) ॐ महायशसे नमः।
783) ॐ सेनाकल्पाय नमः।
784) ॐ महाकल्पाय नमः।
785) ॐ योगाय नमः।
786) ॐ युगकराय नमः।
787) ॐ हरये नमः।
788) ॐ युगरूपाय नमः।
789) ॐ महारूपाय नमः।
790) ॐ महानागहनाय नमः।
791) ॐ वधाय नमः।
792) ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः।

793) ॐ पादाय नमः।
794) ॐ पण्डिताय नमः।
795) ॐ अचलोपमाय नमः।
796) ॐ बहुमालाय नमः।
797) ॐ महामालाय नमः।
798) ॐ शशिने हरसुलोचनाय नमः।
799) ॐ विस्ताराय लवणाय कूपाय नमः।
800) ॐ त्रियुगाय नमः।
801) ॐ सफलोदयाय नमः।
802) ॐ त्रिलोचनाय नमः।
803) ॐ विषण्णाङ्गाय नमः।
804) ॐ मणिविद्धाय नमः।
805) ॐ जटाधराय नमः।
806) ॐ बिन्दवे नमः।
807) ॐ विसर्गाय नमः।
808) ॐ सुमुखाय नमः।
809) ॐ शराय नमः।
810) ॐ सर्वायुधाय नमः।
811) ॐ सहाय नमः।
812) ॐ निवेदनाय नमः।
813) ॐ सुखाजाताय नमः।
814) ॐ सुगन्धाराय नमः।
815) ॐ महाधनुषे नमः।
816) ॐ गन्धपालिने भगवते नमः।
817)ॐ सर्वकर्मणां उत्थानाय नमः।
818) ॐ मन्थानाय बहुलवायवे नमः।
819) ॐ सकलाय नमः।
820) ॐ सर्वलोचनाय नमः।
821) ॐ तलस्तालाय नमः।
822) ॐ करस्थालिने नमः।
823) ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः।
824) ॐ महते नमः।
825) ॐ छत्राय नमः।
826) ॐ सुछत्राय नमः।
827) ॐ विरव्यातलोकाय नमः।
828) ॐ सर्वाश्रयाय क्रमाय नमः।
829) ॐ मुण्डाय नमः।
830) ॐ विरूपाय नमः।
831) ॐ विकृताय नमः।
832) ॐ दण्डिने नमः।
833) ॐ कुण्डिने नमः।
834) ॐ विकुर्वणाय नमः।
835) ॐ हर्यक्षाय नमः।
836) ॐ ककुभाय नमः।
837) ॐ वज्रिणे नमः।
838) ॐ शतजिह्वाय नमः।
839) ॐ सहस्रपादे नमः।
840) ॐ सहस्रमुर्ध्ने नमः।
841) ॐ देवेन्द्राय सर्वदेवमयाय नमः।
842) ॐ गुरवे नमः।
843) ॐ सहस्रबाहवे नमः।
844) ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
845) ॐ शरण्याय नमः।
846) ॐ सर्वलोककृते नमः।
847) ॐ पवित्राय नमः।
848) ॐ त्रिककुडे मन्त्राय नमः।
849) ॐ कनिष्ठाय नमः।
850) ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः।
851) ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः।
852)ॐ शतघ्नीपाश शक्तिमते नमः।
853) ॐ पद्मगर्भाय नमः।
854) ॐ महागर्भाय नमः।
855) ॐ ब्रह्मगर्भाय नमः।
856) ॐ जलोद्भवाय नमः।
857) ॐ गभस्तये नमः।
858) ॐ ब्रह्मकृते नमः।
859) ॐ ब्रह्मिणे नमः।
860) ॐ ब्रह्मविदे नमः।
861) ॐ ब्राह्मणाय नमः।
862) ॐ गतये नमः।
863) ॐ अनन्तरूपाय नमः।
864) ॐ नैकात्मने नमः।
865) ॐ स्वयंभुव तिग्मतेजसे नमः।
866) ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः।
867) ॐ पशुपतये नमः।
868) ॐ वातरंहाय नमः।
869) ॐ मनोजवाय नमः।
870) ॐ चन्दनिने नमः।
871) ॐ पद्मनालाग्राय नमः।
872) ॐ सुरभ्युत्तरणाय नमः।
873) ॐ नराय नमः।
874) ॐ कर्णिकारमहास्रग्विणे नमः।
875) ॐ नीलमौलये नमः।
876) ॐ पिनाकधृते नमः।
877) ॐ उमापतये नमः।
878) ॐ उमाकान्ताय नमः।
879) ॐ जाह्नवीभृते नमः।
880) ॐ उमाधवाय नमः।
881) ॐ वराय वराहाय नमः।
882) ॐ वरदाय नमः।
883) ॐ वरेण्याय नमः।
884) ॐ सुमहास्वनाय नमः।
885) ॐ महाप्रसादाय नमः।
886) ॐ दमनाय नमः।
887) ॐ शत्रुघ्ने नमः।
888) ॐ श्वेतपिङ्गलाय नमः।
889) ॐ प्रीतात्मने नमः।
890) ॐ परमात्मने नमः।
891) ॐ प्रयतात्माने नमः।
892) ॐ प्रधानधृते नमः।
893) ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः।
894) ॐ त्र्यक्षाय नमः।
895) ॐ धर्मसाधारणो वराय नमः।
896) ॐ चराचरात्मने नमः।
897) ॐ सूक्ष्मात्मने नमः।
898) ॐ अमृताय गोवृषेश्वराय नमः।
899) ॐ साध्यर्षये नमः।
900) ॐ वसुरादित्याय नमः।
901)ॐ विवस्वते सवितामृताय नमः।
902) ॐ व्यासाय नमः।
903) ॐ सर्गाय सुसंक्षेपाय विस्तराय नमः।
904) ॐ पर्यायोनराय नमः।
905) ॐ ऋतवे नमः।
906) ॐ संवत्सराय नमः।
907) ॐ मासाय नमः।
908) ॐ पक्षाय नमः।
909) ॐ सङ्ख्यासमापनाय नमः।
910) ॐ कलाभ्यो नमः।
911) ॐ काष्ठाभ्यो नमः।
912) ॐ लवेभ्यो नमः।
913) ॐ मात्राभ्यो नमः।
914) ॐ मुहूर्ताहः क्षपाभ्यो नमः।
915) ॐ क्षणेभ्यो नमः।
916) ॐ विश्वक्षेत्राय नमः।
917) ॐ प्रजाबीजाय नमः।
918) ॐ लिङ्गाय नमः।
919) ॐ आद्याय निर्गमाय नमः।
920) ॐ सते नमः।
921) ॐ असते नमः।
922) ॐ व्यक्ताय नमः।
923) ॐ अव्यक्ताय नमः।
924) ॐ पित्रे नमः।
925) ॐ मात्रे नमः।
926) ॐ पितामहाय नमः।
927) ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
928) ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
929) ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
930) ॐ त्रिविष्टपाय नमः।
931) ॐ निर्वाणाय नमः।
932) ॐ ह्लादनाय नमः।
933) ॐ ब्रह्मलोकाय नमः।
934) ॐ परायै गत्यै नमः।
935) ॐ देवासुर विनिर्मात्रे नमः।
936) ॐ देवासुरपरायणाय नमः।
937) ॐ देवासुरगुरवे नमः।
938) ॐ देवाय नमः।
939)ॐ देवासुर नमस्कृताय नमः।
940)ॐ देवासुर महामात्राय नमः।
941)ॐ देवासुर गणाश्रयाय नमः।
942)ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः।
943)ॐ देवासुर गणागृण्यै नमः।
944) ॐ देवातिदेवाय नमः।
945) ॐ देवर्शये नमः।
946) ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः।
947) ॐ देवासुरेश्वराय नमः।
948) ॐ विश्वाय नमः।
949) ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः।
950) ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
951) ॐ अचिन्त्याय नमः।
952) ॐ देवतात्मने नमः।

953) ॐ आत्मसंभवाय नमः।
954) ॐ उद्भिदे नमः।
955) ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
956) ॐ वैद्याय नमः।
957) ॐ विरजाय नमः।
958) ॐ नीरजाय नमः।
959) ॐ अमराय नमः।
960) ॐ ईड्याय नमः।
961) ॐ हस्तीश्वराय नमः।
962) ॐ व्यघ्राय नमः।
963) ॐ देवसिंहाय नमः।
964) ॐ नरऋषभाय नमः।
965) ॐ विबुधाय नमः।
966) ॐ अग्रवराय नमः।
967) ॐ सूक्ष्माय नमः।
968) ॐ सर्वदेवाय नमः।
969) ॐ तपोमयाय नमः।
970) ॐ सुयुक्ताय नमः।
971) ॐ शिभनाय नमः।
972) ॐ वज्रिणे नमः।
973) ॐ प्रासानां प्रभवाय नमः।
974) ॐ अव्ययाय नमः।
975) ॐ गुहाय नमः।
976) ॐ कान्ताय नमः।
977) ॐ निजाय सर्गाय नमः।
978) ॐ पवित्राय नमः।
979) ॐ सर्वपावनाय नमः।
980)ॐ शृङ्गिणे नमः।
981)ॐ शृङ्गप्रियाय नमः।
982) ॐ बभ्रुवे नमः।
983) ॐ राजराजाय नमः।
984) ॐ निरामयाय नमः।
985) ॐ अभिरामाय नमः।
986) ॐ सुरगणाय नमः।
987) ॐ विरामाय नमः।
988) ॐ सर्वसाधनाय नमः।
989) ॐ ललाटाक्षाय नमः।
990) ॐ विश्वदेवाय नमः।
991) ॐ हरिणाय नमः।
992) ॐ ब्रह्मवर्चसाय नमः।
993) ॐ स्थावराणां पतये नमः।
994) ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः।
995) ॐ सिद्धार्थाय नमः।
996) ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः।
997) ॐ अचिन्त्याय नमः।
998) ॐ सत्यव्रताय नमः।
999) ॐ शुचये नमः।
1000) ॐ व्रताधिपाय नमः।
1001) ॐ परस्मै नमः।
1002) ॐ ब्रह्मणे नमः।
1003) ॐ भक्तानां परमायै गतये नमः।
1004) ॐ विमुक्ताय नमः।
1005) ॐ मुक्ततेजसे नमः।
1006) ॐ श्रीमते नमः।
1007) ॐ श्रीवर्धनाय नमः।
1008) ॐ जगते नमः।

॥ इति शिवसहस्रनामावलिः शिवार्पणम् ॥

होलिका उत्सव का महत्व

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय संस्कृती में होलिका दहन का उत्सव फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता हैं। होलिका का व्रत रखने वाले श्रद्घालु दिन भर उपवास कर के संध्या-रात्री के समय होलीका के दहन के समय होलीका का पूजन कर भोजन करते हैं।

होली का उत्सव से अनेको काथाएं एवं रहस्य जुडे हुएं हैं। पौराणिक काल में होलीका दहन के लिये माघी पूर्णिमा के दिन नगर के शूर, सामंत और गणमान्य लोग गाजे-बाजे के साथ नगर से बाहर जाकर शाखा युक्त वृक्ष ले आते थे और गंधादि से विधि-वत पूजन करके नगर या गांव से बाहर पश्चिम की और वृक्षको खडा कर देते थे। पुरातन काल में यह होली, होली का डांडा और प्रहलाद, नवान्नेष्टि का यज्ञ स्तम्भ के नाम से प्रसिद्घ थी। होलीका व्रत में व्रती अपना व्रत संकल्प करके साथा धारण करते थे।

होलिका दहन से पूर्व दहन वाले स्थान को शुद्घ जल से पवित्र किया जाता था और पूर्ण विघिवत पूजन के साथा में होलीका दहन किया जाता था। होलिका की परिक्रमा भी की जाती थी। होलीका दहन के बाद डांडा रुपी प्रह्लाद को बाहर निकालकर शीतल जल से पवित्र किया जाता था।

इसके बाद लोग घर से लाए हुए खेडा, खांडा और बडकूलों को होली में डालकर गेहूं, जौ, गेहूं की बाली और हरे चने के झाड को सेंका जाता था। इसके पीछे भक्त प्रह्लाद की कथा भी आती है। उसी के स्मरण में होलिका दहन होता है। इसके पीछे यह भी भाव बताया जाता है कि इस समय नवीन धान्य जौ, गेंहू और चने की खेती पककर तैयार हो जाती है। इसलिए यज्ञ राज को नया धान अर्पण करके उनकी पूजा की जाती हैं। यज्ञ विघि से इसे अर्पित करके नवानेष्टि यज्ञ किया जाता है।

होली और इससे जुडी पौराणिक कथाएं

होली अर्थात बसंत उत्सव एक ऐसा त्यौहार है। होली को सबसे प्राचीन पर्व माना जाता है। पुराण आदि धर्म ग्रंथों में होली संबंधी अनेक कथाएं मिलती है। उन्हीं में से कुछ प्रमुख कथाएं इस प्रकार है:

प्रहलाद और होलिका

पौराणिक मान्यता के अनुशार होलीका उत्सव का प्रारंभ प्रहलाद और होलिका के जीवन से जुडा है। हमारे प्राचिन धर्म ग्रंथो में से एक विष्णु पुराण में प्रहलाद और होलिका की कथा का उल्लेख मिलता हैं। हिरण्यकश्यप ने तपस्या कर वरदान प्राप्त कर लिया। अब हिरण्यकश्यप न तो अस्त्र-शस्त्र, मानव-पशु उसे पृथ्वी, आकाश, पाताल लोक में मार सकते थे।

वरदान के बल से हिरण्यकश्यपने देव-दानव-मानव आदि लोकों को जीत लिया और भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना बंद करा दी। परंतु हिरण्यकश्यप अपने पुत्र प्रहलाद को नारायण की भक्ति करना बंध नहीं कर सका। जिसके कारण हिरण्यकश्यप ने भगवान विष्णु के परम भक्त प्रहलाद को बहुत सी यातनाएँ दीं। पंरतुप्रहलाद ने विष्णु भक्ति नहीं छोड़ी।

हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को भी वरदान प्राप्त था कि वह आग में नहीं जलेगी। अत: दैत्यराज ने होलिका को विष्णु भक्त पुत्र का अंत करने के लिए प्रहलाद सहित आग में प्रवेश करा दिया। परंतु होलिका का वरदान निष्फल सिद्ध हुआ और वह स्वयं उस आग में जल कर मर गई और भक्त प्रहलाद का कुछ भी अनुष्ट नहीं हुवा। तभी से प्रहलाद की याद में होली का त्यौहार मनाया जाने लगा।

शिव पार्वती और कामदेव

शिव पुराण के अनुसार हिमालय की पुत्री पार्वती शिव से विवाह हेतु कठोर तप कर रही थी और शिव भी तपस्या में लीन थे। इंद्र का भी शिव-पार्वती विवाह में स्वार्थ छिपा था कि ताड़कासुर का वध शिव-पार्वती के पुत्र द्वारा होना था। इसी वजह से इंद्र ने कामदेव को शिव की तपस्या भंग करने भेजा, परंतु शिव ने क्रोधित हो कामदेव को भस्म कर दिया। शिव की तपस्या भंग होने के बाद देवताओं ने शिव को पार्वती से विवाह के राजी कर लिया। इस कथा के आधार पर होलीका दहन में काम की भावना को प्रतीकत्मक रूप से जला कर सच्चे प्रेम पर विजय के रुपमें उत्सव मनाया जाता हैं।

पूतनावध

पूराणिक कथा के अनुशार जब कंस को आकाशवाणी द्वारा पता चला कि वासुदेव और देवकी के आठवें पुत्र से उसका विनाशक होगा। तब कंस ने वसुदेव तथा देवकी को कारागार में डाल दिया। कारागार में देवकी ने सात पुत्रों को जन्म दिया जिसे कंस ने मार दिया। देवकी के गर्भ में आठवें पुत्र के रूप में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ।

वासुदेव ने रात में ही श्रीकृष्ण को गोकुल में नंद और यशोदा के यहां पहुंचा दिया और उनकी नवजात कन्या को अपने साथ लेते आए। कंस उस कन्या को मार नहीं सका। तब आकाशवाणी हुई कि कंस को मारने वाले तो गोकुल में जन्म ले चुका है। अब कंस ने उस दिन गोकुल में जन्मे सभी शिशुओं की हत्या करने का काम राक्षसी पूतना को सौंपा। वह सुंदर नारी का रूप बनाकर शिशुओं को विष का स्तनपान कराने गई। लेकिन श्रीकृष्ण ने राक्षसी पूतना का वध कर दिया। यह फाल्गुन पूर्णिमा का दिन था अत: पूतनावध की खुशी में होली मनाई जाने लगी।

राधा और श्रीकृष्ण

होली का त्यौहार राधा और श्रीकृष्ण की पवित्र प्रेम के रुप में भी मनाया जाता है। प्राचिन काल से श्रीकृष्ण की लीला में एक-दूसरे पर रंग डालने की प्रथा चली आरही हैं। इस लिये आज भी मथुरा और वृन्दावन की होली राधा और श्रीकृष्ण के प्रेम रंग में डूबी हुई प्रतित होती है। आज भी बरसाने और नंदगाँव में लठमार होली होती हैं जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं।

होलाष्टक एवं मान्यता

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

शुक्लाष्टमीं समारभ्यफाल्गुनस्य दिनाष्टकम्।
पूर्णिमावधिकं त्याज्यम् होलाष्टकमिदं शुभे॥

अर्थात्: फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक के आठ दिनों का यह समय होलाष्टक कहा जाता हैं, जिसे शुभ कार्यों में त्यागना चाहिये।

होली का पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता हैं । इस लिये होली के ठिक आठ दिन को होलाष्टक होते हैं। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुसार होलाष्टक में कोई भी नया कार्य, कोई भी शुभ कार्य एंव मांगलिक कार्य करना उचित नहीं हैं।

- होलाष्टक होलिका दहन के पश्चयात समाप्त होते हैं।
- होलाष्टक के दौरान हिंदू संस्कृतिके १६ संस्कारो को वर्जित मने जाते हैं।
- एसी मान्यता है कि होली के आठ दिन पूर्व के दिनो को ज्यादातर अमांगल प्रदान करने वाले होते हैं।
- देश के कई हिस्से में होलाष्टक नहीं मानते हैं।
- एसी मान्यता हैं कि कुछ तीर्थस्थान जेसे शतरुद्रा, विपाशा, इरावती एवं पुष्कर सरोवर के अलाव बाकी सब स्थानो पर होलाष्टक का अशुभ प्रभाव नहीं होता बकी सब स्थान पर सर्वत्र विवाह इत्यादि शुभ कार्य बिना परेशानि से हो सकते हैं।

लेकिन शास्त्रीय मान्यताओं से होलाष्टक के दौरान शुभ कार्य वर्जित मानागया हैं।

मंत्र सिद्ध वास्तु कलश

- वास्तु कलश एक दिव्य प्रतीक माना जाता है।
- वास्तु कलश का प्रयोग वास्तु दोष निवारण के लिए किया जाता है, यह सभी प्रकार के वास्तु दोषों को दूर करता है।
- यह विशेष रूप से घर, व्यवसायीक प्रतिष्ठान और उद्योग में वास्तु शांति के लिए प्रयोग किया जाता है।
- यदि आप जिस घर में रहते हैं, वह आपके दुर्भाग्य का कारण बन जाता है, बीमार स्वास्थ्य, निर्धनता या आपको व्यवसाय में नुकसान होता हैं, तो वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में कोई वास्तु दोष होता है।
- इस समस्या से छुटकारा पाने का बहुत ही सरल और प्रभावी तरीका है अपने फ्लैट, घर, अपार्टमेंट, दुकान, कार्यालय और उद्योग में वास्तु कलश को स्थापित करना।
- मंत्र सिद्ध वास्तु कलश का प्रयोग घर या किसी भी प्रकार की भूमि / संपत्ति के सभी वास्तु दोषों के निवारण के लिए किया जाता है।
- यदि भूमि में कुछ दोष हो, यदि दिशाएँ दोषपूर्ण हो, ईशान जैसे कुछ कोण उनके सही स्थान पर न हो, अव्यवस्थित हो और कुछ अतिरिक्त बड़े हो, वास्तु की दृष्टि से ये सब दोष का कारण हो सकते है।
- अधिक तोड़-फोड़ के बिना इन दोषों को दूर करने के लिए, यह "मंत्र सिद्ध वास्तु कलश" सर्वश्रेष्ठ समाधान है
- कुल मिलाकर समृद्धि बढ़ाने के लिए वास्तु कलश सर्वश्रेष्ठ है।

कालसर्प योग एक कष्टदायक योग !

काल का मतलब है मृत्यु । ज्योतिष के जानकारों के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अशुभकारी कालसर्प योग मे हुवा हो वह व्यक्ति जीवन भर मृत्यु के समान कष्ट भोगने वाला होता है, व्यक्ति जीवन भर कोइ ना कोइ समस्या से ग्रस्त होकर अशांत चित होता है।

कालसर्प योग अशुभ एवं पीड़ादायक होने पर व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है।

कालसर्प योग मतलब क्या?

जब जन्म कुंडली में सारे ग्रह राहु और केतु के बीच स्थित रहते हैं तो उससे ज्योतिष विद्या के जानकार उसे कालसर्प योग कहा जाता है।

कालसर्प योग किस प्रकार बनता है और क्यों बनता हैं?

जब 7 ग्रह राहु और केतु के मध्य मे स्थित हो यह अच्छि स्थिति नहि है। राहु और केतु के मध्य मे बाकी सब ग्रह आजाने से राहु केतु अन्य शुभ ग्रहों के प्रभावों को क्षीण कर देते हों!, तो अशुभ कालसर्प योग बनता है, क्योकि ज्योतिष मे राहु को सर्प(साप) का मुह(मुख) एवं केतु को पूंछ कहा जाता है।

कालसर्प योग का प्रभाव क्य होता है?

जिस प्रकार किसी व्यक्ति को साप काट ले तो वह व्यक्ति शांति से नही बेठ सकता वेसे ही कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को जीवन पर्यन्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक परेशानी का सामना करना पडता है। विवाह विलम्ब से होता है एवं विवाह के पश्च्यात संतान से संबंधी कष्ट जेसे उसे संतान होती ही नहीं या होती है तो रोग ग्रस्त होती है। उसे जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव रहता है। जातक को कालसर्प योग के कारण सभी कार्यों में अत्याधिक संघर्ष करना पड़ताअ है। उसकी रोजी-रोटी का जुगाड़ भी बड़ी मुश्किल से हो पाता है। अगर जुगाड़ होजाये तो लम्बे समय तक टिकती नही है। बार-बार व्यवसाय या नौकरी मे बदलाव आते रेहते है। धनाढय घर में पैदा होने के बावजूद किसी न किसी वजह से उसे अप्रत्याशित रूप से आर्थिक क्षति होती रहती है। तरह-तरह की परेशानी से घिरे रहते हैं। एक समस्या खतम होते ही दूसरी पाव पसारे खडी होजाती है। कालसर्प योग से व्यक्ति को चैन नही मिलता उसके कार्य बनते ही नही और बन जाये आधे मे रुक जाते है। व्यक्ति के 99% हो चुका कार्य भी आखरी पलो मे अकस्मात ही रुक जात है।

परंतु यह ध्यान रहे, कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नही पड़ता। क्योकि किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां स्थित हैं और दृष्टि कर रहे है उस्का प्रभाव बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका जानकार या कुशल ज्योतिषी से ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए। उपाय से कालसर्प योग के कुप्रभावो को कम किया जा सकता है।

यदि आपकी जन्म कुंडली मे भी अशुभ कालसर्प योग का बन रहा हो और आप उसके अशुभ प्रभावों से परेशान हो, तो कालसर्प योग के अशुभ प्राभावों को शांत करने के लिये विशेष अनुभूत उपायों को अपना कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाए।

***

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र

आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 9338213418, 9238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

मंत्र सिद्ध दुर्लभ सामग्री

काली हल्दी:- 370, 550, 730, 1450, 1900	कमल गट्टे की माला - Rs- 370
माया जाल- Rs- 251, 551, 751	हल्दी माला - Rs- 280
धन वृद्धि हकीक सेट Rs-280 (काली हल्दी के साथ Rs-550)	तुलसी माला - Rs- 190, 280, 370, 460
घोडे की नाल- Rs.351, 551, 751	नवरत्न माला- Rs- 1050, 1900, 2800, 3700 & Above
हकीक: 11 नंग-Rs-190, 21 नंग Rs-370	नवरंगी हकीक माला Rs- 280, 460, 730
लघु श्रीफल: 1 नंग-Rs-21, 11 नंग-Rs-190	हकीक माला (सात रंग) Rs- 280, 460, 730, 910
नाग केशर: 11 ग्राम, Rs-145	मूंगे की माला Rs- 1050, 1900 & Above
स्फटिक माला- Rs- 235, 280, 460, 730, DC 1050, 1250	पारद माला Rs- 1450, 1900, 2800 & Above
सफेद चंदन माला - Rs- 460, 640, 910	वैजयंती माला Rs- 190, 280, 460
रक्त (लाल) चंदन - Rs- 370, 550,	रुद्राक्ष माला: 190, 280, 460, 730, 1050, 1450
मोती माला- Rs- 460, 730, 1250, 1450 & Above	विधुत माला - Rs- 190, 280
कामिया सिंदूर- Rs- 460, 730, 1050, 1450, & Above	मूल्य में अंतर छोटे से बड़े आकार के कारण हैं। >> Shop Online | Order Now

मंत्र सिद्ध स्फटिक श्री यंत्र

"श्री यंत्र" सबसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली यंत्र है। "श्री यंत्र" को यंत्र राज कहा जाता है क्योकि यह अत्यन्त शुभ फ़लदयी यंत्र है। जो न केवल दूसरे यन्त्रो से अधिक से अधिक लाभ देने मे समर्थ है एवं संसार के हर व्यक्ति के लिए फायदेमंद साबित होता है। पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त "श्री यंत्र" जिस व्यक्ति के घर मे होता है उसके लिये "श्री यंत्र" अत्यन्त फ़लदायी सिद्ध होता है उसके दर्शन मात्र से अन-गिनत लाभ एवं सुख की प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मे समाई अद्रितिय एवं अद्रश्य शक्ति मनुष्य की समस्त शुभ इच्छाओं को पूरा करने मे समर्थ होति है। जिस्से उसका जीवन से हताशा और निराशा दूर होकर वह मनुष्य असफ़लता से सफ़लता कि और निरन्तर गति करने लगता है एवं उसे जीवन मे समस्त भौतिक सुखो कि प्राप्ति होति है। "श्री यंत्र" मनुष्य जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्या-बाधा एवं नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारत्मक उर्जा का निर्माण करने मे समर्थ है। "श्री यंत्र" की स्थापन से घर या व्यापार के स्थान पर स्थापित करने से वास्तु दोष य वास्तु से सम्बन्धित परेशानि मे न्युनता आति है व सुख-समृद्धि, शांति एवं ऐश्वर्य कि प्रप्ति होती है।

>> Shop Online | Order Now

गुरुत्व कार्यालय मे विभिन्न आकार के "श्री यंत्र" उप्लब्ध है

मूल्य:- प्रति ग्राम Rs. 28.00 से Rs.100.00

GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call Us: 91 + 9338213418, 91 + 9238328785,
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- ❖ श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- ❖ जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दु:ख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- ❖ जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- ❖ श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं।
- ❖ विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रात: काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्ति संपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इसलिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र >> Shop Online | Order Now

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र > Shop Online | Order Now

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इसलिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र-** 8200/-

>> **Shop Online** | **Order Now**

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> Shop Online | Order Now

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित 22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

पुरुषाकार शनि यंत्र

पुरुषाकार शनि यंत्र (स्टील में) को तीव्र प्रभावशाली बनाने हेतु शनि की कारक धातु शुद्ध स्टील(लोहे) में बनाया गया हैं। जिस के प्रभाव से साधक को तत्काल लाभ प्राप्त होता हैं। यदि जन्म कुंडली में शनि प्रतिकूल होने पर व्यक्ति को अनेक कार्यों में असफलता प्राप्त होती है, कभी व्यवसाय में घटा, नौकरी में परेशानी, वाहन दुर्घटना, गृह क्लेश आदि परेशानीयां बढ़ती जाती है ऐसी स्थितियों में प्राणप्रतिष्ठित ग्रह पीड़ा निवारक शनि यंत्र की अपने को व्यपार स्थान या घर में स्थापना करने से अनेक लाभ मिलते हैं। यदि शनि की ढ़ैया या साढ़ेसाती का समय हो तो इसे अवश्य पूजना चाहिए। शनियंत्र के पूजन मात्र से व्यक्ति को मृत्यु, कर्ज, कोर्टकेश, जोडो का दर्द, बात रोग तथा लम्बे समय के सभी प्रकार के रोग से परेशान व्यक्ति के लिये शनि यंत्र अधिक लाभकारी होगा। नौकरी पेशा आदि के लोगों को पदौन्नति भी शनि द्वारा ही मिलती है अतः यह यंत्र अति उपयोगी यंत्र है जिसके द्वारा शीघ्र ही लाभ पाया जा सकता है।

मूल्य: 1370 से 15400 >> **Shop Online | Order Now**

संपूर्ण प्राणप्रतिष्ठित

22 गेज शुद्ध स्टील में निर्मित अखंडित

शनि तैतिसा यंत्र

शनिग्रह से संबंधित पीडा के निवारण हेतु विशेष लाभकारी यंत्र।

मूल्य: 730 से 15400 >> **Shop Online | Order Now**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online | Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 370 से 15400 तक

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

मूल्य Rs- 370 से 15400 तक

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in, >> Shop Online | Order Now

विभिन्न देवताओं के यंत्र

गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	संतान प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	595	1” X 1”	460	1” X 1”	370
2” X 2”	955	2” X 2”	820	2” X 2”	595
3” X 3”	1630	3” X 3”	1360	3” X 3”	1000
4” X 4”	2710	4” X 4”	2350	4” X 4”	1360
6” X 6”	4150	6” X 6”	3700	6” X 6”	2800
9” X 9”	9550	9” X 9”	8200	9” X 9”	4600
12” X12”	15400	12” X12”	12700	12” X12”	10000

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	**Diamond (Special)**	**Green Emerald (Special)**	**Naturel Pearl (Special)**	**Ruby (Old Berma) (Special)**	**Green Emerald (Special)**
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	**Red Coral (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**B.Sapphire (Special)**	**Y.Sapphire (Special)**
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

>> Shop Online | Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अदद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 2800 >>Order Now

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‌भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 1000 से Rs. 15400 तक उप्लब्द्ध >> Shop Online

GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
Shop Online @ : www.gurutvakaryalay.com

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्‌भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2800 से Rs. 15400 तक उप्लब्द्ध**

अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोघ् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इसलिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोघ् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुड़े बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योंकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोटः- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

राज राजेश्वरी कवच Raj Rajeshwari Kawach ………..………………………	12900	अष्ट विनायक कवच Asht Vinayak Kawach ………..………………………...	2800
अमोघ महामृत्युंजय कवच Amogh Mahamrutyunjay Kawach ……………………..	12700	विष्णु बीसा कवच Vishnu Visha Kawach ………..………………………...	2800
दस महाविद्या कवच Dus Mahavidhya Kawach ………..…………………….	7300	रामभद्र बीसा कवच Ramabhadra Visha Kawach ………..…………………….	2800
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach..	7300	कुबेर बीसा कवच Kuber Visha Kawach ………..…………………………	2800
सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach …………………...	7300	गरुड बीसा कवच Garud Visha Kawach ………..…………………………	2800
नवदुर्गा शक्ति कवच Navdurga Shakiti Kawach ………..…………………….	7300	लक्ष्मी बीसा कवच Lakshmi Visha Kawach ………..………………………	2800
रसायन सिद्धि कवच Rasayan Siddhi Kawach ………..……………………..	7300	सिंह बीसा कवच Sinha Visha Kawach ………..…………………………	2800
पंचदेव शक्ति कवच Pancha Dev Shakti Kawach ………..………………….	6400	नर्वाण बीसा कवच Narvan Visha Kawach ………..………………………..	2800
सर्व कार्य सिद्धि कवच Sarv Karya Siddhi Kawach ………..…………………..	6400	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ………..……	2800
सुवर्ण लक्ष्मी कवच Suvarn Lakshmi Kawach ………..…………………….	5500	राम रक्षा कवच Ram Raksha Kawach ………..…………………………	2800
स्वर्णाकर्षण भैरव कवच Swarnakarshan Bhairav Kawach ………..……………	5500	नारायण रक्षा कवच Narayan Raksha Kavach ……………………………...	2800
कालसर्प शांति कवच Kalsharp Shanti Kawach ………..……………………..	4600	हनुमान रक्षा कवच Hanuman Raksha Kawach ………..…………………...	2800
विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ………..……	3700	भैरव रक्षा कवच Bhairav Raksha Kawach ………………………………	2800
इष्ट सिद्धि कवच Isht Siddhi Kawach ………..…………………………….	3250	कैलाश धन रक्षा कवच Kailash Dhan Raksha Kawach…………………………	2800
परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ……….….	2800	शनि साड़ेसाती और ढ़ैया कष्ट निवारण कवच Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach …..	2350
श्रीदुर्गा बीसा कवच Durga Visha Kawach ………..…………………………….	2800	श्रापित योग निवारण कवच Sharapit Yog Nivaran Kawach ………..……………..	2350
कृष्ण बीसा कवच Krushna Bisa Kawach ………..…………………………...	2800	श्रापित दोष निवारण कवच Pitru Dosh Yog Nivaran Kawach………..……………	2350

विष योग निवारण कवच Vish Yog Nivaran Kawach ……..……………………	2350	ऋण / कर्ज मुक्ति कवच Rin / Karaj Mukti Kawach ……..……………………	1450
सर्वजन वशीकरण कवच Sarvjan Vashikaran Kawach ……..……………………	1900	शत्रु विजय कवच Shatru Vijay Kawach ………………………………..	1250
सिद्धि विनायक गणपति कवच Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ……..……………..	1900	विवाह बाधा निवारण कवच Vivah Badha Nivaran Kawach ………………………...	1250
सकल सम्मान प्राप्ति कवच Sakal Samman Praapti Kawach ……..………………	1900	स्वस्तिक बीसा कवच Swastik Visha Kawach ……..…………………………	1250
आकर्षण वृद्धि कवच Aakarshan Vruddhi Kawach ……..……………………	1900	स्वप्न भय निवारण कवच Swapna Bhay Nivaran Kawach ……..……………..	1250
वशीकरण नाशक कवच Vasikaran Nashak Kawach ……..…………………….	1900	सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए) Saraswati Kawach (For Class +10) …………………..	1250
प्रीति नाशक कवच Preeti Nashak Kawach ……..…………………………	1900	सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए) Saraswati Kawach (For up to Class 10) ……………..	1090
चंडाल योग निवारण कवच Chandal Yog Nivaran Kawach ……..…………………	1900	वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए) Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) …………….	1450
ग्रहण योग निवारण कवच Grahan Yog Nivaran Kawach ……..…………………..	1900	सुदर्शन बीसा कवच Sudarshan Visha Kawach ……..……………….……..	1090
मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग) Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) …………	1900	महा सुदर्शन कवच Mahasudarshan Kawach ……..…………...…………	1090
अष्ट लक्ष्मी कवच Asht Lakshmi Kawach ……..………………………..	1450	तंत्र रक्षा कवच Tantra Raksha Kawach ………………………………	1090
आकस्मिक धन प्राप्ति कवच Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..………………..	1450	त्रिशूल बीसा कवच Trishool Visha Kawach ……..………………………..	1090
स्पे.व्यापार वृद्धि कवच Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..………………	1450	व्यापर वृद्धि कवच Vyapar Vruddhi Kawach ……………………………...	1090
धन प्राप्ति कवच Dhan Prapti Kawach ……..…………………………..	1450	सर्व रोग निवारण कवच Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………....	1090
कार्य सिद्धि कवच Karya Siddhi Kawach ……..………………………..	1450	शारीरिक शक्ति वर्धक कवच Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………...	1090
भूमिलाभ कवच Bhumilabh Kawach ……..…………………………….	1450	पत्नी वशीकरण कवच Patni Vasikaran Kawach ……………………………...	1000
नवग्रह शांति कवच Navgrah Shanti Kawach ……..……………………..	1450	पति वशीकरण कवच Pati Vasikaran Kawach ………………………………	1000
संतान प्राप्ति कवच Santan Prapti Kawach ……..………………………..	1450	वशीकरण कवच (1 व्यक्ति के लिए) Vashikaran Kawach (For 1 Person) ……………………	1000
कामदेव कवच Kamdev Kawach ……..……………………………….	1450	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच Mastishk Prushti Vardhak Kawach ……………………	1000
हंस बीसा कवच Hans Visha Kawach ……..…………………………..	1450	वाणी पृष्टि वर्धक कवच Vani Prushti Vardhak Kawach ………………………..	1000
पदौन्नति कवच Padounnati Kawach ……..………………………….	1450	कामना पूर्ति कवच Kamana Poorti Kawach ………………………………	1000

विरोध नाशक कवच Virodh Nashan Kawach ……………………………….	1000	सिद्ध राहु कवच Siddha Rahu Kawach …………………………………..	1000
सिद्ध सूर्य कवच Siddha Surya Kawach ………………………………….	1000	सिद्ध केतु कवच Siddha Ketu Kawach …………………………………..	1000
सिद्ध चंद्र कवच Siddha Chandra Kawach …………………………….	1000	रोजगार वृद्धि कवच Rojgar Vruddhi Kawach ………………………………..	910
सिद्ध मंगल कवच (कुजा) Siddha Mangal Kawach (Kuja) ………………………	1000	रोजगार प्राप्ति कवच Rojagar Prapti Kawach ………………………………….	910
सिद्ध बुध कवच Siddha Bhudh Kawach ……………………………….	1000	विघ्न बाधा निवारण कवच Vighna Badha Nivaran Kawah ………………………..	910
सिद्ध गुरु कवच Siddha Guru Kawach ………………………………...	1000	नज़र रक्षा कवच Najar Raksha Kawah …………………………………….	910
सिद्ध शुक्र कवच Siddha Shukra Kawach …………………………….	1000	दुर्भाग्य नाशक कवच Durbhagya Nashak …………………………………….	820
सिद्ध शनि कवच Siddha Shani Kawach ……………………………….	1000		

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

Gemstone Price List

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Yellow Sapphire Bangkok	(बैंकोक पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	1000.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	190.00	550.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	125.00	190.00	280.00	370.00	460.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	190.00	280.00	370.00	460.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	73.00	100.00	190.00	280.00	460.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye ODISHA	(उडिसा लहसुनिया)	280.00	460.00	730.00	1000.00	1900.00 & above
Gomed	(गोमेद)	19.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	190.00	280.00	460.00	730.00	1000.00 & above
Zarakan	(जरकन)	550.00	730.00	820.00	1050.00	1250.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	100.00	145.00	190.00	280.00	460.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	100.00	190.00	280.00	460.00	640.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Opal	(उपल)	28.00	46.00	90.00	190.00	460.00 & above
Garnet	(गारनेट)	28.00	46.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	10.00	19.00	28.00	55.00	100.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	28.00	45.00	100.00	190.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	19.00	28.00	55.00	190.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	19.00	46.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 09338213418, 09238328785
Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

	YANTRA LIST	EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 370 to 15400 and Above…..

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष मासिक ई-पत्रिका

मार्च-2021

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA JYOTISH

Monthly

MAR-2021